■ तेजस्वी प्रणः हर परिवार में सरकारी नौकरी, वक्फ कानून पर रोक का वादा
- 7

■ एमसीएक्स में तकनीकी खराबी से 4 घंटे देर से खुला बाजार जांच शुरू
- 10

■ पूर्वी एशिया में शांति, स्थिरता ओर आर्थिक समृद्धि को देंगे बढ़ावा
- 11

■ पांच टी-20 मैचों की श्रृंखला : नई ऊर्जा और रणनीति के साथ खेलेगा भारत
- 12

आज का मौसम
29.0° अधिकतम तापमान
19.0° न्यूनतम तापमान
सूर्योदय 06.22
सूर्यास्त 05.30

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

लखनऊ

www.amritvichar.com
2 राज्य | 6 संस्करण
लखनऊ बरेली कानपुर
मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

कार्तिक शुक्ल पक्ष सप्तमी 9:23 उपरांत अष्टमी विक्रम संवत 2082
बुधवार, 29 अक्टूबर 2025, वर्ष 35, अंक 269, पृष्ठ 12+4 ■ मूल्य 6 रुपये

आंध्र में तट से टकराया चक्रवात मोंथा, तूफान में तब्दील

- मछलीपट्टनम और काकीनाडा से देर रात टकराया, एनडीआरएफ की 45 टीमें तैनात
- चक्रवात से लाखों लोग प्रभावित, 120 ट्रेन और 52 फ्लाइट कैंसिल

नई दिल्ली/अमरावती, एजेंसी

प्रचंड चक्रवाती तूफान मोंथा मंगलवार देर रात आंध्र प्रदेश के तट से टकरा गया है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने मंगलवार देर शाम सोशल मीडिया मंच 'एक्स' के अपने आधिकारिक हैंडल पर किए एक पोस्ट में कहा कि तूफान की नवीनतम स्थिति के मुताबिक इसके तट से टकराने की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

चक्रवाती तूफान के प्रभाव से समुद्र में लहरों की भारी उथल-पुथल जारी है।

आंध्र प्रदेश : चक्रवात मोंथा के कारण कृष्णा जिले के मंगिनापुडी तट पर समुद्र में मची उथल-पुथल।

आईएमडी के मुताबिक कुछ घंटों में यह मौसम प्रणाली एक गंभीर चक्रवाती तूफान के रूप में मछलीपट्टनम और कलिंगपट्टनम के बीच काकीनाडा के आसपास आंध्र प्रदेश के तट को पार करेगी, जिसमें अधिकतम 90 से 100 किमी प्रति घंटे की गति से हवा चलेगी और यह गति 110 किमी प्रति घंटे तक हो सकती है। वहीं राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) ने चक्रवात 'मोंथा' के मद्देनजर राहत और बचाव कार्यों के लिए बचाव कर्मियों की 45 टीम तैनात की हैं। यह चक्रवात मुख्य रूप से तटीय आंध्र प्रदेश और ओडिशा को प्रभावित करेगा तथा इसके कारण झारखंड और तमिलनाडु में भारी बारिश का पूर्वानुमान है।

एनडीआरएफ ने मंगलवार सुबह बताया कि इनमें से 25 दलों को विभिन्न राज्यों में पहले से तैनात किया गया है, जबकि शेष को 'बैकअप' के रूप में रखा गया है। आंध्र प्रदेश में 10 टीम, ओडिशा में छह, तमिलनाडु और तेलंगाना में तीन-तीन, छत्तीसगढ़ में दो और पुडुचेरी में एक टीम तैनात की गई है। थाई भाषा में मोंथा का अर्थ सुगंधित फूल होता है। चक्रवात के कारण 4 राज्यों से लाखों लोग प्रभावित हुए, साथ ही 120 ट्रेन और 52 फ्लाइट कैंसिल की गईं।

ओडिशा में भारी बारिश से भूस्खलन, जनजीवन प्रभावित, 2,000 से अधिक आपदा केंद्र खोले

भुवनेश्वर। ओडिशा के तटीय और दक्षिणी जिलों में भीषण चक्रवाती तूफान 'मोंथा' की वजह से मंगलवार को भारी बारिश होने से भूस्खलन हुआ, घरों को नुकसान पहुंचा और कई जगह पेड़ भी उखड़ गए। दक्षिणी ओडिशा के आठ जिलों मलकानगिरी, कोरापुट, रायगढ़ा, गजपति, गंजम, कंधमाल, कालाहांडी और नवरंगपुर से नुकसान की प्रारंभिक खबरें प्राप्त हुई है। हालांकि, क्षेत्र के कुल 15 जिलों में जनजीवन प्रभावित हुआ है।

गजपति जिले के अनाका ग्राम पंचायत से प्राप्त जानकारी के अनुसार, पास की पहाड़ियों से बड़े-बड़े पत्थर गिरे, जिससे पांच गांवों की सड़कें अवरुद्ध हो गईं। विशेष राहत आयुक्त कार्यालय के एक अधिकारी ने बताया, चक्रवात के राज्य से गुजरने के बाद विभिन्न जिलों से हुए नुकसान की रिपोर्ट संकलित की जाएगी। ओडिशा के दक्षिणी जिलों में 2,000 से अधिक आपदा राहत केंद्र खोले गए हैं। मुख्यमंत्री

ओडिशा में भूस्खलन से गजपति जिले के मार्ग पर फैला मलबा।

ने कहा कि एनडीआरएफ, ओडीआरएए) और अग्निशमन सेवा के कर्मियों वाली 153 बचाव टीमें (6,000 से ज्यादा कर्मी) संवेदनशील स्थानों पर तैनात हैं।

ब्रीफ न्यूज

प्रशांत किशोर का नाम दो राज्यों की मतदाता सूची में दर्ज, विवाद

पटना/कोलकाता। जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर मंगलवार को उस समय विवादों में घिर गए जब यह सामने आया कि वह कथित तौर पर अपने गृह राज्य बिहार के साथ ही पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल में भी मतदाता के रूप में पंजीकृत हैं। पश्चिम बंगाल में एक निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि आधिकारिक रिकॉर्ड के अनुसार पश्चिम बंगाल में मतदाता के रूप में पंजीकृत किशोर का पता 121, कालीघाट रोड के रूप में दर्ज है, जो कोलकाता के भवानीपुर विधानसभा क्षेत्र में तृणमूल कांग्रेस मुख्यालय का पता है। भवानीपुर विधानसभा क्षेत्र बंगाल की मुख्यमंत्री और तृणमूल प्रमुख ममता बनर्जी का निर्वाचन क्षेत्र है।

राष्ट्रपति राफेल लड़ाकू विमान से भरेंगी उड़ान

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु बुधवार को हरियाणा में अंबाला वायु सेना अड्डे से राफेल लड़ाकू विमान में उड़ान भरेंगी। पहलगाम में 22 अप्रैल को आतंकवादी हमले के जवाब में भारत द्वारा शुरू किए गए ऑपरेशन सिंदूर के दौरान राफेल लड़ाकू विमानों का इस्तेमाल किया गया था। पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम और प्रतिभा पाटिल ने क्रमशः आठ जून 2006 और 25 नवंबर 2009 को पुणे के पास लोहेगांव स्थित वायुसेना अड्डे से सुखोई-30 एमकेआई लड़ाकू विमान से उड़ान भरी थी।

8वें वेतन आयोग के गठन सम्बंधी प्रावधानों को केंद्र ने दी मंजूरी

50 लाख कर्मी और 69 लाख पेंशनरों को होगा फायदा, सेवानिवृत्त जज रंजना प्रकाश को आयोग की कमान

नई दिल्ली, एजेंसी

केंद्र सरकार ने मंगलवार को आठवें केंद्रीय वेतन आयोग के गठन से संबंधित नियमों एवं शर्तों को मंजूरी दे दी। आयोग 18 महीने में अंतिम रिपोर्ट देगा लेकिन एक जनवरी, 2026 से ही उसकी सिफारिशें प्रभावी होने की संभावना है। इन सिफारिशों से केंद्र सरकार के करीब 50 लाख कर्मचारी और 69 लाख पेंशनभोगी लाभान्वित होंगे। इसके साथ ही इसकी अनुशंसाओं का प्रभाव राज्य सरकारों के कर्मचारियों के वेतन ढांचे पर भी पड़ेगा। उच्चतम न्यायालय की सेवानिवृत्त न्यायाधीश रंजना प्रकाश देसाई को आयोग की कमान सौंपी गई है।

आयोग अपनी अंतिम रिपोर्ट 18 महीनों में देगा, जबकि समय-समय पर अंतरिम रिपोर्टें भी देता रहेगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में हुई केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में आठवें वेतन आयोग के गठन से संबंधित नियमों एवं शर्तों को मंजूरी दी गई। सूचना प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने संवाददाताओं को इस फैसले की जानकारी दी। मंत्रिमंडल का यह निर्णय आयोग को स्थापित करने की जनवरी, 2025 में दी गई सैद्धांतिक मंजूरी के नौ माह बाद आया है। यह फैसला बिहार विधानसभा के लिए छह

- 18 महीने में आएगी रिपोर्ट, केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में लिए गए कई अहम फैसले

एवं 11 नवंबर को होने वाले मतदान के ऐन वक्त पहले लिया गया है। वैष्णव ने आयोग की सिफारिशें लागू होने की तारीख के बारे में पूछे जाने पर कहा, इसकी विशिष्ट तिथि अंतरिम रिपोर्ट आने के बाद ही तय की जाएगी, लेकिन ज्यादा संभावना है कि यह एक जनवरी, 2026 से प्रभावी हो जाएगी।

आमतौर पर हर 10 वर्ष के अंतराल पर केंद्रीय कर्मचारियों के लिए वेतन आयोग की सिफारिशें लागू की जाती हैं। इस परिपाटी को देखते हुए आठवें वेतन आयोग की सिफारिशों के भी जनवरी, 2026 से लागू किए जाने की संभावना है। मंत्रिमंडल ने न्यायमूर्ति देसाई को आयोग का प्रमुख बनाने के साथ भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम), बेंगलुरु के प्रोफेसर पुलक घोष को अंशकालिक सदस्य और पेट्रोलियम सचिव पंकज जैन को सदस्य-सचिव बनाने का भी फैसला किया। न्यायमूर्ति देसाई इस समय भारतीय प्रेस परिषद की चेयरमैन हैं। इससे पहले वह जम्मू-कश्मीर परिसीमन आयोग और उत्तराखंड समान नागरिक संहिता की मसौदा समिति की अध्यक्ष भी रह चुकी हैं।

उच्चतम न्यायालय से सेवानिवृत्ति के बाद यह उनका चौथा प्रमुख कार्यभार होगा। आधिकारिक बयान के मुताबिक, आयोग अपनी सिफारिशों को अंतिम रूप देते समय केंद्रीय सार्वजनिक उपक्रमों और निजी क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए प्रचलित वेतन संरचना, लाभ एवं कार्य परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन करेगा।

राज्यों और कर्मचारी संगठनों से परामर्श के बाद अंतिम रूप

आठवें वेतन आयोग के नियमों एवं शर्तों को विभिन्न मंत्रालयों, राज्यों और कर्मचारी संगठनों से परामर्श के बाद अंतिम रूप दिया गया है। आम तौर पर वेतन आयोगों की सिफारिशें हर 10 वर्ष में लागू होती हैं। पिछला यानी सातवां वेतन आयोग फरवरी, 2014 में गठित हुआ था और उसकी सिफारिशें एक जनवरी, 2016 से लागू की गई थीं। सरकार ने कहा कि आठवां वेतन आयोग देश में वित्तीय अनुशासन और कर्मचारी कल्याण के बीच संतुलन साधने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

गैर-यूरिया उर्वरकों पर 37,952 करोड़ की सब्सिडी

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने मंगलवार को चालू 2025-26 रबी सत्र के लिए गैर-यूरिया उर्वरकों फॉस्फोरस और सल्फर पर 37,952 करोड़ रुपये की सब्सिडी को मंजूरी दी। हालांकि, नाइट्रोजन और पोटाश के लिए सब्सिडी दर में बदलाव नहीं किया गया है। ये दरें एक अक्टूबर, 2025 से 31 मार्च, 2026 तक प्रभावी रहेंगी। प्रधानमंत्री मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल ने चालू रबी सत्र के लिए फॉस्फेट सब्सिडी को 43.60 रुपये प्रति किग्रा से बढ़ाकर 47.96 रुपये प्रति किग्रा कर दिया है।

जयपुर में हाईटेंशन लाइन के संपर्क में आई बस, पूरनपुर के पिता-पुत्री जिंदा जले

हादसे के बाद बस में आग लगने से उठता धुआं।

- जयपुर के मनोहरपुर में मंगलवार सुबह हुआ भीषण हादसा कई घायल
- हादसे की खबर से पूरनपुर के शेरपुर कलां में मचा कोहराम

संवाददाता, पीलीभीत/जयपुर

अमृत विचार : जयपुर से 50 किलोमीटर दूर मनोहरपुर इलाके में मंगलवार सुबह हादसे ने परिवारों की खुशियां छीन लीं। पूरनपुर कोतवाली क्षेत्र के गांव शेरपुर कलां के मोहल्ला नौगवां निवासी मजदूरों को लेकर जा रही डबल डेकर बस हाईटेंशन लाइन से छू गई थी।

करंट लगने के साथ ही बस में रखे गैस सिलेंडर फट गए और बस आग का गोला बन गई। इस हादसे में पूरनपुर क्षेत्र के गांव शेरपुर कला निवासी के नसीम मियां (45) और उनकी पुत्री सेनम (18) की मौके पर ही जलकर मौत हो गई, जबकि कई मजदूर झुलस गए। सूचना मिलते ही गांव में कोहराम मच गया। मृतकों के परिवार वाले जयपुर के लिए रवाना हो गए। बताते हैं कि हादसे में मजदूर सोमवार शाम पूरनपुर कस्बे के स्टेशन चौराहे से बरेली के बहेड़ी निवासी बस मालिक आरिफ की बस में सवार हुए थे। वह जयपुर के मनोहरपुर क्षेत्र के एक ईंट भट्ठे पर मजदूरी करने जा रहे थे। बस को एक ठेकेदार ने बुक कराया था।

मंगलवार सुबह जब बस ईंट भट्ठे से महज आधा किलोमीटर दूर थी, तभी वह हाईटेंशन लाइन से टकरा गई। इसके बाद सिलेंडर फटने लगे और पूरी बस आग की लपटों में घिर गई। कंडक्टर ने बस मालिक आरिफ को हादसे की जानकारी दी। बताया कि ठेकेदार के साथ भेजे गए युवक ने बस को खुद चलाने की जिद की थी और इसी दौरान यह हादसा हो गया।

डॉक्टरों का ध्यान रखना हमारी जिम्मेदारी, नहीं तो समाज माफ नहीं करेगा

नई दिल्ली, एजेंसी

- सुप्रीम कोर्ट ने की टिप्पणी, कहा- कोविड में मृत प्राइवेट डॉक्टरों को सरकारी बीमा का लाभ मिले

सुप्रीम कोर्ट ने निजी क्लीनिक, औषधालयों और गैर-मान्यता प्राप्त अस्पतालों में कोविड-19 से लड़ते हुए जान गंवाने वाले चिकित्सकों और स्वास्थ्य कर्मियों को बीमा पॉलिसी में शामिल नहीं किए जाने के खिलाफ दायर याचिका पर अपना फैसला सुरक्षित रखते हुए मंगलवार को कहा कि यदि न्यायपालिका चिकित्सकों का ध्यान नहीं रखेगी और उनके लिए खड़ी नहीं होगी तो समाज उसे माफ नहीं करेगा।

न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति आर महादेवन की पीठ ने कहा कि सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बीमा कंपनियां वैध दावों का निपटारा करें और यह धारणा सही नहीं है कि निजी चिकित्सक मुनाफा कमाने के लिए काम कर रहे हैं। पीठ ने कहा, अगर हम अपने चिकित्सकों का ध्यान नहीं रखेंगे तो समाज हमें माफ नहीं करेगा। कहा, अगर आपके अनुसार यह शर्त पूरी होती है कि वे कोविड-19 से निपटने के लिए काम कर रहे थे और कोविड के कारण उनकी मौत हुई है तो आपको बीमा कंपनी को भुगतान करने के लिए बाध्य करना चाहिए। सिर्फ इसलिए कि वे सरकारी ड्यूटी पर नहीं थे, यह धारणा सही नहीं है कि वे मुनाफा कमा रहे थे। केंद्र को पीएम बीमा योजना के अलावा उपलब्ध अन्य समान या समानांतर योजनाओं के आंकड़े और जानकारी उपलब्ध कराने का निर्देश दिया।

पीठ ने योजनाओं के मांगे आंकड़े

पीठ ने कहा, हमें आंकड़े और प्रधानमंत्री योजना के अलावा उपलब्ध अन्य समानांतर योजनाओं के बारे में कुछ जानकारी दीजिए। हम सिद्धांत निर्धारित करेंगे और उसके आधार पर बीमा कंपनी से दावे किए जा सकेंगे। बीमा कंपनी को हमारे फैसले के आधार पर विचार करना और आदेश पारित करना है। शीर्ष अदालत मुंबई उच्च न्यायालय के नौ मार्च 2021 के आदेश के खिलाफ दायर प्रदीप अरोड़ा और अन्य की याचिका पर सुनवाई कर रही थी।

46 आईएएस अधिकारियों का तबादला

- यूपी में बड़ा प्रशासनिक फेरबदल कई मंडलायुक्त, जिलाधिकारी बदले

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: प्रदेश सरकार ने मंगलवार को प्रशासनिक महकमे में बड़ा फेरबदल किया है। कार्मिक विभाग द्वारा जारी शासनादेश में कुल 46 आईएएस अधिकारियों का स्थानांतरण किया गया है। इनमें कई मंडलायुक्त, जिलाधिकारी और सचिव स्तर के अधिकारी शामिल हैं।

शासन के अनुसार मंडलायुक्त विन्ध्याचल बाल कृष्ण त्रिपाठी को सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग बनाया गया है। राजेश प्रकाश को महानिदेशक मत्स्य से मंडलायुक्त विन्ध्याचल और धनलक्ष्मी के. को सचिव मानवाधिकार आयोग से महानिदेशक मत्स्य बनाया गया है। डॉ. रूपेश को ऊर्जा विभाग के प्रबंध निदेशक से मंडलायुक्त सहारनपुर और अटल कुमार राय को सहारनपुर मंडलायुक्त से सचिव गृह विभाग बनाया गया है।

मोबाइल पर कॉलर का असली नाम दर्शाने की सुविधा को हरी झंडी

नई दिल्ली। मोबाइल फोन पर आने वाली कॉल में अब कॉल करने वाले व्यक्ति का असली नाम प्रदर्शित किए जाने को लेकर दूरसंचार नियामक ट्राई ने दूरसंचार विभाग के प्रस्ताव से सहमति जता दी है। कॉल रिसीव करने वाले व्यक्ति के मोबाइल पर यह सुविधा डिफॉल्ट रूप से सक्रिय होगी। ट्राई ने फरवरी, 2024 में 'कॉलर का नाम प्रदर्शित करने वाली' (सीएनएपी) सेवा पर अपनी सिफारिशों में कहा था कि यह सेवा केवल मांग रखने वाले उपभोक्ताओं को ही मुहैया कराई जाए। लेकिन विभाग का कहना था कि यह सुविधा सभी उपयोगकर्ताओं के लिए स्वतः उपलब्ध होगी, जबकि अनिच्छुक उपभोक्ता इसे निष्क्रिय कराने का विकल्प रखेंगे।

दिल्ली में कृत्रिम वर्षा का परीक्षण, नहीं हुई बारिश

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली में प्रदूषण के बढ़ते स्तर के बीच 53 वर्षों के अंतराल के बाद मंगलवार को कृत्रिम वर्षा कराने का परीक्षण किया गया। हालांकि, मौसम विभाग ने दिल्ली में वर्षा के कोई संकेत दर्ज नहीं किए।

दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने बताया कि दिल्ली सरकार ने आईआईटी-कानपुर के सहयोग से बुराड़ी, उत्तरी करोल बाग, मयूर विहार और बादली सहित दिल्ली के कुछ हिस्सों में परीक्षण किए तथा अगले कुछ दिनों में इस तरह के और परीक्षण किए जाने की योजना है। बाद में शाम को सरकार ने एक रिपोर्ट में कहा कि कृत्रिम वर्षा के परीक्षणों से उन स्थानों पर अति सूक्ष्म कणों में कमी

100 किमी के क्षेत्र में कराई जा सकती है बारिश

आईआईटी कानपुर के निदेशक प्रो. मणीन्द्र अग्रवाल के मुताबिक दिल्ली ट्रायल का परीक्षण हो चुका है। अब केवल बादलों का इंतजार है, जैसे ही अनुकूल मौसम बनेगा, दिल्ली की हवा को राहत देने के लिए कृत्रिम बारिश करा दी जाएगी। कृत्रिम बारिश के लिए सिल्वर आयोडाइड और नमक जैसे रसायनों को मिलाकर विशेष मिश्रण तैयार किया जाता है।

- आईआईटी-कानपुर के सहयोग से किया गया ट्रायल

लाने में मदद मिली। राजधानी में इस प्रक्रिया को अंजाम दिया गया, जबकि परिस्थितियां इसके लिए आदर्श नहीं थीं। सरकार ने कहा कि भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) और अन्य एजेंसियों द्वारा अनुमानित नमी की मात्रा 10 से 15 प्रतिशत के निम्न स्तर पर बनी रही, जो कृत्रिम बारिश के लिए आदर्श स्थिति नहीं है।

समीक्षा

मुख्यमंत्री ने रामनगरी को विश्व की आध्यात्मिक राजधानी के रूप में विकसित करने का दिया निर्देश

अयोध्या बनेगी आस्था, भव्यता और आधुनिकता का आदर्श मॉडल

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को अयोध्या महायोजना-2031 की समीक्षा बैठक में कहा कि अयोध्या का विकास भव्यता, आस्था और आधुनिकता का संतुलित मॉडल होना चाहिए।

महायोजना का उद्देश्य अयोध्या को विश्व की आध्यात्मिक राजधानी और सस्टेनेबल सिटी के रूप में विकसित करना है, जहां सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक शहरी संरचना का समुचित संतुलन हो। योगी ने अनियोजित बसावट पर सख्त निर्देश भी दिए।

- मुख्यमंत्री योगी ने की अयोध्या महायोजना-2031 की समीक्षा अनियोजित बसावट पर सख्त निर्देश

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी परियोजनाएं पर्यावरणीय दृष्टि से सस्टेनेबल हों तथा सरयू नदी तट और हरित पट्टियों का संरक्षण सर्वोच्च प्राथमिकता पर रखा जाए। उन्होंने कहा कि अयोध्या का विकास धार्मिक पर्यटन के साथ-साथ आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से प्रेरक उदाहरण बने।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हाल के वर्षों में अयोध्या में तेज विकास के बीच अनियोजित प्लाटिंग और बसावट देखने को मिली है। उन्होंने चेतावनी दी कि अब हर विकास कार्य योजना और नियमों के अनुरूप ही होना चाहिए। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि अयोध्या आज केवल एक शहर नहीं, बल्कि भारत की आत्मा का प्रतीक है। इसे ऐसा विकसित किया जाए कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए आस्था, सौंदर्य और समृद्धि का संगम बने।

अयोध्या महायोजना 2031 के महत्वपूर्ण बिंदु

- 18 जोनों में विभाजित अयोध्या विकास क्षेत्र
- 23.94 लाख जनसंख्या के हिसाब से संतुलित भूमि उपयोग
- 14.31% हरित क्षेत्र, 52.56% आवासीय क्षेत्र
- सौर ऊर्जा आधारित नगरी और आधुनिक नागरिक सुविधाएं

8,594 करोड़ रुपये की 159 परियोजनाएं क्रियान्वयन को तैयार

बैठक में बताया गया कि अयोध्या में 8,594 करोड़ रुपये के निवेश से 159 परियोजनाएं क्रियान्वित होने जा रही हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि इन परियोजनाओं से स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को नई गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि अयोध्या में स्मार्ट टाउनशिप, रिंग रोड, ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे, बहुस्तरीय पार्किंग, होटल, सौर ऊर्जा संयंत्र और आधुनिक नागरिक सुविधाएं विकसित की जाएंगी।

अमृत विचार

लखनऊ, बुधवार, 29 अक्टूबर 2025

चक्रवात मोंथा को लेकर अलर्ट जारी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : चक्रवाती तूफान 'मोंथा' का असर यूपी के खासकर पूर्वांचल और लेकर बुंदेलखंड के जिलों में बुधवार से और तेज हो सकता है। मौसम विभाग के अनुसार, मंगलवार से अगले 48 घंटे तक लखनऊ समेत कई जिलों में हल्की से मध्यम बारिश और तेज हवाओं की संभावना जताई है। राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने सभी जिलाधिकारियों को बिजली और पेड़ों के गिरने जैसी संभावनाओं के मद्देनजर राहत दलों को तैयार रखने के निर्देश दिए हैं।

भारतीय मौसम विभाग लखनऊ

- **लखनऊ सहित कई जिलों में देर रात से सुबह तक हुई हल्की बारिश, तापमान गिरा**

केंद्र के अनुसार, वाराणसी, मिर्जापुर, सोनभद्र, चंदौली, गाजीपुर, भदोही, जौनपुर और प्रयागराज में अगले दो दिन तक गरज-चमक के साथ बारिश हो सकती है। कुछ इलाकों में हवा की रफ्तार 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटा तक पहुंच सकती है। राजधानी लखनऊ, कानपुर, बाराबंकी और रायबरेली में भी बुधवार देर रात तक हल्की बारिश या बूंदाबांदी की संभावना जताई गई है। मौसम विभाग ने लोगों को खुले में काम न करने, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को अनप्लग करने और निचले इलाकों से दूर रहने की सलाह दी है। मोंथा के कारण राज्य में हवा की दिशा बदलने से अधिकतम तापमान में 2 से 3 डिग्री की कमी आई हैं। रातें ठंडी होंगी और दिन के समय उमस बढ़ सकती है।

किसानों के लिए सलाह

- धान की कटाई और गहाई का काम फिलहाल रोकें।
- खुले में रखा अनाज, भूसा और उपकरण सुरक्षित करें।
- बिजली गिरने की संभावना को देखते हुए खेतों में मोबाइल का उपयोग न करें।

मतदाता सूची पुनरीक्षण की रफ्तार पर टिकी निगाहें

प्रदेश में पंचायत चुनाव समय पर कराना चुनौती, चुनाव अगले वर्ष अप्रैल-मई में प्रस्तावित

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : प्रदेश में पंचायत चुनाव समय पर कराना राज्य चुनाव आयोग के लिए बड़ी परीक्षा बनता जा रहा है। मतदाता सूची के विशेष सघन पुनरीक्षण अभियान की रफ्तार पर निगाहें टिकी हैं। राज्य में अप्रैल–मई 2026 में पंचायत चुनाव प्रस्तावित हैं। जबकि मतदाता सूची का संशोधन और डिजिटलीकरण का कार्य अभी पूरी तरह पूरा नहीं हुआ है। उधर, परिसीमन को लेकर पंचायती राज विभाग तेजी से कार्य कर रहा है, ताकि कार्यकाल समाप्त होने के छह माह के भीतर

चुनाव हो जाए, जिससे भारत सरकार की ग्रांट बंद होने की नौबत न आए।

जानकारी के अनुसार, निर्वाचन आयोग द्वारा इस बार लोकसभा, विधानसभा और पंचायत चुनावों की मतदाता सूचियां अलग-अलग रखी गई हैं। लेकिन सूचियों को अपडेट कराने की जिम्मेदारी निचले स्तर के वही कर्मचारी निभा रहे हैं, जो अन्य चुनावी कार्यों में भी तैनात रहते हैं। इससे कार्यभार बढ़ने के कारण पंचायत चुनाव की तैयारी में देरी की आशंका जताई जा रही है। राज्य में मतदाता सूचियों को अद्यतन करने के लिए विशेष सर्वे का काम पूरा कर लिया गया है। अब सभी उप जिलाधिकारी को निर्देश दिए गए हैं कि वे संशोधित सूची को ऑनलाइन फीड कराने का कार्य प्राथमिकता से पूरा करें। अधिकारियों के अनुसार, सूची अपडेट का कार्य दिसंबर के पहले सप्ताह तक पूरा कर लिया जाएगा, ताकि ड्राफ्ट सूची समय पर जारी की जा सके।

वोटर लिस्ट संशोधन का दूसरा चरण शुरू

चुनाव आयोग ने मंगलवार से वोटर लिस्ट रिवीजन के दूसरे चरण की शुरुआत कर दी है। इस बार यूपी समेत 12 राज्यों में मतदाता सूची की फील्ड जांच की जा रही है। इन राज्यों में पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, ओडिशा, बिहार, झारखंड, हरियाणा, पंजाब, छत्तीसगढ़ और गुजरात भी शामिल हैं। आयोग के कार्यक्रम के अनुसार, 9 दिसंबर को ड्राफ्ट वोटर लिस्ट जारी होगी और 7 फरवरी 2026 को फाइनल सूची प्रकाशित की जाएगी।

परिसीमन के बाद वार्ड और पंचायतें

परिसीम के बाद जिला पंचायत सदस्य वार्ड जहां पहले 3050 थे, अब 30 घटकर 3020 हो गए हैं। इसी तरह कुल 75,844 क्षेत्र पंचायत सदस्य वार्ड में से 830 घट गए हैं, अब इनकी संख्या 75,014 हो गई है। जबकि वर्ष 2021 के अनुसार 7,32,643 ग्राम पंचायत सदस्य वार्ड में से 4600 से अधिक इसबार कम होंगे।

न्यूज ब्रीफ

विवादित बयान पर कार्रवाई की मांग

अमृत विचार, लखनऊ : सिद्धार्थनगर के डुमरियागंज से पूर्व भाजपा विधायक

राघवेंद्र प्रताप सिंह के विवादित बयान 'मुस्लिम लड़की लाओ, शादी करो, नौकरी पाओ' पर बसपा सुप्रीमो मायावती ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने इस मामले में सख्त कार्रवाई करने की मांग की है। बसपा सुप्रीमो ने मंगलवार को जारी अपने बयान में कहा कि ऐसे आपराधिक, अराजक व असामाजिक तत्व सभ्य व संवैधानिक सरकार के लिए खुली चुनौती और खतरा हैं।

आईएएस आमोद कुमार मूल कैडर यूपी लौटेंगे

अमृत विचार, लखनऊ : वरिष्ठ आईएएस अधिकारी अमोद कुमार (1995 बैच) को केंद्र सरकार से प्रतिनियुक्ति अवधि पूर्ण होने पर मूल कैडर उत्तर प्रदेश में वापस भेजा गया है। इस संबंध में केंद्र सरकार ने औपचारिक आदेश जारी कर दिए हैं। आमोद कुमार वर्तमान में केंद्र सरकार में संयुक्त सचिव स्तर पर पदस्थ थे। अब उनकी तैनाती प्रदेश सरकार द्वारा जल्द निर्धारित की जाएगी।

गंगा महोत्सव में नामचीन कलाकार देंगे प्रस्तुति

अमृत विचार, लखनऊ : गंगा महोत्सव–2025 का आयोजन 1 से 4 नवंबर तक काशी में किया जाएगा, जिसमें देशभर के नामचीन कलाकार अपनी प्रस्तुति देंगे। देव दीपावली से पहले काशी गंगा महोत्सव में हंसराज रघुवंशी भक्ति गीतों का जलवा बिखेरेंगे। वहीं पद्मश्री मालिनी अवस्थी उत्तर भारत की लोक परंपराओं को अपने गायन से जीवंत करेंगी और पद्मश्री गीता चन्द्रन भरतनाट्यम नृत्य से भारतीय नृत्य परंपरा की गरिमा दिखाएंगी। राजघाट और नामो घाट पर आयोजित यह महोत्सव संगीत, नृत्य और लोक कलाओं का अद्भुत संगम बनेगा।

बांस शिल्प विकास बोर्ड गठित करने की मांग

अमृत विचार, लखनऊ : उत्तर प्रदेश दैवीय आपदा प्रबंधन जांच समिति के सभापति एवं सदस्य विधान परिषद डॉ. लालजी प्रसाद निर्मल ने मंगलवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की और उनसे आग्रह किया कि मध्य प्रदेश की तरह ही यूपी में भी बांस शिल्प विकास बोर्ड की स्थापना की जाए। उन्होंने मुख्यमंत्री को अवगत कराया कि बांस से निर्मित बस्तुओं के प्रयोग का चलन बढ़ाने के लिए मध्य प्रदेश के अलावा महाराष्ट्र, गुजरात, नागालैंड, उड़ीसा व मिजोरम सहित कई राज्यों में बांस आधारित कलस्टर/ बोर्ड स्थापित किये गये हैं।

आबकारी से रेशम भेजे गए देवेंद्र

विजय किरण को सीईओ यूपीएसआईडीए, लीडा एवं एनआरआई सेल का अतिरिक्त प्रभार

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : प्रदेश सरकार ने मंगलवार को प्रशासनिक महकमे में बड़ा फेरबदल किया है। मयूर माहेश्वरी को सीईओ यूपीएसआईडीए से प्रबंध निदेशक राज्य विद्युत उत्पादन निगम तथा पावर ट्रांसमिशन कॉरपोरेशन लिमिटेड भेजा गया है। विजय किरण आनंद को सचिव अवस्थापना व औद्योगिक विकास के साथ सीईओ यूपीएसआईडीए, लीडा एवं एनआरआई सेल का अतिरिक्त प्रभार मिला है।

राहुल पांडेय को डीएम हाथरस से विशेष सचिव राज्य कर विभाग, अतुल वत्स को उपाध्यक्ष गाजियाबाद विकास प्राधिकरण से डीएम हाथरस बनाया गया है। अमनदीप डुली को डीएम ललितपुर से अपर आयुक्त मनरेगा, मधुसूदन हुल्गी को डीएम कौशांबी से विशेष सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय, अमित पाल को उपाध्यक्ष प्रयागराज विकास प्राधिकरण से डीएम कौशांबी, पवन अग्रवाल को डीएम बलरामपुर से विशेष सचिव गृह विभाग और विपिन कुमार जैन को विशेष सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय से डीएम बलरामपुर किया गया है।

राजागणपति आर. को डीएम सिद्धार्थनगर से डीएम सीतापुर, जबकि अभिषेक आनंद को डीएम सीतापुर से विशेष सचिव आबकारी विभाग किया गया है। कृतिका ज्योत्सना को विशेष सचिव राज्य कर से डीएम बस्ती और रवीश गुप्ता को डीएम बस्ती से प्रबंध निदेशक पश्चिमांचल विद्युत वितरण निगम मेरठ बनाया गया है। ईशा दुहन को पश्चिमांचल विद्युत से प्रबंध निदेशक यूपी सहकारी चीनी मिल्स संघ लिमिटेड एवं कुमार विनीत को वहां से विशेष सचिव युवा कल्याण व खेल विभाग किया गया है। शिवशरणप्पा जी.एन. को डीएम चित्रकूट से डीएम सिद्धार्थनगर, पुलकित गर्ग को उपाध्यक्ष वाराणसी विकास प्राधिकरण से डीएम चित्रकूट, अजय कुमार द्विवेदी को डीएम श्रावस्ती से डीएम रामपुर और जोगिंदर सिंह को डीएम रामपुर से विशेष सचिव नमामि गंगे व ग्रामीण जलापूर्ति विभाग बनाया गया है। अश्विनी कुमार पांडेय को उपाध्यक्ष अयोध्या विकास प्राधिकरण से डीएम श्रावस्ती एवं सत्य प्रकाश को नगर आयुक्त झांसी से डीएम ललितपुर किया गया है। हिमांशु नागपाल को सीडीओ वाराणसी से नगर आयुक्त वाराणसी, अक्षत वर्मा को नगर आयुक्त वाराणसी से विशेष सचिव नियोजन, ऋषि राज को नगर आयुक्त फिरोजाबाद से उपाध्यक्ष प्रयागराज विकास प्राधिकरण, गुंजन द्विवेदी को सीडीओ कुशीनगर से नगर आयुक्त फिरोजाबाद, सुवंदिता श्रीवास्तव को एडीएम (वि/रा) वाराणसी से सीडीओ कुशीनगर बनाया गया है। नंद किशोर कलाल को सीडीओ रामपुर से उपाध्यक्ष गाजियाबाद विकास प्राधिकरण, महेन्द्र कुमार सिंह को एडीएम (वि/रा) अयोध्या से सीडीओ रामपुर, पूर्ण वोहरा को सीडीओ बिजनौर से उपाध्यक्ष वाराणसी विकास प्राधिकरण, रणविजय सिंह को एडीएम (प्रशासन) गाजियाबाद से सीडीओ बिजनौर तथा अनुराज जैन को सीडीओ महाराजगंज से उपाध्यक्ष अयोध्या विकास प्राधिकरण किया गया है। गुलाब चंद्र को एडीएम (प्रशासन) मुरादाबाद से सीडीओ महाराजगंज, सूरज पटेल को सीडीओ अमेठी से मुख्य कार्यपालक अधिकारी, ब्रज तीर्थ विकास परिषद और सचिन कुमार सिंह को संयुक्त निदेशक मंडी परिषद लखनऊ से सीडीओ अमेठी किया गया है। देवेन्द्र कुमार सिंह कुशवाहा को विशेष सचिव आबकारी से विशेष सचिव रेशम विभाग तथा सुआकांक्षा राणा को विशेष कार्याधिकारी कुम्भ मेला प्राधिकरण से नगर आयुक्त झांसी बनाया गया है।

आईएएस के तबादले

- **मयूर माहेश्वरी को प्रबंध निदेशक राज्य विद्युत उत्पादन निगम तथा पावर ट्रांसमिशन कॉरपोरेशन लिमिटेड बनाया गया**

57 पीसीएस अफसरों का स्थायीकरण

अमृत विचार, लखनऊ : प्रदेश सरकार ने प्रदेश के 57 प्रांतीय सिविल सेवा (पीसीएस) अधिकारियों के स्थायीकरण का आदेश जारी कर दिया है। नियुक्ति विभाग की विशेष सचिव आईएएस अन्नपूर्णा गर्ग द्वारा यह आदेश जारी किया गया। यह आदेश उन अधिकारियों के लिए राहत लेकर आया है जो अब तक प्रोबेशन अवधि पर कार्यरत थे। जानकारी के अनुसार, स्थायीकरण की यह सूची वर्ष 2020 और 2022 बैच के उन अधिकारियों की है, जो तहसीलदार से पदोन्नत होकर उप जिलाधिकारी (एसडीएम) बने हैं। इन अधिकारियों को निर्धारित सेवा अवधि पूर्ण करने के बाद अब स्थायी रूप से पुष्टि दे दी गई है। आदेश के तहत संबंधित अधिकारियों की सेवा–स्थायीकरण तिथियां 9 से 21 सितंबर 2024 के बीच की हैं, जो उनकी नियुक्ति तिथियों के अनुरूप तय की गई हैं।

स्थायीकरण सूची में जिन जिलों के अधिकारी शामिल हैं, उनमें लखीमपुर खीरी, गाजीपुर, इटावा, बिजनौर, बदायूं, बरेली, प्रयागराज, उन्नाव, मुरादाबाद, कानपुर देहात, झांसी, फर्रुखाबाद, सहारनपुर, मेरठ, गाजियाबाद, वाराणसी, रामपुर, जौनपुर, सीतापुर, बलरामपुर, हापुड़, ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण और नगर निगम गाजियाबाद जैसे प्रमुख जिले शामिल हैं।

लखनऊ के यहियागंज गुरुद्वारा में गुरुचरण (जोड़े साहिब) यात्रा के स्वागत कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को सम्मानित करते सिख समुदाय के लोग, साथ में केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी।

गुरु परंपरा ने दिया बलिदान का संदेश : योगी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को यहियागंज गुरुद्वारे में पहुंचकर सिख आस्था और राष्ट्रप्रेम की अद्भुत मिसाल 'चरण सुहावे गुरु चरण (जोड़े साहिब) यात्रा' का स्वागत किया। इस दौरान कहा कि गुरु परंपरा ने भारत को केवल आस्था नहीं, बल्कि त्याग, सेवा और बलिदान का आदर्श दिया है। उन्होंने कहा कि यह यात्रा भारत की संस्कृति, साहस और राष्ट्रीय एकता की भावना को नई ऊंचाई देने वाली है।

यह यात्रा गुरु तेग बहादुर जी महाराज के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में प्रारंभ हुई है। दिल्ली से प्रारंभ होकर यह यात्रा पूरे देश में गुरु परंपरा के प्रति सम्मान और गौरव का भाव जगाती जा रही है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने गुरुवाणी सुनी और यात्रा दल के सदस्यों को पटुका पहनाकर सम्मानित किया। गुरुद्वारा कमेटी की ओर से उन्हें अंगवस्त्र और स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी, कैबिनेट मंत्री सुरेश खन्ना, राज्यमंत्री बलदेव सिंह औलख, अल्पसंख्यक आयोग सदस्य सरदार परबिंदर सिंह सहित गुरुद्वारा कमेटी के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि और श्रद्धालु बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

- **लखनऊ में मुख्यमंत्री ने किया चरण सुहावे गुरु चरण (जोड़े साहिब) यात्रा का स्वागत**

यात्रा का विभिन्न स्थानों पर हुआ स्वागत

अमृत विचार, लखनऊ : यहियागंज गुरुद्वारा से प्रस्थान के उपरांत पवित्र जोड़े साहिब गुरु चरण यात्रा का विभिन्न स्थानों पर स्वागत किया गया। महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने पहले नाका गुरुद्वारा उसके बाद उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक के साथ सदर गुरुद्वारे पर यात्रा का भव्य स्वागत किया। खालसा चौक चौराहे आलमबाग पर भी आनंद द्विवेदी के साथ बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों ने श्रद्धापूर्वक फूल बरसाए। इस अवसर पर यात्रा प्रमुख जसवीर सिंह धामा, लखविन्दर सिंह, रजिंदर सिंह बग्गा, दिलप्रीत सिंह, हरपाल सिंह, तेजपाल सिंह, सतबीर सिंह, इंद्रजीत सिंह खालसा, अरविंद त्रिपाठी, अशोक तिवारी समेत अन्य लोग उपस्थित रहे।

244 केंद्रों पर होगी ऑपरेटर भर्ती परीक्षा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : उत्तर प्रदेश पुलिस में कंप्यूटर ऑपरेटर और लिपिक संवर्ग के पदों पर भर्ती के लिए 1 और 2 नवंबर को ऑफलाइन परीक्षा होगी। कंप्यूटर ऑपरेटर के लिए 244 और लिपिक संवर्ग के लिए 186 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। परीक्षा में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं और एसटीएफ की नजर साल्वर गिरोह पर रहेगी। शासन ने सुरक्षा और यातायात प्रबंधन के निर्देश दिए हैं।

उप्र पुलिस में कंप्यूटर आपरेटर तथा लिपिक संवर्ग में उपनिरीक्षक (गोपनीय), सहायक उपनिरीक्षक (लिपिक) व सहायक उपनिरीक्षक (लेखा) के पदों पर भर्ती के लिए एक व दो नवंबर को आफलाइन लिखित परीक्षा (ओएमआर आधारित) कड़े सुरक्षा घेरे में होगी। एक नवंबर को 10 जिलों में कंप्यूटर आपरेटर की लिखित परीक्षा 244 केंद्रों पर होगी। इनमें सर्वाधिक 47 परीक्षा केंद्र लखनऊ में होंगे। जबकि दो नवंबर को लिपिक संवर्ग में भर्ती के लिए लिखित परीक्षा 10 जिलों में 186 परीक्षा केंद्रों पर होगी। इस परीक्षा के भी सर्वाधिक 35 केंद्र लखनऊ में होंगे। परीक्षा केंद्रों पर दोहरी चेकिंग की व्यवस्था होगी।

कंप्यूटर आपरेटर की लिखित परीक्षा के लिए आगरा में 13, बरेली में 15, गोरखपुर में 23, झांसी में 11, कानपुर नगर में 29, लखनऊ में 47, मेरठ में 26, मुरादाबाद में 26, प्रयागराज में 20 व वाराणसी में 34 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं।

- **1 और 2 नवंबर को ऑफलाइन होगी परीक्षा**

अब 51 हजार रुपये मिलेगा शादी अनुदान

अमृत विचार, लखनऊ : समाज कल्याण विभाग शादी अनुदान योजना का दायरा बढ़ाने जा रहा है, जिसके तहत अब तीन लाख रुपये तक की वार्षिक आय वाले परिवारों की बेटियों को भी लाभ मिलेगा। अनुदान राशि को 20 हजार से बढ़ाकर 51 हजार रुपये करने का प्रस्ताव है। पहले आय सीमा ग्रामीण क्षेत्र के लिए 46,080 रुपये और शहरी क्षेत्र के लिए 56,460 रुपये थी। बजट की कमी के कारण यह योजना पहले ठप पड़ी थी। वर्तमान वित्तीय वर्ष में सरकार ने योजना को फिर से संचालित किया है, परंतु आय सीमा का दायरा सीमित होने के कारण इस योजना में सीमित आवेदन ही आ रहे हैं। दूसरी तरफ मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना की आय सीमा को पिछले दिनों दो लाख से बढ़ाकर तीन लाख रुपये किया गया है और अनुदान राशि एक लाख रुपये की गई है, जिसमें से 60 हजार रुपये सीधे दुल्हन के खाते में भेजे जाते हैं। इससे भी शादी अनुदान योजना में आवेदन प्रभावित हुए हैं।

27 पीसीएस अधिकारी किए गए इधर से उधर

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : यूपी में आईएएस के बाद अब बड़े पैमाने पर पीसीएस अधिकारियों के तबादले कर दिए गए हैं। प्रदेश के विभिन्न जिलों में तैनात 27 प्रांतीय सिविल सेवा (पीसीएस) अधिकारियों के तबादले हुए हैं। शासन की ओर से जारी आदेश के अनुसार कई उप जिलाधिकारी (एसडीएम), नगर मजिस्ट्रेट और विकास प्राधिकरणों के सचिव स्तर के अधिकारियों को नई तैनाती दी गई है।

सूची के मुताबिक अरुण कुमार सिंह, जो अब तक अपर जिलाधिकारी (वित्त/राजस्व), बाराबंकी थे, उन्हें अपर आयुक्त, मुरादाबाद मंडल के पद पर भेजा गया है। वहीं निरंकार सिंह, अपर नगर आयुक्त नगर निगम,गोरखपुर से अब उसी पद पर स्थानांतरित हुए हैं। अतुल कुमार, उप जिलाधिकारी जालौन से अपर नगर आक्क्त गोरखपुर बनाए गए हैं। पंकज वर्मा अपर जिलाधिकारी बागपत से सचिव मुरादाबाद विकास प्राधिकरण बनाए गए हैं। विनीत कुमार उपाध्याय, नगर मजिस्ट्रेट मिर्जापुर को अपर जिलाधिकारी (वित्त व राजस्व) बागपत बनाया गया है। मिर्जापुर के उपजिलाधिकारी अविनाश कुमार को मिर्जापुर का नगर मजिस्ट्रेट बनाया गया है। अयोध्या के उपजिलाधिकारी कौशल कुमार को इसी जिले के अपर जिलाधिकारी भू अध्याप्ति की जिम्मेदारी दी गई है। राजस्व परिषद में ओएसडी राजकुमार द्विवेदी को वाराणसी में अपर आयुक्त विन्ध्यांचल के पद पर भेजा गया है। सहकारी चीनी मिल्स संघ के प्रधान प्रबंधक विवेक कुमार को अपर आयुक्त वाराणसी बनाया गया है। बरेली के उपजिलाधिकारी गोविन्द मौर्या को सहकारी चीनी मिल्स संघ के प्रधान प्रबंधक पद पर भेजा गया है। वाराणसी के उपजिलाधिकारी अमित कुमार वाराणसी नगर निगम में अपर नगर आयुक्त की जिम्मेदारी दी गई है।

कन्नौज के अपर जिलाधिकारी आशीष कुमार सिंह को मथुरा-वृंदावन विकास प्राधिकरण का सचिव बनाया गया है। कन्नौज के उप जिलाधिकारी देवेन्द्र सिंह अपर जिलाधिकारी (विरा) कन्नौज बनाए गए हैं। अयोध्या के उप जिलाधिकारी विकास धर को सहारनपुर नगर निगम में सहायक नगर आयुक्त बनाया गया है। वाराणसी की उप जिलाधिकारी श्रद्धा चौधरी को राज्य संपत्ति निदेशालय में सहायक निदेशक बनाया गया है। राजस्व परिषद से सम्बद्ध अरविन्द कुमार सिंह को मंडी परिषद का उप निदेशक बनाया गया है। सहकारी चीनी मिल्स में प्रधान प्रबंधक ज्योति को अपर जिलाधिकारी प्रशासन गाजियाबाद बनाया गया है। शाहजहांपुर के उपजिलाधिकारी महेश कुमार कैंथल को सहकारी चीनी मिल्स में प्रधान प्रबंधक का जिम्मा दिया गया है।

अंबेडकर नगर के अपर जिलाधिकारी सदानंद गुप्ता को वाराणसी के अपर जिलाधिकारी (विरा) के पद पर भेजा गया है। अपर जिलाधिकारी न्यायिक हापुड़ ज्योत्सना बंधु को अपर जिलाधिकारी (विरा) के पद पर अम्बेडकरनगर भेजा गया है। रामपुर की उपजिलाधिकारी मोनिका सिंह की अपर जिलाधिकारी न्यायिक हापुड़ भेजी गई हैं। अलीगढ़ के अपर जिलाधिकारी (नगर) अमित कुमार भट्ट अपर जिलाधिकारी (विरा) अयोध्या के पद पर भेजा गया है। मुरादाबाद के नगर मजिस्ट्रेट किंशुक श्रीवास्तव को अपर जिलाधिकारी (नगर) अलीगढ़ भेजा गया है। मुरादाबाद के उप जिलाधिकारी विनय पांडेय को मुरादाबाद का नगर मजिस्ट्रेट, फिरोजाबाद की अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) संगीता देवी को अपर जिलाधिकारी प्रशासन मुरादाबाद और मथुरा वृंदावन विकास प्राधिकरण के सचिव अरविन्द कुमार को अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) फिरोजाबाद ट्रांसफर किया गया है।

- **यूपी में आईएएस के बाद बड़े पैमाने पर बदले गए पीसीएस अधिकारी**

जनगणना 2027 होगी पूरी तरह डिजिटल : मुख्य सचिव

जनगणना 2027 को लेकर बैठक करते मुख्य सचिव एसपी गोयल।

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : मुख्य सचिव एसपी गोयल की अध्यक्षता में मंगलवार को भारत की जनगणना 2027 के कार्यान्वयन एवं संचालन हेतु गठित राज्य स्तरीय जनगणना समन्वय समिति की पहली बैठक आयोजित हुई। बैठक में मुख्य सचिव ने जनगणना 2027 होगी पूरी तरह डिजिटल होने की जानकारी देते हुए सभी विभागों को जनगणना कार्य को समन्वित ढंग से पूरा करने के निर्देश दिए। निदेशक, जनगणना कार्य शीतल वर्मा ने बताया कि 10 से 30 नवंबर 2025 तक राज्य की अनूपशहर और मिहीपुरवा तहसीलों तथा प्रयागराज नगर निगम के सात वार्डों में जनगणना प्री-टेस्ट किया जाएगा।

बदलाव इलाहाबाद, फैजाबाद, मुगलसराय से मुस्तफाबाद का सांस्कृतिक पुनर्जागरण

स्थानों के नाम बदलने में विचारधारा और वोट की नई रणनीति

धीरेंद्र सिंह, लखनऊ

अमृत विचार : लखीमपुर खीरी के मुस्तफाबाद को 'स्मृति प्रकटोत्सव मेला' के मंच से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नए नाम कबीरधाम का ऐलान केवल एक प्रशासनिक निर्णय नहीं, बल्कि योगी सरकार की सांस्कृतिक और वैचारिक राजनीति का विस्तार माना जा रहा है। योगी सरकार के सात वर्षों में इलाहाबाद को प्रयागराज, फैजाबाद को अयोध्या, मुगलसराय को पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर और अकबरपुर बस स्टैंड को 'श्रवण धाम' जैसे नामों से नवाजा गया।

मुख्यमंत्री योगी बार-बार कहते हैं कि धर्मनिरपेक्षता की आड़ में विरासत मिटाने का दौर खत्म हुआ है। सरकार का कहना है कि यह कदम आस्था, परंपरा और सांस्कृतिक गौरव की पुनर्स्थापना के लिए उठाए गए हैं। हर नया नाम भाजपा के 'हिंदू अस्मिता' नैरेटिव को और मजबूत करता है। अब प्रदेश की राजनीति में नाम बदलना केवल इतिहास का सुधार नहीं, बल्कि एक विचारधारा की स्थापना है। हर नया नाम एक चुनावी बयान की तरह गूंजता है। जहां आस्था, अस्मिता और सत्ता, तीनों का समीकरण साथ चलता है।

वहीं, विपक्ष इसे ध्यान भटकाने की राजनीति बता रहा है। सपा प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी का कहना है कि जब जनता बेरोजगारी, महंगाई और किसानों की समस्या से जूझ रही है, तब सरकार नाम बदलने में व्यस्त है।

- **कई और नामों पर मंथन जारी विपक्ष ने कहा- ध्यान भटकाने की राजनीति**

पांच कॉलेजों के नाम भी बदले

इस साल जून में पांच सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेजों के नाम भी बदले गए। प्रतापगढ़ का बाबा साहब अंबेडकर, मिर्जापुर का सम्राट अशोक, बस्ती का सरदार पटेल, गोंडा का मां पाटेश्वरी देवी और मैनपुरी का लोकमाता देवी अहिल्या बाई होल्कर इंजीनियरिंग कॉलेज रखा गया। यह भाजपा की सोशल इंजीनियरिंग रणनीति का हिस्सा है, जिसमें दलित, पिछड़ा और सवर्ण प्रतीकों को एक साथ साधने की कोशिश की जा रही है।

माया‌वती ने भी बदले थे कई जिलों के नाम

नामकरण की राजनीति नई नहीं है। मायावती के कार्यकाल में कई जिलों के नाम बदले गए थे, अमेठी को छत्रपति शाहूजी महाराज नगर, हाथरस को महामायानगर, शामली को प्रबुद्ध नगर, हापुड़ को पंचशील नगर और कानपुर देहात को रमाबाई नगर बनाया गया था। लखनऊ की किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी को छत्रपति शाहूजी महाराज चिकित्सा विश्वविद्यालय नाम दिया गया।

इन जिलों में नाम बदलने की चर्चाएं

योगी सरकार में कई अन्य नामों पर भी चर्चा चल रही है। अलीगढ़ को हरिगढ़, मुजफ्फरनगर को लक्ष्मीनगर, फिरोजाबाद को चंद्रनगर और गाजीपुर के मुहम्मदाबाद को गजाधर नगर नाम देने के प्रस्ताव सामने हैं। शाहजहांपुर की जलालाबाद तहसील का नाम पहले ही परशुरामपुरी किया जा चुका है। राजनीति के जानकार मानते हैं कि नामकरण अब उत्तर प्रदेश में चुनावी निवेश बन चुका है। हर नया नाम किसी ऐतिहासिक या धार्मिक प्रतीक से जुड़कर भावनात्मक संदेश देता है, जो वोटों में तब्दील हो सकता है।

अखिलेश यादव भी नहीं रहे पीछे

वर्ष 2012 में अखिलेश यादव की सपा सरकार आई तो मायावती के रखे गए कुछ नामों को फिर बदला गया। उनका तर्क था कि बसपा सरकार ने नाम बदलने में वर्गीय पक्षपात किया था। हालांकि अखिलेश ने खुद भी अपनी राजनीति के हिसाब से कुछ नामों को बदला। यानी, हर सरकार ने अपने वैचारिक या सामाजिक एजेंडे के हिसाब से नामों की राजनीति की है।

न्यूज ब्रीफ

युवक ने कार सवार परिवार पर किया हमला

अमृत विचार, बाराबंकी : श्याम पैलेस के पास रविवार शाम नशे में धुत युवक ने लापरवाही से बाइक चलाते हुए कार में टक्कर मार दी और बाद में कार सवार परिवार से मारपीट की। ढकौली निवासी रवि अवस्थी परिजनों के साथ कार से से घर लौट रहे थे। श्याम पैलेस के समीप आलोक वर्मा नशे में गलत दिशा से बुलेट मोटरसाइकिल चलाते हुए कार से टकरा गया। कार में महिलाएं होने के कारण रवि ने विवाद से बचते हुए वाहन बढ़ा लिया, लेकिन जन औषधि केन्द्र के सामने पहुंचते ही आलोक वर्मा ने कार रुकवाई और रवि से मारपीट शुरू कर दी। आरोपी ने कार की चाबी तोड़ डाली और वाहन में बैठी महिलाओं से बदसलूकी करने का प्रयास किया। पुलिस आरोपी को पकड़कर थाने ले आई।

महिला को परेशान कर रहा शोहदा, रिपोर्ट दर्ज

अमृत विचार, बाराबंकी : सुबेहा क्षेत्र में एक महिला ने गांव के युवक पर अश्लील हरकत करने का आरोप लगाया है। महिला द्वारा दी गई तहरीर में कहा गया कि आरोपी अरविन्द पिछले पांच दिनों से जब भी वह घर से निकलती है, उसके साथ छेड़छाड़ करता है और फोन नंबर मांगते हुए अभद्र बातें करता है। महिला की तहरीर पर सुबेहा पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत कर लिया है।

पुलिस ने वापस दिलाया गुम मोबाइल

अमृत विचार, बाराबंकी : कोतवाली नगर पुलिस ने खोए हुए मोबाइल फोन को बरामद कर मोबाइल स्वामी के सुपुर्द कर दिया। छठ पूजा के समय नागेश्वर नाथ मंदिर पर अनूप सोनी निवासी कटरा का मोबाइल कहीं गिर गया था। सूचना पर ड्यूटी पर मौजूद उपनिरीक्षक विनय कुमार द्वारा गुम हुए मोबाइल फोन को बरामद कर मोबाइल स्वामी को सुपुर्द किया गया।

युवक पर लाठी-डंडे से हमला, हालत गंभीर

अमृत विचार, बाराबंकी : दरियाबाद क्षेत्र के परमा का पुरवा मजरे दनापुर क्यामपुर में घर के सामने धान का पैरा लगाने को लेकर दो पक्षों में विवाद हो गया। एक पक्ष ने दूसरे पर लाठी-डंडे और बेलचे से हमला कर दिया, जिसमें एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। गोविन्द के घर के सामने मोहित, सुरेश और मंजू ने धान का पैरा लगा दिया। गोविन्द ने इसका विरोध किया तो विपक्षियों ने उन पर लाठी-डंडा और बेलचे से हमला कर दिया। हमले में गोविन्द गंभीर रूप से घायल हो गया।

उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देकर महिलाओं ने किया व्रत का पारण

सुबह 4 बजे से ही विभिन्न घाटों पर परिवार समेत पूजन करने के लिए उमड़ने लगी थी श्रद्धालुओं की भीड़, गूंजते रहे छठ मइया के गीत

महापर्व छठ

कार्यालय संवाददाता, बाराबंकी

अमृत विचार : चार दिवसीय लोकपर्व डाला छठ मंगलवार की सुबह उगते सूरज को अर्घ्य देने और छठी मइया से सुख, शांति व समृद्धि की कामना के साथ संपन्न हुआ। व्रती महिलाओं ने भोर होते ही घाटों और जलाशयों पर पहुंचकर परंपरागत रीति से पूजा-अर्चना की।

सुबह चार बजे से ही नागेश्वरनाथ तालाब, रेठ नदी के चिलहटा घाट, बंकी, ओबरी, पीएसी ग्राउंड, आलापुर, ढकौली समेत ग्रामीण अंचलों में व्रती महिलाओं का सैलाब उमड़ पड़ा। लगभग साढ़े पांच बजे व्रती महिलाएं कोसी, दउरा और दीप लेकर जल में खड़ी हो गईं और उगी हो सुरुजदेव भोर भिनसरवां अरघ केर बेरवा जैसे भक्ति गीतों से वातावरण गुंजायमान कर दिया। रविवार को खरना के बाद सोमवार रात भर घाटों पर भक्ति गीतों की गूंज और दीपों की जगमगाहट ने माहौल को दिव्य बना दिया। नागेश्वरनाथ तालाब रंगीन रोशनी से नहाया रहा, जहां श्रद्धालुओं ने देर रात तक आस्था का उत्सव मनाया। मंगलवार सुबह सूर्योदय की लालिमा दिखते ही व्रती महिलाओं के चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे। उन्होंने अर्घ्य अर्पित कर 36 घंटे से जारी निर्जला व्रत का पारण किया। किसी ने नई मनौती मांगी तो किसी ने पूरी हुई इच्छाओं के लिए छठी मइया को धन्यवाद दिया। पूजा के बाद व्रती महिलाओं ने बड़ों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त किया। घाटों पर सुरक्षा और के व्यापक प्रबंध किए गए थे।

बेटे के साथ उगते भगवान भास्कर की आरती उतारती व्रती महिला। ● अमृत विचार

भोर करीब 5 बजे नागेश्वरनाथ सरोवर पर सूर्यदेव के उदित होने का इंतजार करते श्रद्धालु। ● अमृत विचार

कहीं टब तो कहीं अस्थाई कुंड में पूजन

उगते सूर्य को अर्घ्य देने के लिए व्रतियों ने छत पर बाथिंग टब तो कहीं कॉलोनियों में बने अस्थायी कुंड के पानी में खड़े होकर उगते सूर्य को अर्घ्य दिया। आवास विकास कॉलोनी निवासी दिव्या ने बताया कि चार बजे से पूजा पाठ शुरू हो गया था। घर के बाहर बने कुंड के पानी में खड़ी होकर सूर्योदय का इंतजार कर रही थी। सूर्योदय होते ही अर्घ्य दिया। उधर जिले के अलग- अलग जगहों पर भी महिलाओं ने उगते सूर्य को अर्घ्य देकर व्रत का पारण किया।

ग्रामीण क्षेत्रों में भी दिखा पर्व का उत्साह

शहर ही नहीं, ग्रामीण अंचलों में भी डाला छठ महापर्व का उत्साह देखने को मिला। हैदरगढ़ और मसौली क्षेत्र के तालाबों पर भोर से ही भगवान भास्कर को अर्घ्य देने के लिए व्रती महिलाओं का आगमन शुरू हो गया था। वहीं सूरतगंज में सुमली नदी घाट, सिरौलीगौसपुर तहसील क्षेत्र के तेलवारी गांव में सरयू नदी के तट पर अर्घ्य देने के लिए व्रती महिलाओं की भीड़ उमड़ पड़ी थी। उधर, मरौचा गांव स्थित बहटाई ड्रेन, अद्रा पुल के समीप तथा रामनगर कस्बे के अटल उद्यान पार्क के तालाब और बिछलखा गांव में भी महिलाओं ने उदीयमान भगवान भास्कर को अर्घ्य देकर महापर्व छठ का पारण किया। जिले के निंदूरा क्षेत्र के बैनाताला, जयकरनपुरवा, बिसाई और भदरास गांवों में भी तालाब के किनारे व्रती महिलाओं ने उगते सूर्य को अर्घ्य अर्पित कर परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की।

सूरतगंज में सुमली नदी में पूजन करतीं व्रती महिलाएं। ● अमृत विचार

नागेश्वरनाथ सरोवर में उगते सूरज को अर्घ्य देतीं महिलाएं। ● अमृत विचार

बांटा प्रसाद, खूब ली सेल्फी : उगते सूर्य को अर्घ्य देने के बाद मंगलवार की सुबह व्रती महिलाएं अपनी-अपनी सुशोभिता (वेदी) के पास पहुंचीं। वहां उन्होंने छठी मइया को नमन कर व्रत के दौरान हुई किसी भी भूल के लिए क्षमा याचना की। इसके पश्चात श्रद्धापूर्वक ठेकुआ, फल और मिठाई का प्रसाद बांटा गया। पूजन के दौरान नवविवाहिताओं में विशेष उत्साह देखने को मिला। अर्घ्य के बाद घाटों पर परिजनों के साथ सेल्फी लेने का दौर चला। कई जगहों पर ढोल की थाप पर महिलाओं और युवतियों ने डांस कर पर्व की खुशी साझा की।

एसआईआर की तैयारियां तेज, दिए सख्त निर्देश

नाम जोड़ने, हटाने और संशोधन की पूरी प्रक्रिया पारदर्शी और त्रुटिरहित हो : रिणवा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

● मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने सभी दलों से किया बूथ लेवल एजेंट नियुक्त करने का अनुरोध

अमृत विचार : प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने मंगलवार को प्रदेश के सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों के साथ विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण (एसआईआर) की तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची में नाम जोड़ने, हटाने और संशोधन की पूरी प्रक्रिया पारदर्शी और त्रुटिरहित होनी चाहिए।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने निर्देश दिए कि सभी जिला निर्वाचन अधिकारी राजनीतिक दलों के साथ बुधवार तक बैठक करें और उन्हें आयोग के निर्देशों से अवगत कराएं। साथ ही सभी दलों से बूथ लेवल एजेंट नियुक्त करने का अनुरोध किया जाए, जो बूथ लेवल

अधिकारियों (बीएलओ) को पुनरीक्षण कार्य में सहयोग देंगे। रिणवा ने कहा कि गणना प्रपत्रों का मुद्रण, वितरण, मिलान और संग्रहण समय पर सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिया कि डुप्लीकेट, शिफ्टेड और मृत मतदाताओं के नाम सूची में न रहें और किसी भी मतदेय स्थल पर 1200 से अधिक मतदाता न हों। इसके लिए सभी मतदेय स्थलों का स्थलीय निरीक्षण कर लिया जाए।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि सभी पात्र नागरिकों के नाम सूची में शामिल होना आवश्यक है, विशेष रूप से वे नवयुवक जिन्होंने 1 जनवरी 2026 तक 18 वर्ष की आयु पूरी कर ली है। उन्होंने कहा कि वृद्ध, बीमार, दिव्यांग और निर्धन व्यक्तियों को पुनरीक्षण प्रक्रिया में अधिकतम सुविधा दी जाए और आवश्यकतानुसार स्वयंसेवकों की तैनाती की जाए। उन्होंने एसआईआर कार्यक्रम की तिथियों की विस्तार से जानकारी दी।

बताया कि 3 नवंबर तक पुनरीक्षण से संबंधित प्रशिक्षण और प्रपत्रों का मुद्रण पूरा कर लिया जाएगा। इसके बाद 4 नवंबर से 4 दिसंबर 2025 तक बीएलओ घर-घर जाकर गणना प्रपत्र वितरित करेंगे और मतदाताओं से भरवाकर प्राप्त करेंगे।

एसआईआर कार्यक्रम की मुख्य तिथियां

- 3 नवंबर 2025 तक : तैयारी, प्रशिक्षण और प्रपत्रों का मुद्रण
- 4 नवंबर से 4 दिसंबर 2025 : घर-घर गणना प्रपत्र वितरण
- 9 दिसंबर 2025 : ड्राफ्ट मतदाता सूची प्रकाशन
- 9 दिसंबर 2025 से 8 जनवरी 2026 : दावे और आपत्तियां दर्ज
- 7 फरवरी 2026 : अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन

बहाने से बुलाकर किशोरी से दुष्कर्म

संवाददाता, बाराबंकी

● रविवार की घटना, एसपी के निर्देश पर दर्ज हुई रिपोर्ट

अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में नाबालिग किशोरी को बहाने से बुलाकर दुष्कर्म किया गया। घर लौटी किशोरी ने परिजनों को घटना बताई। इस मामले में पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की तो मामले की शिकायत एसपी से की गई। तब जाकर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज की। इस बीच आरोपी फरार हो गया।

पीड़िता की मां ने बताया कि रविवार शाम करीब पांच बजे उसकी 14 वर्षीया पुत्री घर के सामने पशुओं को चारा-पानी दे रही थी। तभी पड़ोस में रहने वाला भूरे पुत्र सलामू घर पहुंचा और किशोरी से कहा कि उसे भाभी घर पर बुला रही हैं। जैसे ही बालिका उसके घर पहुंची, भूरे ने अपनी भाभी अतीकुन की मदद से उसे कमरे में बंद कर उसके साथ दुष्कर्म किया। बालिका की तलाश करते हुए उसकी दो बड़ी बहनें चीख पुकार सुनकर मौके पर पहुंचीं तो किशोरी को बदहवास हालत में पाया। मां ने बताया कि शाम को घर वाले किशोरी को लेकर कोतवाली पहुंचे लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। पुलिस से निराश परिजनों ने सोमवार को पीड़िता के साथ एसपी आफिस पहुंच कर कार्रवाई की फरियाद की।

पीड़िता की मां ने बताया कि एसपी कार्यालय से महिला सिपाही के साथ किशोरी को डाक्टरी परीक्षण के लिए जिला अस्पताल भेजा गया। उधर, पुलिस की निष्क्रियता से आरोपी भूरे गांव से भाग निकला। क्षेत्राधिकारी जगतराम कन्नौजिया ने बताया कि मामले में सोमवार शाम मुकदमा दर्ज किया गया है।

निर्वाचन अधिकारियों की नियुक्ति पर उठाए सवाल

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

● सपा ने ज्ञापन देकर की बीएलओ और अधिकारियों की पुनर्नियुक्ति की मांग

अमृत विचार : समाजवादी पार्टी ने प्रदेश में विधानसभा क्षेत्रों के मतदाता सूची विशेष पुनरीक्षण (एसआईआर) से पहले निर्वाचन अधिकारियों की नियुक्ति पर गंभीर सवाल उठाए हैं। पार्टी ने आरोप लगाया है कि बूथ लेवल ऑफिसर (बीएलओ) एडीएम (इलेक्शन) और ईआरओ (इलेक्शन रजिस्ट्रेशन ऑफिसर) की तैनाती जाति और धर्म के आधार पर की गई है। सपा ने राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी को ज्ञापन देकर मांग की है कि निष्पक्ष और पारदर्शी पुनरीक्षण प्रक्रिया के लिए सभी अधिकारियों को तत्काल हटाकर नई नियुक्तियां की जाएं।

सपा के प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल ने ज्ञापन में कहा कि प्रदेश के 403 विधानसभा क्षेत्रों के 1,62,486 पोलिंग स्टेशनों पर कार्यरत बीएलओ और निर्वाचन अधिकारियों की नियुक्ति भाजपा की मानसिकता वाले अधिकारियों को तरजीह देकर की गई है। उन्होंने कहा कि जाति और धर्म के आधार पर की गई यह नियुक्ति लोकतांत्रिक मूल्यों और आयोग की निष्पक्षता के खिलाफ है। इस तरह के भेदभावपूर्ण चयन से न केवल चुनावी प्रक्रिया की निष्पक्षता पर प्रश्नचिह्न लग रहा है, बल्कि भारत निर्वाचन आयोग की विश्वसनीयता भी प्रभावित हो रही है।

हवाई यात्री और कार्गो ट्रैफिक में इजाफा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

● घरेलू यात्री 15.7% और एयर कार्गो में 19.1% की बढ़ोतरी

● वाराणसी, अयोध्या, प्रयागराज व गोरखपुर बने हवाई ग्रोथ के इंजन

अमृत विचार : प्रदेश में हवाई यात्री और कार्गो ट्रैफिक में रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज हुई है। घरेलू यात्रियों में 15.7% और एयर कार्गो में 19.1% का उछाल आया है। अप्रैल से अगस्त 2025 के बीच राज्य के हवाई अड्डों से 60 लाख से अधिक यात्रियों ने सफर किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 14.6% की वृद्धि दर्शाता है। भारत के कुल हवाई यातायात में यूपी की हिस्सेदारी बढ़कर 3.52% तक पहुंच गई है। इसका अर्थ है कि अब हर 30 में से एक हवाई यात्री यहां से यात्रा कर रहा है। इसमें वाराणसी, अयोध्या, प्रयागराज व गोरखपुर जैसे शहर हवाई ग्रोथ के इंजन बने हैं।

वर्ष 2016-17 में 59.97 लाख यात्रियों की तुलना में 2024-25 में यह संख्या 142.28 लाख तक पहुंच गई है। इनमें 129.29 लाख घरेलू और 12.99 लाख अंतरराष्ट्रीय यात्री शामिल रहे। यूपी ने 2017 से 2025 के बीच 10.1% की वार्षिक वृद्धि दर दर्ज की है, जो राष्ट्रीय एविएशन सेक्टर में उसकी मजबूती को दर्शाता है। कोविड-19 के बाद राज्य ने सबसे तेज रिकवरी दिखाई और 2023-24 की तुलना में 2024-25 में 25.9% की ग्रोथ दर्ज की। जबकि 2023-24 और 2024-25 में अप्रैल-अगस्त माह के बीच तुलना करें तो यह ग्रोथ 14.6% रही। इस दौरान डॉमेस्टिक एयर पैसेंजर्स में 15.7% और इंटरनेशनल पैसेंजर्स की संख्या में 4.3% ग्रोथ दर्ज की गई।

राज्य की हवाई प्रगति में अयोध्या, वाराणसी, प्रयागराज और गोरखपुर जैसे शहरों ने अहम भूमिका निभाई। अयोध्या एयरपोर्ट पर 2024-25 में यात्रियों की संख्या 2 लाख से बढ़कर 11 लाख तक पहुंची। प्रयागराज में 76.4% और वाराणसी में 34.4% की वृद्धि दर्ज हुई। वहीं गोरखपुर में 27.6% और कानपुर में 13.3% का उछाल देखा गया। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि धार्मिक पर्यटन और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी राज्य की ग्रोथ के प्रमुख इंजन बन गए हैं। उत्तर प्रदेश न सिर्फ यात्रियों, बल्कि व्यापारिक गतिविधियों के लिए भी उड़ान भर रहा है। वर्ष 2016-17 से वर्ष 2024-25 के बीच एयर कार्गो ट्रैफिक में 19.1% की औसत वार्षिक वृद्धि हुई है। यह 5.89 हजार मीट्रिक टन से बढ़कर 28.36 हजार मीट्रिक टन तक पहुंच गया। लखनऊ एयरपोर्ट ने अकेले 22,099 मीट्रिक टन कार्गो हैंडल किया, जबकि प्रयागराज में 50% और वाराणसी में 27.7% की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

सिटी डायरी

रामपुर महोत्सव के लिए मैदान को कराया जा रहा समतल।

3 से 12 नवंबर तक आयोजित होगा रामपुर महोत्सव

अमृत विचार, बाराबंकी : श्री रामराम चतुर्भुज महाराज की पावन कर्मस्थली रामपुर धाम इस वर्ष भी श्रद्धा, संस्कृति और जनसेवा के महा उत्सव का साक्षी बनने जा रही है। यहां 3 नवंबर से 12 नवंबर तक रामपुर महोत्सव बड़े धूमधाम से आयोजित किया जाएगा। आयोजन को सफल बनाने के लिए तैयारियों की बैठक रामपुर धाम परिसर में संपन्न हुई, जिसमें महोत्सव समिति के पदाधिकारी, कार्यकर्ता और स्थानीय गणमान्यजन मौजूद रहे। समिति के अध्यक्ष आनंद मोहन ने बताया कि इस वर्ष का आयोजन अधिक भव्य स्वरूप में होगा। बैठक में महंत शिव कुमार दास, आलोक, ललित, सिद्धार्थ कनौजिया, धर्मेंद्र कुमार, रामवीर, मोहित कुमार, उत्तम सिंह, रवि धीमान, आशुवेंद्र कुमार वर्मा, विनय आदि मौजूद रहे।

वृद्धाश्रम में अंगवस्त्र भेंट करते राज्यमंत्री व अन्य।

गोष्ठी में मौजूद किसान व कंपनी के अधिकारी।

वृद्धाश्रम में बुजुर्गों को दिए अंगवस्त्र

अमृत विचार, बाराबंकी : भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष स्व. सुधीर कुमार सिंह सिद्धू की द्वितीय जन्म जयंती के अवसर पर मंगलवार को सफेदाबाद स्थित मातृ पितृ सदन वृद्धाश्रम में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम सिद्धू के पुत्र व जिलाध्यक्ष उद्योग व्यापार संगठन जयदीप सिंह सिद्धू और वरिष्ठ भाजपा नेता गुरुदीप सिंह सिद्धू द्वारा आयोजित किया गया। श्रद्धांजलि सभा में वृद्धाश्रम के कुल 110 वरिष्ठ जनों को अंगवस्त्र भेंट किया गया। इस अवसर पर राज्य मंत्री सतीश चंद्र शर्मा, भाजपा जिला अध्यक्ष अरविंद मौर्या, जिला पंचायत अध्यक्ष राजरानी रावत, एससी-एसटी आयोग अध्यक्ष बैजनाथ रावत, पूर्व सांसद उपेंद्र सिंह रावत और जिला महामंत्री संदीप गुप्ता सहित कई प्रमुख अतिथि उपस्थित रहे।

किसानों की उन्नति ही सच्चा राष्ट्र निर्माण : सोमनाथ

अमृत विचार, बाराबंकी : सिरी सीड्स कम्पनी द्वारा सोमवार को जिला मुख्यालय स्थित एक निजी प्रतिष्ठान में कृषक गोष्ठी एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें अयोध्या, अम्बेडकरनगर, सीतापुर और रायबरेली समेत कई जिलों के किसानों ने भाग लिया। जोनल मैनेजर सोमनाथ सेन गुप्ता ने कहा कि किसानों की उन्नति ही सच्चा राष्ट्रनिर्माण है। रीजनल मैनेजर मुकेश मिश्रा ने कृषि यंत्रों पर 40 से 80 प्रतिशत सरकारी सब्सिडी की जानकारी दी। किसानों को हाइब्रिड सरसों सिरी-19 के मिनी किट वितरित कर सम्मानित किया गया।

प्रदर्शन करते उपभोक्ता।

बिजली बिल न मिलने पर किया प्रदर्शन

अमृत विचार, बाराबंकी : कई माह से बिजली बिल न मिलने से नाराज बरगदिया के उपभोक्ताओं ने मंगलवार को प्रदर्शन किया। विद्युत केंद्र त्रिलोकपुर के उपभोक्ताओं का कहना है कि बिल नहीं दिये जा रहे। शैलेंद्र, रामनरेश, चंटू वर्मा, राम सिंह रावत, सोनू, पवन, मोनू ने बताया कि पिछले छह माह से बिल नहीं मिला। सुपरवाइजर अंशु ने बताया कि यदि किसी का बिल नहीं बन पाया है, तो उसे हर माह बनाया जाएगा।

ट्रेडिंग के नाम पर ठगे 18 लाख

अमृत विचार, बाराबंकी: ऑनलाइन ट्रेडिंग के नाम पर एक युवक से करीब 18 लाख 45 हजार रुपये की ठगी कर ली गई। पीड़ित ने 14 संदिग्ध नंबर उपलब्ध कराते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई है। साइबर थाना में की गई शिकायत में लालू का पुरवा थाना जहांगीराबाद निवासी नितिन कुमार शर्मा ने बताया कि उनके मोबाइल नंबर को एक अज्ञात व्यक्ति द्वारा वाई 77 ए बारक्लेज नामक व्हाट्सऐप ग्रुप में जोड़ा गया था। पीड़ित ने बताया कि ग्रुप में बताई गई एप्लिकेशन के जरिए ट्रेडिंग की जाती थी। भरोसा दिलाने के बाद ग्रुप के संचालकों ने नितिन से धीरे-धीरे 18,45,357 रुपये विभिन्न बैंक खातों में ट्रांसफर करवा लिए।

प्रतियोगिता | **गांधी क्लब को हराकर लगातार दूसरे वर्ष बनी विजेता**

अजीमुद्दीन इंटर कॉलेज ने जीता खिताब

कार्यालय संवाददाता, बाराबंकी

अमृत विचार : खेल निदेशालय के तत्वावधान में पं. दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर जिला स्तरीय हॉकी (बालक) प्रतियोगिता का आयोजन केडी सिंह बाबू स्टेडियम में किया गया। प्रतियोगिता में जिले की आठ टीमों ने प्रतिभाग किया।

फाइनल मुकाबले में अजीमुद्दीन अशरफ इस्लामिया इंटर कॉलेज ने शानदार प्रदर्शन करते हुए गांधी क्लब को 2-0 से पराजित कर इस वर्ष भी विजेता का खिताब अपने नाम किया। टीम की ओर से अमित और समद ने एक-एक गोल दागा। प्रतियोगिता का उद्घाटन हॉकी सचिव मजहर अजीज खां ने किया, जबकि समापन जिला ओलंपिक संघ के सचिव धीरेन्द्र वर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर जिला हॉकी संघ के उपाध्यक्ष मो. असलम, चंदा रानी, तौहीद खान, मुजीब अहमद (रेलवे), विजय अवस्थी, रियाज अहमद, अभिषेक सिंह, शाकिब अशरफ व विवेक प्रकाश सिंह सहित खेल प्रेमी उपस्थित रहे।

अजीमुद्दीन अशरफ इस्लामिया इन्टर कालेज की विजेता टीम। ● अमृत विचार

खरगोश के बहाने मोर का शिकार

अमृत विचार, बाराबंकी : फतेहपुर वन रेंज अंतर्गत नंदउपारा में मंगलवार सुबह राष्ट्रीय पक्षी मोर का शिकार कर उसे जाल में फंसा लिया गया। ग्रामीणों की सतर्कता से एक युवक पकड़ा गया, जबकि उसके दो साथी भाग निकले। युवक ने अपना नाम करन निवासी जगजीवनापुर मजरा सूरतगंज थाना मोहम्मदपुर खाला बताया। उसने स्वीकारा कि वह दो साथियों के साथ खरगोश पकड़ने के लिए जाल बिछा रहा था। उसी दौरान एक मोर जाल में फंस गया। आरोप है कि तीनों ने मोर को बोरी में भरने की कोशिश की, तभी खेत में काम कर रहे फुरकान ने यह देख ग्रामीणों को सूचना दी। बड़ी संख्या में पहुंचे ग्रामीणों ने एक आरोपी को पकड़ लिया।

अमृत विचार
लखनऊ, बुधवार, 29 अक्टूबर 2025

न्यूज ब्रीफ

तालाब में गिरे युवक की डूबकर मौत

अमृत विचार, हरदोई : नशे की हालत में शौच के लिए गया युवक तालाब में गिरकर डूब गया। परिजन की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया। सण्डीला कस्बे सदर बाज़ार निवासी 45 वर्षीय संतोष कुमार शराब के नशे का आदी था। सोमवार की रात वह घर से शौच के लिए निकला था। उसके बाद वापस नहीं लौटा। संतोष के भतीजे अनिल कुमार ने बताया कि नशे की हालत में चाचा तालाब में गिर गए और डूबकर उनकी मौत हो गई।

सरकारी भूमि से अवैध कब्जा हटवाने की मांग

अमृत विचार, हरदोई : भटपुर रोड पर बेस कीमती ग्राम पंचायत छावन की भूमि पर किए जा रहे कब्जे को हटवाने के लिए ग्राम प्रधान ने एसडीएम से मांग की है। छावन की ग्राम प्रधान अंकिता यादव ने एसडीएम को शिकायती पत्र देकर बताया कि सारंगपुर चौकी के पास बेशकीमती सरकारी भूमि पर प्रापर्टी डीलर कब्जा और बिक्री कर रहे हैं। ग्राम प्रधान ने एक कंपनी पर भी जमीन कब्जा कर निर्माण कराए जाने का आरोप लगाया है। प्रधान के देवर लाल बाबू ने बताया बीते 25 अक्टूबर को समाधान दिवस पर तहरीर दी थी, जिस पर नायब तहसीलदार ने राजस्व निरीक्षक को जमीन कब्जा मुक्त कराए जाने का आदेश दिया था। चार दिन बीतने के बाद भी कोई राजस्व कर्मचारी मौके पर नहीं पहुंचा है।

पत्नी से विवाद के बाद खुद को मारा चाकू

अमृत विचार, हरदोई : एक-दूसरे से खफा चल रहे पति-पत्नी के बीच तनाव इतना तीखा हो गया कि पति ने खुद को चाकू मारते हुए खुदकुशी करनी चाही, उसे सीएचसी मल्लावां पहुंचाया गया, पुलिस का कहना है कि तहरीर नहीं आई है, उसके आने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। मल्लावां कोतवाली के नेवादा राघौपुर निवासी विनोद और उसकी पत्नी के बीच झगड़ा चल रहा है, इतना ही नहीं पत्नी अपने पति के ऊपर केस भी कर चुकी है। मंगलवार शाम की बात है कि विनोद ने खुद को चाकू मार कर खुदकुशी करनी चाही। इसका पता होते ही हड़कंप मच गया। विनोद को इलाज के लिए सीएचसी मल्लावां में भर्ती कराया गया है।

बंदियों से मिलकर जानीं समस्याएं

अमृत विचार, हरदोई : जिलाधिकारी अनुनय झा व पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा के साथ जिला कारागार का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने बंदियों से उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी ली तथा उनकी शिकायतों को समय से निस्तारित कराने का आश्वासन दिया।

अयोध्या हाईवे पर आज से आठ दिन तक रहेगी रोक

परिक्रमा व कार्तिक पूर्णिमा स्नान को लेकर यातायात में बदलाव, पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे होकर जाएंगे वाहन

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : अयोध्या में चौदहकोसी व पंचकोसी परिक्रमा और कार्तिक पूर्णिमा स्नान पर्व को देखते हुए यातायात व्यवस्था में बदलाव किया गया है। लखनऊ-अयोध्या हाइवे पर वाहनों के आवागमन पर बुधवार से आठ दिन तक रोक रहेगी। वाहनों को पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे होकर जाना होगा। यह जानकारी मंगलवार शाम डीसीपी यातायात कमलेश दीक्षित ने दी। बताया कि इमरजेंसी में प्रतिबंधित मार्ग से एम्बुलेन्स, शव वाहन, फायर सर्विस, स्कूली वाहन जाने की अनुमति दी जाएगी। इसके लिए वाहन चालक या स्वामी को यातायात कंट्रोल रूम नंबर 9454405155 पर सूचना देनी होगी।

विभिन्न मार्गों से आने वाले वाहनों के लिए ये रहेगी व्यवस्था

- **कानपुर से आने वाले भारी वाहनों की व्यवस्था :** कानपुर से अम्बेडकरनगर, बस्ती, संतकबीरनगर गोरखपुर, देवरिया, महराजगंज, कुशीनगर, बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़ आदि जाने वाले बसे/बड़े/भारी वाहन कानपुर, फतेहपुर, लालगंज, बछरांवा, हैदरगढ़, पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे होकर जा सकेंगे।
- **उन्नाव से आने वाले भारी वाहनों की व्यवस्था :** उन्नाव से अम्बेडकरनगर, बस्ती, संतकबीरनगर गोरखपुर, देवरिया, महराजगंज, कुशीनगर, बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़ आदि जाने वाले बसे/बड़े/भारी वाहन चाहलारी होते हुए आदि जाने वाले बसे/बड़े/भारी वाहन कानपुर उन्नाव के दही चौकी से पुरवा, मौरावा, बछरांवा, हैदरगढ़, पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे होकर जा सकेंगे। इसके अलावा उन्नाव (ललऊखेडा), से बीघापुर लालगंज, गुरुबक्शगंज, बछरांवा से पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे होकर जा सकेंगे।
- **सीतापुर से आने वाले भारी वाहनों की व्यवस्था :** सीतापुर से गोण्डा, मनिकापुर, बस्ती संतकबीरनगर गोरखपुर, देवरिया, महराजगंज, कुशीनगर, बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़ आदि जाने वाले बसे/बड़े/भारी वाहन हरदोई से मलिहाबाद, इंटौंजा, कुम्हरावां, कुर्सी, देवा, बाराबंकी, रामनगर, करनैलगंज होकर जा सकेंगे।
- **सुल्तानुपर रोड/हैदरगढ़ से आने वाले भारी वाहनों की व्यवस्था :** सुल्तानपुर रोड से गोण्डा, मनिकापुर, बस्ती संतकबीरनगर गोरखपुर, देवरिया, महराजगंज, कुशीनगर, बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़ आदि जाने वाले बसें/बड़े/भारी वाहन हैदरगढ़ से पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे होकर जा सकेंगे।
- **हरदोई से आने वाले भारी वाहनों की व्यवस्था :** हरदोई से गोण्डा, मनिकापुर, बस्ती संतकबीरनगर गोरखपुर, देवरिया, महराजगंज, कुशीनगर, बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़ आदि जाने वाले बसे/बड़े/भारी वाहन हरदोई से मलिहाबाद, इंटौंजा, कुम्हरावां, कुर्सी, देवा, बाराबंकी, रामनगर, करनैलगंज होकर जा सकेंगे।
- **रायबरेली रोड से आने वाले भारी वाहनों की व्यवस्था :** रायबरेली रोड से गोण्डा, मनिकापुर, बस्ती संतकबीरनगर गोरखपुर, देवरिया, महराजगंज, कुशीनगर, बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़ आदि जाने वाले बसें/बड़े/भारी वाहन बछरांवा से हैदरगढ़ से पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे होकर जा सकेंगे।

ट्रेन की तरह बस में भी बुक करा सकेंगे अपनी सीट

संवाददाता, हरदोई

- **उप्र. राज्य सड़क परिवहन निगम अपनी सेवाओं को कर रहा बेहतर**

अमृत विचार : यात्रियों की सुविधा और सुरक्षित यात्रा को नई दिशा देने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम ने अपनी सेवाओं को आधुनिक बनाने की प्रक्रिया तेज कर दी है। अब विभाग ने यात्रियों के लिए ऐसी व्यवस्था शुरू की है, जिसके तहत लोग रेलवे की तर्ज पर बस में बैठने से पहले ही अपनी पसंद की सीट बुक कर सकेंगे।

हरदोई क्षेत्रीय कार्यालय में अधिकांश बसों को पूरी तरह ऑनलाइन प्रणाली से जोड़ा जा चुका है और जिन बसों का कार्य शेष है, उन्हें भी चरणबद्ध तरीके से जोड़ा जा रहा है। यात्री अब यूपीएसआरटीसी की आधिकारिक मोबाइल एप यूपीएसआरटी तथा यूपी राही पर जाकर न केवल सीट आरक्षित कर सकते हैं, बल्कि बस की वर्तमान स्थिति भी लाइव ट्रैक कर पाएंगे। इस सुविधा से यात्रियों को बस का इंतजार करने में होने वाली अनिश्चितता से राहत मिलेगी। साथ ही, ऐप के माध्यम से किराया, रूट, अनुमानित समय, एवं उपलब्ध सेवाओं की जानकारी भी तुरंत प्राप्त की जा सकेगी।परिवहन निगम के यात्री वेबसाइट पर जाकर भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

सड़क हादसों में राजगीर समेत तीन लोगों की मौत

चालक ने बैक किया ट्रक, चपेट में आने से मजदूर की मौत

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- **बिजनौर में डीसीएम की टक्कर से राजगीर की गई जान**
- **नगराम सड़क हादसे में घायल युवक ने दम तोड़ा**

अमृत विचार: बिजनौर इलाके में डीसीएम की टक्कर से राजगीर की मौत हो गयी। वहीं, बीकेटी थाना क्षेत्र में मजदूरी करने परिवार संग महाराष्ट्र जा रहा मजदूर ट्रक बैक करते हुए चपेट में आने से बुरी तरह घायल हो गया। घायल को अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उसकी मौत हो गयी। उधर, नगराम में 19 अक्टूबर को सड़क हादसे में घायल युवक ने अस्पताल में दम तोड़ दिया।

बिजनौर के न्यू गड़ौरा निवासी रंजीत कुमार (30) राजगीर थे। भाई सुजीत ने बताया कि रंजीत सोमवार दोपहर बंथरा स्थित जुनाबगंज में बुआ के घर जा रहे थे। जुनाबगंज चौराहे पर वाहन से उतरकर जैसे ही पैदल आगे बढ़े, तभी बेकाबू डीसीएम ने टक्कर मार दी। घटना के बाद भाग रहे डीसीएम चालक को पकड़कर राहगीरों ने पीटकर पुलिस को सौंप दिया। हादसे में गंभीर रूप से घायल रंजीत को ट्रामा सेंटर ले जाया गया। जहां डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मोबाइल से घरवालों को सूचना दी। परिवार में पत्नी अंजू, एक बेटा है।

वहीं, मूल रूप से लखीमपुर के मटेही गांव निवासी रामू (45) मजदूरी के लिए पत्नी, ठेकेदार योगेंद्र सिंधी व गांव के अन्य लोगों के साथ ट्रक में सवार होकर महाराष्ट्र जा रहे थे। रास्ते में सोमवार रात बीकेटी के रैथा रोड अंडरपास के पास रामू ट्रक से उतरकर लघुशंका करने लगे। इसी दौरान ट्रक चालक ने गाड़ी बैक कर दी। ट्रक की चपेट में आने से रामू गंभीर रूप से घायल हो गया। चालक ट्रक लेकर चला गया।

डॉयल-112 पर सूचना मिलते ही बीकेटी पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने परिवार संग मिलकर घायल रामू को सौ सैय्या अस्पताल पहुंचाया, जहां उनकी मौत हो गई। दामाद अतुल ने बताया कि ट्रक चालक घटना करने के बाद ट्रक लेकर महाराष्ट्र के लिए निकल पड़ा। परिजन ने ठेकेदार और ट्रक चालक के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

उधर, रायबरेली के शिवगढ़ क्षेत्र के ढेकवा निवासी सुरेश कुमार ने बताया कि 19 अक्टूबर को उसका भाई सर्वेश कुमार बाइक से लखनऊ जा रहा था। इस बीच नगराम इलाके में अचलीखेड़ा इंदिरा बैराज के पास एक अन्य बाइक सवार ने सामने से टक्कर मार दी थी। हादसे में सर्वेश गंभीर रूप से घायल हो गया। इलाज के लिए ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया गया था। सोमवार रात उसकी मौत हो गई। नगराम पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

ट्रक में घुसा कंटेनर, दो घायल

अमृत विचार, मलिहाबाद : रहीमाबाद थाना क्षेत्र में सोमवार देर रात कबाड़ लाद कर हरदोई की ओर जा रहे ट्रक ड्राइवर लघुशंका के लिए भतोइया के पास गुलाल खेड़ा मोड़ के निकट रूका। इसी बीच पीछे से आ रहे गाड़ियों से लदा कंटेनर ने ट्रक में टक्कर मार दी। हादसे में ट्रक में सवार मुजफ्फरनगर निवासी चालक गुलाम नबी और कंटेनर पर सवार राशिद निवासी आगरा घायल हो गए। पुलिस ने घायलों को उपचार के लिए मलिहाबाद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। मंगलवार सुबह पुलिस ने क्रेन मंगवा कर क्षतिग्रस्त दोनों वाहनों को सड़क से किनारे करवाया, जिससे आवागमन पूरी तरीके से चालू हुआ।

पत्नी ने प्रेमी से कराई थी पति की हत्या, गिरफ्तार

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- **पुलिस लाइन में तैनात प्रदीप गौतम की हत्या का खुलासा**
- **तमंचा खरीदने के लिए दिए थे सात हजार, लोकेशन भी बताई**

पकड़े गए आरोपियों के बारे में जानकारी देते पुलिस अधिकारी।

अमृत विचार: पुलिस लाइन में तैनात संविदाकर्मी प्रदीप कुमार गौतम (30) की हत्या का सनसनीखेज खुलासा हुआ है। प्रदीप की पत्नी चांदनी उर्फ ज्योति ने अपने प्रेमी बच्चा लाल के साथ मिलकर पति की हत्या की साजिश रची थी। हत्या में प्रयुक्त तमंचा खरीदने के लिए चांदनी ने सात हजार रुपये दिए थे और वारदात वाली रात प्रदीप की लोकेशन भी प्रेमी को बताई थी। पुलिस ने कॉल डिटेल और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर दोनों को गिरफ्तार कर लिया है।

एडीसीपी उत्तरी अमोल मुर्कुट ने बताया कि आरोपी बच्चा लाल बांदा के कमासिन स्थित कुर्रा का पुरवा और चांदनी उर्फ ज्योति मामपुर बाना की रहने वाली है। बच्चा लाल प्रदीप का दोस्त था और अकसर घर आता-जाता था। इसी दौरान दोनों के बीच प्रेम संबंध बन गए और चांदनी ने पति से छुटकारा पाने के लिए हत्या की साजिश रची।

शराब पिलाकर आउटर रिंग रोड पर की हत्या : शनिवार रात प्रदीप ड्यूटी से लौट रहा था। चांदनी ने फोन कर उसकी लोकेशन पूछी। प्रदीप ने बताया कि वह एयरफोर्स तिराहे के पास है। इसके बाद बच्चा लाल वहां पहुंचा और उसे शराब पीने का ऑफर दिया। आउटर रिंग रोड पर दोनों ने शराब पी। प्रदीप जब नशे में धुत हो गया तो बच्चा ने तमंचे से एक गोली उसकी पीठ और दूसरी कनपटी में मार दी। हत्या को लूट दिखाने के लिए वह प्रदीप की बाइक, 315 रुपये और दो मोबाइल फोन लेकर फरार हो गया।

चार टीमें लगाकर हुआ खुलासा : एडीसीपी ने बताया कि हत्याकांड के खुलासे के लिए इंस्पेक्टर बीकेटी, क्राइम ब्रांच प्रभारी शिवानंद मिश्र और सर्विलांस टीम समेत चार टीमें गठित की गईं। आरोपियों की निशानदेही पर तमंचा, बाइक, नगदी और मोबाइल बरामद किए गए।

पति के अत्याचार से तंग थी पत्नी : इंस्पेक्टर बीकेटी संजय कुमार सिंह के मुताबिक चांदनी ने स्वीकार किया कि पति शराब का लती था और आए दिन मारपीट करता था। इससे परेशान होकर उसने प्रेमी के साथ मिलकर उसकी हत्या की साजिश रची थी। तमंचा खरीदने के लिए उसने सात हजार रुपये भी दिए थे।

चेहरे पर नहीं था पछतावा : क्राइम ब्रांच प्रभारी शिवानंद मिश्र ने बताया कि पूछताछ में चांदनी बिल्कुल सामान्य रही। उसने पति की हत्या कराने का कोई अफसोस नहीं जताया और पुलिस को गुमराह करने की कोशिश की।

98 मामलों से संबंधित 1540 लीटर शराब का निस्तारण

अमृत विचार, गोसाईगंज: वर्ष 2022 से 2025 तक स्थानीय थाने में पंजीकृत हुए आबकारी अधिनियम के कुल 98 अभियोगों से संबंधित 1540 लीटर अवैध कच्ची देशी व अंग्रेजी शराब का मंगलवार को विनिष्टीकरण किया गया। इंस्पेक्टर गोसाईंगंज बृजेश कुमार त्रिपाठी ने बताया कि उक्त 98 अभियोगों में परीक्षण के बाद आरोप पत्र न्यायालय को प्रेषित किया जा चुका था। उक्त मामलों से संबंधित अवैध शराब थाना मालखाने में रखी थी।जिसके विनिष्टीकरण के लिए न्यायालय द्वारा आदेश पारित किये जाने के बाद एसीपी गोसाईंगंज द्वारा नियमानुसार कमेटी गठित कर मंगलवार को थाना परिसर के पिछले हिस्से में लगभग 4 लाख रुपये मूल्य की 1540 लीटर अवैध शराब का निस्तारण कर दिया गया।

महिला से छेड़छाड़, बचाने आए दंपति पर रॉड से किया हमला

अमृत विचार, लखनऊ : नगराम क्षेत्र में शराब के नशे में धुत दबंगों ने महिला से छेड़छाड़ की और विरोध करने पर दंपति पर रॉड से हमला कर घायल कर दिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।नगराम निवासी महिला 26 अक्टूबर की शाम घर के पास खड़ी थी, तभी सूरज और अनुराग उर्फ छोटई शराब के नशे में पहुंचे और गालियां देने लगे। महिला बचने के लिए पड़ोसी के घर चली गई तो दोनों वहां भी आ पहुंचे। आरोप है कि दोनों ने महिला से छेड़छाड़ की। यह देखकर पड़ोसी दंपति ने बचाने की कोशिश की तो दोनों ने रॉड से हमला कर उन्हें घायल कर दिया। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली है और आरोपियों की तलाश जारी है।

इलाज के दौरान महिला की मौत, दहेज हत्या का आरोप

संवाददाता, बख्शी का तालाब

- **पिता ने दामाद व अन्य के खिलाफ इटौंजा थाने में दी तहरीर**

अमृत विचार : इटौंजा के असनहा गांव में मंगलवार को एक विवाहिता की अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। विवाहिता के पिता ने पोस्टमार्टम व मौत की जांच कराने की मांग की। आरोप लगाया कि ससुरालवाले रुपये व सोने की चेन देने की मांग कर बेटी की पिटाई करते थे। जिससे उसकी हालत बिगड़ी और मौत हो गयी। पिता ने पति समेत अन्य के खिलाफ तहरीर दी है। इंस्पेक्टर मार्कंडेय यादव ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

हरदोई के अतरौली जाजपुर बेहड़ा निवासी राम प्रकाश ने बताया कि बेटी रचना की शादी वर्ष 2023 में असनहा गांव के रामबरन के साथ की थी। ससुराल वाले दहेज में तीन लाख रुपये व सोने की चेन की मांग करते थे। मांग पूरी न होने पर रचना को शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित कर पिटाई करते थे। बेटी के गर्भवती होने पर भी उसे दहेज के लिए पीटा गया। जिससे हालत बिगड़ गई थी।

इसके बाद उन्होंने हरदोई के निजी अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया था। जहां ऑपरेशन से दो बच्चों का जन्म हुआ था। इस दौरान रचना के एक बच्चे की मौत हो गई थी। दूसरे बच्चे की हालत खराब है। ससुराल वालों ने रचना को इलाज के लिए लखनऊ के एक निजी अस्पताल में जबरदस्ती भर्ती कराया था। इसके बाद लोहिया अस्पताल लखनऊ में इलाज के दौरान मौत हो गई। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

बारिश में मंडी में खुले में रखा धान भीग गया। ● अमृत विचार

रुक-रुक कर होती रही बारिश, सैकड़ों क्विंटल धान भीगा

अमृत विचार, हरदोई : रविवार से शुरू हुआ मौसम का बदलाव लगातार जारी है। सोमवार की रात शुरूहुई बारिश मंगलवार को भी रुक-रुक कर होती रही। बरसात में मंडियों में लगा सैकड़ों क्विंटल धान भीग गया, वहीं तमाम किसानों के खेतों पर भी धान भीग गया। बरसात से मौसम भी सर्द हो गया। 24 घंटे में 13.4 मिमी वर्षा के साथ ही चार किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से चली हवाओं ने ठंडक को बढ़ा दिया। ठंड के चलते गर्म कपड़ों में नजर आए। ग्रामीण क्षेत्रों में सुबह व शाम अलाव से लोगों ने खुद को गर्म रखा। रविवार को खराब हुआ मौसम मंगलवार को और भी खराब हो गया।

दुर्घटना में मारे गए बैंक अधिकारी बेटे व मां के शव घर पहुंचे, मचा कोहराम

संवाददाता, हरदोई

मां मनोरमा व बेटे अर्पण की फाइल फोटो।

- **कार से मुरादाबाद जाते समय सोमवार की सुबह बरेली में सड़क हादसे के हो गए थे शिकार**

अमृत विचार : मां अपने बेटे के साथ घर से निकलते हुए बोली कि 'जल्दी ही लौट आएंगे, लेकिन तब उसके परिजनों को इस बात का बिल्कुल भी अहसास न रहा होगा कि मां-बेटे अब कभी लौट कर नहीं आएंगे। बरेली में हुए सड़क हादसे में दोनों की मौत हो गई। मां-बेटे के शव जब एक साथ घर पहुंचे तो परिजनों में कोहराम मच गया।

बतातें चलें कि कोतवाली शहर के विभूति नगर निवासी अशोक कुमार पाण्डेय पुलिस में एसआई हैं और रामपुर में तैनात हैं। अशोक कुमार पाण्डेय के दो बेटों में बड़ा अमित पाण्डेय यूनियन बैंक और छोटा बेटा अर्पण पाण्डेय (25) पंजाब नेशनल बैंक मुरादाबाद में डिप्टी मैनेजर था। अर्पण पाण्डेय की पत्नी सांत्वना भी उनके साथ मुरादाबाद में साथ रहती थी, लेकिन उसकी कुछ दिन पहले ही डिलीवरी हुई है तो वह अपने मायके शाहजहांपुर में रह रही थी। पत्नी के साथ न होने से अर्पण पाण्डेय को खाना बनाने की परेशानी हो रही थी।

इस पर मां मनोरमा पाण्डेय (50) ने बेटे अर्पण पाण्डेय को घर बुलाया और बहू के आने तक खुद मुरादाबाद चलने को कहा। रविवार की देर रात मां-बेटे कार से मुरादाबाद के लिए निकले थे। सोमवार की सुबह कार बरेली जिले के टिसुआ थाना फतेहगंज पूर्वी हाईवे पर पहुंची। उसी बीच सामने से गोवंश आ गया, उसे बचाने में कार बेकाबू होकर डिवाइडर से टकरा कर दूसरी तरफ डीसीएम में जा घुसी, इस दुर्घटना में मां-बेटे गभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें हास्पिटल पहुंचाया गया, लेकिन वहां पहुंचते ही उनकी मौत हो गई। मंगलवार की भोर पहर मां-बेटे शव घर पहुंचे तो परिजनों में कोहराम मच गया। इस हादसे से क्षेत्र में भी शोक की लहर दौड़ गई। परिचितों और रिश्तेदारों के अलावा क्षेत्रीय लोगों ने घर पहुंचकर शोक संवेदनाएं व्यक्त की।

पत्नी सांत्वना को ढांढस बंधाने वाले भी बेहाल

हरदोई : अर्पण पाण्डेय की पत्नी सांत्वना अपने मां-बाप की इकलौती बेटी है। वह अपने दुधमुंहे बेटे के साथ मायके में ही थी। रात में उसकी पति से काफी देर तक बात हुई। सांत्वना ने पति को बेटे की किलकारी भी सुनाई थी। सोमवार की सुबह ठीक से आंखे भी नहीं खुल सकी थी। उसी बीच खबर आई कि उसके पति की हमेशा-हमेशा के लिए आंखे बंद हो गईं। इतना सुनते ही सांत्वना चीख कर रो पड़ी। बेटी की ऐसी हालत देख कर मां-बाप और भी बेहाल हो गए। पति की असमय मौत से बेहाल पत्नी सांत्वना को ढांढस बंधाने के लिये पहुंचने वाला भी उसका गम देखकर बेहाल हो जा रहा है।

झाड़ी शाह उर्स | **मेले में चौथे दिन आयोजित जश्न-ए-संडीला ऑल इंडिया मुशायरे का पूर्व कैबिनेट मंत्री ने किया आगाज**

मुशायरे में शायरों ने बेहतरीन कलामों से सजाई महफिल

संवाददाता, संडीला, हरदोई

अमृत विचार : नगर में चल रहे झाड़ी शाह के मेले में चौथे दिन जश्न-ए-संडीला ऑल इण्डिया मुशायरे का शानदार आयोज़न किया गया। जिसकी सदारत यासिर सिद्दीकी ने की और निज़ामत मशहूर नाजिम नदीम फर्रुख ने किया।

मुशायरे का सुबह आरम्भ पूर्व कैबिनेट मंत्री अब्दुल मन्नान ने शमा रोशन कर किया और अपने इंतिखाबी गुफ़्तगु के साथ मुशायरे के हवाले से शायरों की हौसला अफ़ज़ाई की मुशायरे में सबसे पहले नात-ए-नबी पढ़ने की जिम्मेदारी शायरा मुमताज़ नसीम को दी गई, जिसे मुमताज़ नसीम ने बखूबी निभाया। जिसके बाद मुशायरा अपने बुलंदियों की तरफ बढ़ने लगा। जिसमें मुन्ववर राणा, सतलज राहत इंदौरी ने नात शरीफ पढ़कर मुशायरे की शुरुआत की। सभी शायरों ने अपने अपने कलाम पेश किये। इंटरनेशनल शायर यासिर सिद्दीकी को सुनने के लिए हजारों की तादात में पब्लिक देर तक मौजूद रही। मुशायरा देर तक चला। मेला अध्यक्ष सूफ़ी शाहनवाज़ की सरपरस्ती में अपनी बुलंदियों को छूता रहा। मुशायरे में यासिर सिद्दीकी उई, हाशिम फ़िरोज़ाबादी, खुर्शीद हैदर, अब्बास कमर, तबरेज़ मुन्ववर राणा, सतलज राहत इंदौरी, हाशिम नोमानी, मुमताज़ नसीम, हिमांशी बाबरा, आदिल रशीद, हसनैन संदीलवी, राहुल शर्मा, रईस निज़ामी ने भी कलाम पेश किया। मुशायरे के अंत में मुशायरा में अदनान अबास, मीडिया प्रभारी पत्रकार प्रियदर्शी गुप्ता, सहायक अंसार अंसारी, कन्वींनर अमान अली ने सभी का शुक्रिया अदा कर मुशायरा मुकम्मल होने का एलान किया।

मुशायरे में कलाम पेश करते शायर।

फुटबॉल टूर्नामेंट में खिलाड़ियों ने दिखाया जोश

संडीला, हरदोई, अमृत विचार। झाड़ी शाह बाबा के वार्षिक उर्स और मेले में पहली बार फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन अखिल भारतीय क्षत्रिय कल्याण परिषद युवा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और समाजसेवी राजवर्धन सिंह राजू एडवोकेट ने किया। उन्होंने खिलादियों से मुलाकात कर उनकी खेल भावना की सराहना की। राजू ने कहा कि खेल केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि ये आपसी भाईचारे, एकता और सौहार्द को बढ़ावा देते हैं। खेलों से युवाओं में अनुशासन, टीम भावना और सकारात्मक सोच विकसित होती है। इस आयोजन में मेला कमेटी अध्यक्ष शाहनवाज़ आलम, मैनेजर अबू तालिब, शकील महमूद खां, सभासद शमीम अहमद सिद्दीकी और समाजसेवी तबस्सुम हुसैन, मिडिया प्रभारी पत्रकार प्रियदर्शी गुप्ता, अंसार अंसारी सहित दर्जनों खेलप्रेमी मौजूद रहे।

अचानक बिजली सप्लाई चालू होने से लाइनमैन झुलसा

संवाददाता, हरदोई

अमृत विचार : शट-डाउन लेने के बाद बिना परमीशन विद्युत सप्लाई चालू कर दी गई। जिससे पोल से तार जोड़ रहा लाइनमैन करंट की चपेट में आने से झुलस गया, जबकि दूसरे लाइनमैन को झटका लगा, वह बाल-बाल बच गया।

कोतवाली शहर के बगहा निवासी 30 वर्षीय लवकुश और साण्डी थाने के खुटेहना निवासी 25 वर्षीय विशाल साण्डी रोड पावर हाउस पर लाइनमैन है। मंगलवार की सुबह कोतवाली शहर के मेढ़ गांव में बिजली में गड़बड़ी होने की शिकायत पर वहां पहुंचे। शट-डाउन ले कर लाइनमैन लवकुश पोल पर तार जोड़ रहा था, जबकि दूसरा लाइनमैन विशाल पोल पकड़े था, उसी बीच अचानक सप्लाई शुरु हो गई। नतीजतन लवकुश उसमें चिपक गया, जबकि विशाल ज़ोर का झटका लगने से दूर जा गिरा।

हादसा होते ही गांव में हड़कंप मच गया। पुलिस ने दोनों को मेडिकल कालेज पहुंचाया, जहां उपचार शुरू हुआ लेकिन विभागीय लापरवाही पर पर्दा डालने के लिए अधिकारियों ने कुछ देर बाद ही दोनों को मेडिकल कॉलेज से रेफर करा दिया और निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

न्यूज ब्रीफ

वल्लभभाई पटेल की जयंती पर निकाली जाएगी पदयात्रा

ऊंचाहार (रायबरेली) : सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती पर भाजपा राष्ट्र चेतना जागृत करने के लिए शहर से गांव तक पदयात्रा समेत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करेगी। यह जानकारी मंगलवार को पार्टी के क्षेत्रीय अध्यक्ष भगवती प्रसाद रावत के नेतृत्व में हुई बैठक के बाद ओबीसी मोर्चा के प्रांतीय मंत्री अभिलाष चन्द्र कौशल ने दी। उन्होंने बताया कि 31 अक्टूबर से 25 नवंबर तक जिला स्तर पर 8 से 10 किलोमीटर की पदयात्रा निकाली जाएगी। प्रत्येक लोकसभा क्षेत्र में तीन पदयात्राएं होंगी, जिनमें सांसद स्वयं युवाओं के साथ गांव-गांव और गली-गली पहुंचेंगे। इस अभियान में एनसीसी, एनएसएस के युवा कंधे से कंधा मिलाकर शामिल रहेंगे। बैठक में राधेश्याम सोनी, गुड्डन यादव, मुन्ना सिंह चौहान, निर्मल पेड़ीवाल, मनीष कौशल आदि मौजूद थे।

बाइक चोरी के आरोप में पुलिस ने पकड़ा

बछरावां। कस्बा अंतर्गत मुख्य चौराहे पर एक निजी दुकान में सामान लेने के लिए भाजपा मंडल अध्यक्ष प्रवेश वर्मा बाइक खड़ी करके अंदर चले गए। जैसे ही वह दुकान से बाहर निकले तो दो युवक आए और उनकी बाइक में चाभी लगाकर उसे स्टार्ट कर रहे थे। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों युवकों को पकड़ लिया। उनकी पहचान विकास पुत्र मुकेश एवं सुशील पुत्र भगवती निवासीगण कुटी मोहल्ला नगर पंचायत बछरावां के रूप में हुई है। पुलिस ने गिरफ्तार कर अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुए न्यायालय के समक्ष पेश कर दिया है।

राम कथा 11 नवंबर से तैयारी शुरू

लालगंज : कस्बे के संस्कृत विद्यालय परिसर में सात दिवसीय राम कथा की तैयारी को लेकर नई बाजार स्थित एक होटल में बैठक की गई। जिसमें जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष महेश प्रसाद शर्मा ने बताया कि व्यापार के साथ साहित्य व संस्कृति की उर्वर भूमि लालगंज में 11 से 17 नवंबर तक संगीतमय रामकथा का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया अयोध्या की कथा वाचिका निशु भारद्वाज गोपी जी भक्तों को रामकथा का रसपान कराएंगी। इस मौके पर शिव प्रकाश पांडेय, डा. निरंजन राय, शंकर दीक्षित, विवेक शर्मा, उमाशंकर वाजपेयी, रौनक भदौरिया, शिव शंकर पांडेय, कमलेश यादव, सुरेश आचार्य, देवी कुमार गुप्ता, प्रतीक शर्मा, आदि मौजूद रहे।

ग्रिड ने घटाई बिजली की मांग, 1 यूनिट बंद

ऊंचाहार (रायबरेली) : बदलते मौसम के बीच उत्तरी ग्रिड ने बिजली की मांग कम कर दी है, जिसके कारण मंगलवार की सुबह एनटीपीसी की ऊंचाहार परियोजना में 210 मेगावाट क्षमता की एक यूनिट का विद्युत उत्पादन बंद कर दिया गया है। ज्ञात हो तो विगत दो दिनों से उत्तर भारत के कई राज्यों में मौसम बदला हुआ है। कहीं तेज तो कहीं हल्की बारिश हुई है। जिसका असर बिजली की मांग पर पड़ा है। ग्रिड को नियंत्रित करने वाली नॉर्दन रीजन लोड डिस्पैच सेंटर ने बिजली की मांग कम कर दी है। इस कारण ने एनटीपीसी की ऊंचाहार परियोजना में 210 मेगावाट क्षमता वाली यूनिट संख्या दो को बंद करने का निर्णय लिया और इस यूनिट को मंगलवार की सुबह 9 बजकर 45 मिनट पर बंद कर दिया गया। यही नहीं अन्य यूनिटों को भी काफी कम भार पर चलाया जा रहा है। एनटीपीसी के जनसंपर्क अधिकारी ऋषभ शर्मा ने बताया कि मांग कम होने के कारण दो नंबर यूनिट को रिजर्व शट डाउन में रखा गया है।

पेट्रोल पंप पर गाली-गलौज व पैसे नहीं देने वाले पांच पर कार्रवाई

संवाददाता, रायबरेली

अमृत विचार। गाड़ी में पेट्रोल डलवाकर बिना पैसे दिये गाली गलौज कर भाग जाने वाले पांच आरोपियों को पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया है।

पीड़ित रितेश कुमार (प्रोपराइटर) पुत्र केशरीनाथ निवासी मेसर्स इंजीनियर्स फिलिंग स्टेशन बेतौरा थाना डीह रायबरेली ने प्रार्थना पत्र देकर बताया कि दिनांक 26 अक्टूबर को शैलेन्द्र यादव पुत्र केतार यादव निवासी पूरे रतीभान मजरे बेतौरा थाना डीह व दो अन्य लोग अज्ञात बिना नम्बर पलेट की ऑल्टो कार से पेट्रोल पम्प पर आएं और सेल्समैन सुशील कुमार यादव निवासी ग्राम सादीपुर कोटवा पूरे अहिरन से 1500 रुपये का पेट्रोल अपनी ऑल्टो कार तथा एक मोटरसाइकिल में 200 रुपये का डलवाया। इसके बाद सेल्समैन को पैसा दिये बिना गाली-गलौज करते हुए भाग गये। डीह पुलिस ने आरोपी शैलेन्द्र यादव पुत्र केदार नाथ के साथ पीयूष यादव पुत्र राजेश कुमार निवासी वार्ड न. 03 गांधीनगर, वीरेन्द्र कुमार यादव पुत्र मोतीलाल निवासी ग्राम मछुआरी मजरे पिण्डारी, विनोद यादव पुत्र स्व. रामबहादुर, अखिलेश यादव पुत्र स्व.कमलेश कुमार फुरसतगंज जनपद अमेठी को गिरफ्तार कर विधिक कार्रवाई की है।

लिंब सेंटर में बनेगा एचआरएफ का सेंट्रल ड्रग स्टोर

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- वुडन हॉल में स्टोर बनाने की शुरू हुई कवायद, जानकारों ने कहा नियम विरुद्ध

अमृत विचार : केजीएमयू के लिंब सेंटर में हॉस्पिटल रिवॉल्विंग फंड (एचआरएफ) का सेंट्रल ड्रग स्टोर बनाया जाएगा। इसकी कवायद शुरू कर दी गई है। सर्वे आदि का काम भी पूरा करा लिया गया है। अधिकारियों का कहना है कि लिंब सेंटर के वुडन हॉल को भी स्टोर में तब्दील किया जाएगा। जानकारों ने वुडन हॉल को बदलने को नियम विरुद्ध बताया है।

मरीजों को 70 से 80 प्रतिशत कम कीमत पर दवाएं मुहैया कराने के लिए एचआरएफ के मेडिकल स्टोर खोले गए हैं।

मौजूदा समय में केजीएमयू में 22 स्टोर का संचालन हो रहा है। करीब 25 से 30 करोड़ रुपये की दवाएं व इम्प्लांट आदि स्टोर में रखा जाता है। अभी सेंट्रल ड्रग स्टोर अटल बिहारी वाजपेई सांइटिफिक कन्वेंशन सेंटर में है। वहां से सेंट्रल स्टोर हटाने के निर्देश हैं। इसके बाद स्टोर को शिफ्ट करने की योजना है। इसको लेकर बैठक भी हो चुकी है। जिसमें स्टोर को लिंब सेंटर में शिफ्ट करने की योजना है।

यहां प्रशिक्षित दिव्यांगों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जीते गोल्ड मेडल

- वर्ष 1973, वर्ष 1977 व वर्ष 1994 के बर्लिन, टोक्यो इत्यादि में संपन्न हुए पैरा ओलंपिक खेलों में बैडमिंटन, टेबल टेनिस, व्हील चेयर रेस तथा एम्पुटेट दौड़ में बनवारी, शाकिर अली, मोहन लाल ने दिव्यांग श्रेणी में तीन गोल्ड मेडल जीत कर भारत का नाम रौशन किया था। इस हॉल में दिव्यागों को प्रशिक्षण दिया जाता था। इस हाल की विशेषता ये है कि इसके निर्माण में कोई भी कील नहीं लगाई गई थी। उसका कारण ये था कि पैरापलेजिया मरीजों जिनकी चुभने का अहसास नहीं होता है उनको ट्रेनिंग के वक्त कोई कील इत्यादि न चुभे। अब इस हाल का इस्तेमाल बदलने की कवायद चल रही है, जो कि नियमानुसार सही नहीं है। शासनादेश में भी स्पष्ट लिखा गया है कि केंद्र का उपयोग केवल दिव्यांग जन के कृत्रिम अंग और दिव्यांगजनों संबंधित कार्यों के लिए ही किया जाएगा। इस मामले कोई लेकर केजीएमयू प्रशासन का कोई जिम्मेदार बोलने को तैयार नहीं।

1971 में खास तरह की लकड़ी से बनाया गया था वुडन हाल

- लिंब सेंटर में डीपीएमआर विभाग का संचालन हो रहा है। जिसमें दिव्यांगजनों का इलाज व कृत्रिम अंग बनाए जाते हैं। सेंटर में वुडन हाल है। वर्ष 1971 में बंगलादेश से लड़ाई के समय तत्कालीन केंद्र सरकार ने एक करोड़ रुपये से लिंब सेंटर निर्माण के लिए दिए थे। लिंब सेंटर में खास तरह की लकड़ी से हॉल का निर्माण हुआ था। उस वक्त और वर्तमान में इतना बड़ा और उपयोगी वुडन हाल पूरे भारत के किसी भी दिव्यांगजन संस्थान में नहीं है। इसका उपयोग दिव्यांगजनों को बैडमिंटन, टेबल टेनिस, व्हील चेयर रेस की ट्रेनिंग देने के लिए था।

शारदा नहर में फेंकी लाखों की सरकारी दवाएं

विभाग बना अंजान: शीशियों पर नॉट फॉर सेल की लगी मुहर, सीएमओ ने जानकारी नहीं होने की कही बात

संवाददाता, रायबरेली

दवा की शीशी दिखाता ग्रामीण।

मोहम्मदपुर कुचरिया स्थित शारदा नहर किनारे पड़ी सरकारी दवाओं की शीशियां।

अमृत विचार। स्वास्थ्य महकमे में रोगियों के लिए भेजी जाने वाली दवाएं कुएं, नहर तो कभी झाड़ियों में फेंक दी जाती हैं। ऐसा ही एक मामला भदोखर थाना क्षेत्र में सामने आया है, जहां पर शारदा नहर में फेंकी गई जीवन रक्षक दवाएं प्रदेश सरकार की क्षवि को धूमिल करने का प्रयास किया गया है। कीचड़ से सनी भारी तादाद में दवा की शीशियां सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही है। शारदा नहर में फेंकी गई दवाओं के मामले में त्वरित कार्रवाई करने के बजाय स्वस्थ्य महकमा पूरी तरह से खामोश व अंजान है।

दरअसल यह मामला भदोखर थाना क्षेत्र के मोहम्मदपुर कुचरिया के पास स्थित शारदा नहर में पड़ी सरकारी दवाओं का है। मंगलवार को शारदा नहर में पड़ी कीचड़ से सनी दवाओं की शीशियों का वीडियो तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। पूर्व में महराजगंज क्षेत्र में कुएं से भारी संख्या में दवाएं मिलीं थीं। विभागीय कार्य में व्यस्त रहने का हवाला देने वाले सीएमओ को छोड़कर पूरे प्रदेश में दवा फेंके जाने का वीडियो वायरल होने की खबर है, किन्तु स्वास्थ्य महकमा पूरी तरह से मौन है। शायद यही कारण है कि इसके पूर्व में भी कई बार इस तरह की ओछी व घटिया हरकतें करने में लोग सफल होते आ रहे हैं। मामला संज्ञान में आने के बाद न सिर्फ जांच होने का ढिंढोरा पीटा जाता है, बल्कि कागजी खनापूर्ति करके मामले को रद्दी की टोकरी में डाल दिया जाता रहा है।

पुराने मामले जांच के बहाने ठंडे बस्ते में: जिले में अब तक हुए इस तरह के कई मामलों में न तो विभागीय जांच में कोई पकड़ा जा चुका है और न ही इसमें कोई दिलचस्पी ही लिया गया। विभाग की लचर कार्यशैली व निरंकुशता के कारण अधिकांश बार सरकारी दवाओं के फेंके जाने की खबरें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं। लाखों रुपए की फेंकी गई यह दवाएं ऐसे तमाम रोगों से संबंधित हैं जो रोगों से लड़ने और जीवन दान देने में काफी सहायक होती हैं। हालांकि वायरल वीडियो में नजर आ रही दवा की शीशियों पर अंकित दवाओं के नाम स्पष्ट नहीं हो सके।

> सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे किसी भी तरह की दवाओं के फेंके जाने की जानकारी नहीं है। मामले की जानकारी होने पर इसकी जांच कराकर संबंधितों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।
>
> -डॉ. नवीन चंद्रा, सीएमओ, रायबरेली।

कानून तोड़ने वालों पर पीटीओ ने चलाया चाबुक, 12 वाहन सीज

संवाददाता, रायबरेली

- बिना फिटनेश के दौड़ रहे वाहन पर ठोंका एक लाख का जुर्माना

ओवरलोड वाहन मिलने पर कार्रवाई करतीं पीटीओ रेहाना बानो। अमृत विचार

अमृत विचार। एआरटीओ प्रशासन अरविंद कुमार यादव के निर्देश पर तेज तर्रार व ईमानदार पीटीओ रेहाना बानो ने नियमों का उल्लंघन व कानून तोड़ने वालों को सबक सिखाना और तेज कर दिया है। निष्पक्ष व पारदर्शी तरीके से पीटीओ रेहाना बानो जिस तरह से सड़क पर ओवरलोड वाहन लेकर दौड़ रहे चालकों पर कार्रवाई का चाबुक चलाती हैं, वहीं दूसरी ओर नियमों को तोड़ने कर रफ्तार से वाहन चलाने पर होने वाली दुर्घटनाओं से उन्हें जान बचाने के लिए प्रेरित भी करती हैं। ऐसी कार्रवाई के दौरान जब उनका सामना ढीठ और मनबढ़ जैसे चालकों से होता है तो वह बड़ी सामंजस्य के साथ उन्हें भविष्य में ऐसा न करने और अपने परिवार तथा बच्चों के प्रति सजग होने के लिए प्रेरित किया।

मंगलवार को सदर, जगतपुर व अन्य जगहों पर पीटीओ रेहाना बानो ने वाहन चेकिंग अभियान चलाया। चेकिंग के दौरान उन्हें जगतपुर में एक पिकअप व डंफर ओवरलोड सड़क पर फर्राटा भरते नजर आए। जिसे रुकवा कर उन्होंने पिकअप के कागज देखे। इसके अलावा ओवरलोड वाहन तथा डंफर में फिटनेस बीमा व प्रदूषण न होना पाया गया। लापरवाही व मनमाने तरीके से सड़क पर फर्राटा भर रहे इन दोनों वाहनों को पीटीओ रेहाना बानो ने सीज कर जगतपुर थाना पुलिस के सुपुर्द कर दिया।

उन्होंने बताया कि चेकिंग के दौरान बिना फिटनेश के एक ऐसा वाहन पकड़ा गया है जो साल भर से सड़क पर दौड़ रहा था। जिसे एक लाख का जुर्माना लगा कर सीज किया गया है। इसके अलावा सदर समेत दो दिन में बिना फिटनेश व अपूर्ण कागज के दौड़ रहे 12 वाहनों को सीज किया गया है। इसके अलावा शेष वाहनों में छिटपुट खामियां मिलने पर चालान कर उन्हें छोड़ दिया गया है।

बाइक सवार को टक्कर मार कंटेनर पलटा

संवाददाता, हरदोई

सड़क किनारे पलटा पड़ा कंटेनर। ● अमृत विचार

अमृत विचार। बिलग्राम से राजघाट रोड पर तेज़ रफ्तार कंटेनर बाइक सवार को टक्कर मारते हुए सड़क पर पलट गया, मंगलवार को हुए हादसे से घंटो रास्ता रुका रहा, इधर-उधर से गाड़ियों के पहिए थमें रहे। खबर लिखे जाने तक पुलिस कंटेनर को रास्ते से हटाने में जुटी हुई थी।

बताया गया है कि माधौगंज थाने के बघियारी निवासी सत्यम शर्मा पुत्र मनोज शर्मा मंगलवार को बाइक से बिलग्राम से राजघाट रोड पर मल्लावां कोतवाली के तेरवा कुल्ली के पास से गुज़र रहा था, उसी बीच तेज़ रफ्तार कंटेनर ने उसे टक्कर मारी और बेकाबू होते हुए वहीं सड़क पर पलट गया। कंटेनर का ड्राइवर भाग निकला। बाइक सवार सत्यम को उठा कर इलाज के लिए ले जाया गया। कंटेनर क पलटने से उधर का रास्ता ठप हो गया, गाड़ियों के पहिए घंटों थमें रहे। खबर लिखे जाने तक पुलिस उसे वहां से हटाने में जुटी हुई थी।

तेज रफ्तार वाहन की चपेट में आए बाइक सवार की मौत

हरदोई, माधौगंज, अमृत विचार। बघौली चौराहा से खाद खरीदने पहुंचा बाइक सवार किसान से अपनी ससुराल जा रहा था। उसी बीच माधौगंज-बघौली रोड पर पहुंतेरा तिराहे पर तेज़ रफ्तार गाड़ी ने टक्कर मार दी। बाइक सवार बुरी तरह ज़ख्मी हो गया, उसे सीएचसी पहुंचाया गया, जहां मौत हो गई। बघौली थाने के बरवापुरवा निवासी 35 वर्षीय संजय कुमार पुत्र पूरन खेती-बाड़ी करता था, उसके परिवार में पत्नी रेखा के अलावा तीन बेटे गुंजन, दिवाकर और सुधाकर है। मंगलवार की दोपहर संजय खाद खरीदने के लिए बाइक से बघौली चौराहा पहुंचा, जहां से वह अपनी ससुराल चोखेपुरवा की तरफ चल पड़ा। माधौगंज-बघौली रोड पर पहुंतेरा तिराहे के पास गाड़ी ने उसे टक्कर मार दी। उसे सीएचसी माधौगंज पहुंचाया गया, लेकिन वहां पहुंचते ही मौत हो गई।

प्रधान पर गाली गलौज व धमकाने का आरोप

महराजगंज (रायबरेली)। सदर तहसील के ग्राम पहरा खेड़ा मजरे जोहवाशर्की में बंजर भूमि पर पर वर्तमान ग्राम प्रधान शिवलाल द्वारा अपने भाई के व्यक्तिगत उपयोग के लिए अवैध निर्माण कराने का मामला सामने आया है। मामले में गांव के अनुप कुमार त्रिपाठी ने क्षेत्राधिकारी महराजगंज से लिखित शिकायत कर कार्रवाई की मांग की है।

मंगलवार को महराजगंज क्षेत्राधिकारी कार्यालय पहुंच कर शिकायतकर्ता अनुप कुमार त्रिपाठी ने बताया कि वह ग्रामसभा जोहवाशर्की के मूल निवासी हैं। बीते 17 अक्टूबर से वर्तमान प्रधान शिवलाल द्वारा अपने पद का दुरुपयोग करते हुए उक्त बंजर भूमि पर अवैधानिक तरीके से निर्माण करा रहे हैं। निर्माण रोके जाने की सूचना पर पहुंचे हल्का लेखपाल की उपस्थिति में प्रधान व शिकायतकर्ता दोनों के द्वारा उक्त भूमि पर पट्टे के कागजात होने की बात पर ग्राम प्रधान शिवलाल आग बबूला हो गए। और शिकायतकर्ता को धमकाते हुए कहा कि "यहीं गड्ढा खोदकर ज़िन्दा गाड़ देंगे। कहो तो अभी गाड़ दें।" इसके अलावा, प्रधान पर उनके साथ अभद्रता करने और जातिसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए गालियाँ देने का भी आरोप है।गौरतलब है कि इसका वीडियो भी वायरल हुआ था। वहीं क्षेत्राधिकारी प्रदीप कुमार ने बताया कि प्रकरण में शिकायती पत्र मिला है जांच कराकर कार्यवाही की जाएगी।

दिल्ली में राहुल गांधी से मिलकर बहन की शादी का दिया आमंत्रण

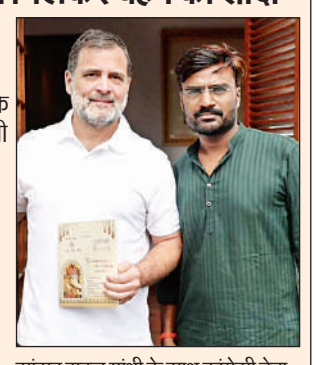

सांसद राहुल गांधी के साथ कांग्रेसी नेता प्रिंसू वैश्य। अमृत विचार

संवाददाता, महराजगंज (रायबरेली), अमृत विचार। कस्बे के युवा कांग्रेसी नेता प्रिंशू वैश्य ने दिल्ली स्थित उनके आवास पर पहुंचकर जिले के सांसद और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने अपनी बहन की शादी का निमंत्रण दिया और रायबरेली जिले की वर्तमान राजनीतिक स्थिति पर विस्तृत चर्चा की।बताया जाता है कि पूर्व उत्तर प्रदेश युवक कांग्रेस सोशल मीडिया प्रदेश संयोजक प्रिन्सू वैश्य ने राहुल गांधी से उनके दिल्ली आवास पर शिष्टाचार भेंट की। मुलाकात के दौरान उन्होंने कांग्रेस के दिलों की धड़कन माने जाने वाले श्री गांधी को अपनी बहन की शादी में शामिल होने के लिए आमंत्रण पत्र सौंपा। उस दौरान राहुल गांधी ने युवा कांग्रेस नेता प्रिन्सू वैश्य से लगभग 15 मिनट तक बातचीत की। इस बातचीत में उन्होंने न केवल उनकी बहन की शादी के लिए शुभकामनाएं दीं, बल्कि उनका कुशल-क्षेम पूछा। युवा नेता प्रिन्सू वैश्य की नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी से यह मुलाकात राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बनी हुई है।

सांसद खेल स्पर्धा प्रतियोगिता में कराएं पंजीयन

लालगंज, रायबरेली। सांसद खेल स्पर्धा प्रतियोगिता का आयोजन एक नवंबर से होने जा रहा है। यह जानकारी देते हुए खंड विकास अधिकारी गगनदीप सिंह ने बताया कि सभी आयु वर्ग के इच्छुक खिलाड़ी ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कर प्रतियोगिता में शामिल हो सकते हैं। खेल प्रतियोगिता में एथलेटिक्स (दौड़, कूद, गोला, चक्का फेंक आदि), योगासन, भारोत्तोलन, जूडो, खो-खो, कुश्ती, कबड्डी, क्रिकेट, वॉलीबॉल, बैडमिंटन, फुटबॉल समेत विभिन्न खेल शामिल हैं। उन्होंने बताया कि एक नवंबर से न्याय पंचायत स्तर पर ट्रायल प्रस्तावित हैं। इसलिए युवा अतिशीघ्र अपना पंजीयन अवश्य करवा लें।

मंदिर में चोरी के मामले में आरोपी गिरफ्तार

हरदोई, अमृत विचार। संतोषी माता मंदिर में घुसा चोर वहां से कीमती धातु की संतोषी माता व दुर्गा मां की मूर्तियों के अलावा सिंहासन, घंटे, शिवलिंग और पूजा पात्र चोरी कर फरार हो गया था। कासिमपुर पुलिस ने मामला दर्ज करते ही पुलिस टीम-6 ने चोर को गिरफ्तार उसके पास से माल बरामद कर लिया। कासिमपुर थाने के कासिमपुर में प्राचीन संतोषी माता मंदिर है। पुलिस ने मामले की छानबीन करते हुए सन्नो पत्नी प्रभुदयाल की तहरीर पर अगले ही दिन वहीं के मुरारी के खिलाफ मामला दर्ज किया था। मंगलवार को पुलिस ने आरोपी को दबोच लिया।

वृद्ध की हार्टअटैक से हुई थी मौत

संवाददाता, उन्नाव

प्रसव के बाद महिला की बिगड़ी हालत, मौत

अमृत विचार, उन्नाव : स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में प्रसव के बाद महिला की हालत बिगड़ गई। चिकित्सकों ने उसे जिला अस्पताल रेफर किया। जिला अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही प्रसूता की मौत हो गई। प्रसूता की मौत से परिवार में कोहराम मच गया। बता दें कि नगर के मोहल्ला पुरबिया टोला निवासी सुल्तान की 26 वर्षीय पत्नी जरीना उर्फ आफरीन को मंगलवार को प्रसव पीड़ा हुई। परिजन उसे सरकारी अस्पताल लाए। यहां उसने एक बच्ची को जन्म दिया।

अमृत विचार। बांगरमऊ कोतवाली क्षेत्र में देरशाम सड़क किनारे पड़े मिले वृद्ध के शव का पुलिस ने पोस्टमार्टम कराया। जिसमें उसकी हार्टअटैक से मौत होने की पुष्टि हुई। वहीं बेटे ने सड़क हादसे में मौत होने का संदेह जताया था।

बता दें कि बांगरमऊ कोतवाली क्षेत्र के सेतुवाही गांव निवासी रामनारायण (60) पुत्र स्व. विजई लंबे समय से श्वास संबंधी बीमारी से पीड़ित था। उसका कानपुर के एक चेस्ट अस्पताल व जीएसवीएम कालेज से इलाज चल रहा था। बेटे सूरज ने बताया कि पिता सोमवार सुबह कानपुर के बिल्हौर रेलवे स्टेशन से ट्रेन पकड़कर कानपुर डॉक्टर को दिखाने गए थे। लेकिन शाम को वापस नहीं लौटे। तभी उसे जानकारी हुई कि बांगरमऊ- बिल्हौर मार्ग पर जगत नगर पेट्रोल पंप के पास वह सड़क किनारे पड़े हैं। इस पर एंबुलेंस से उन्हें सीएचसी लाया गया। जहां डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। बेटे के अनुसार, उसे लोगों ने बताया था कि वाहन की टक्कर से पिता की मौत हुई है। पुलिस को जांच में जाहिरा चोट नहीं मिली। इस पर शव मोर्चरी भेजा गया था। मंगलवार को हुए पोस्टमार्टम में हार्टअटैक से मौत होने की बात सामने आई है। उसकी मौत से पत्नी शिवकली, बेटे सूरज व अमन बेहाल हैं।

दो माह से नहीं है सचिव की तैनाती, विकास प्रभावित

संवाददाता, सरेनी (रायबरेली)

अमृत विचार। ज़िले के सरेनी ब्लॉक के अंतर्गत भोजपुर ग्राम पंचायत में लगभग दो महीने से पंचायत सचिव नहीं है, जिससे गांव का विकास कार्य प्रभावित हो रहा है। अफसरों की उदासीनता से ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त है।

भोजपुर ग्राम पंचायत के अंतर्गत तीन राजस्व गांव के साथ साथ 15 हज़ार की आबादी है। ग्रामीणों का कहना है कि पंचायत सचिव न होने से से जन्म प्रमाण पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, परिवार रजिस्टर समेत अन्य विकास कार्य बाधित हैं। पंचायत सहायक और प्रधान से ग्राम सचिवालय में बात करने पर पता चलता है कि पंचायत सचिव छुट्टी पर हैं। इतने लंबे समय से छुट्टी में होने से ग्रामीणों में रोष व्याप्त है। विकास कार्य भी बाधित हैं। गांव के अनुज तिवारी, शनि कुमार, जागेश्वर इदरीस ख़ान, सलीम ख़ान, शुभम सिंह, धीरू सिंह, राजन गुप्ता, साहिल गुप्ता, कमल यादव, श्रीकांत शर्मा, मनोज तिवारी, मन्टू तिवारी आज का कहना है कि पंचायत सचिव नहीं होने से काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सूचना के बावजूद जिम्मेदार उचित कदम नहीं उठा रहे हैं। परेशान ग्रामीणों ने जल्द पंचायत सचिव की तैनाती किए जाने की मांग जिलाधिकारी से की है।

सखी | सीएम डैशबोर्ड की बैठक में बिगड़ी रैंकिंग पर जिलाधिकारी ने जताई नाराजगी, सुधार लाने के दिए कड़े निर्देश

डीएम ने डीपीआरओ और एक्सईएन जल निगम से मांगा स्पष्टीकरण

संवाददाता, रायबरेली

सीएम डैशबोर्ड की बैठक में जानकारी लेतीं डीएम हर्षिता माथुर। अमृत विचार

अमृत विचार। सीएम डैशबोर्ड में जिले की खराब रैंकिंग पर जिलाधिकारी ने कड़ा रुख अपनाया है। लापरवाही जिला पंचायत राज अधिकारी और जल निगम एक्सईन से स्पष्टीकरण मांगा है। साथ ही अन्य अधिकारियों को सुधार लाने के कड़े निर्देश दिए हैं।

सरकार की जन उपयोगी योजनाओं की मॉनिटरिंग सीएम डैशबोर्ड के माध्यम से की जाती है। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने मंगलवार को बचत भवन सभागार में समस्त विभागीय अधिकारियों के साथ सीएम डैशबोर्ड की समीक्षा बैठक की। बैठक में उन्होंने प्रदेश के अन्य जनपदों के साथ रायबरेली जनपद की तुलनात्मक समीक्षा की। जिलाधिकारी ने कहा कि जनपद को जो भी लक्ष्य दिए गए है उसके अनुसार कार्य करते हुए कार्य में तेजी लाए। बैठक में डीएम ने राजस्व,

सेतू निर्माण, फेमिली आईडी, ज़ीरो पॉवर्टी, कृषि, स्वास्थ्य, विद्युत, सड़क, मिड डे मील आदि की गहनता से समीक्षा करते हुए निर्देश दिया कि सभी कार्य समयबद्ध होना चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जिन विभागों की रैंकिंग ठीक नहीं रही उन्हें चेतावनी देते हुए कहा कि अपने कार्यों में सुधार लाये अन्यथा कठोर कार्रवाई के लिए तैयार रहें। उन्होंने डीपीआरओ और अधिशासी अभियंता शहरी जल निगम के कार्यों की समीक्षा करते हुए कार्यो में लापरवाही बरतने पर स्पष्टीकरण जारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जनता की समस्याओं की जो भी शिकायत अधिकारियों के पास आती हैं, उसका समयान्तर्गत निस्तारण करें।

जिलाधिकारी ने कहा कि अधिकारी सीएम डैशबोर्ड पर अपने विभाग की रैंकिंग में सुधार लाये। इस मौके पर सीडीओ अंजू लता, एडीएम (वि/रा) अमृता सिंह, एडीएम (प्रशासन) सिद्धार्थ, परियोजना निदेशक डीआरडीए सतीश प्रसाद मिश्रा आदि लोग उपस्थित रहे।

डीएम से जर्जर सड़कों की मरम्मत कराने की मांग

लालगंज, रायबरेली, अमृत विचार। क्षेत्र के बन्ना मऊ निवासी शिव प्रताप सिंह पुत्र राज नारायण सिंह ने डीएम को दिए शिकायती पत्र में कहा है कि गांव की सड़के पूरी तरह से जर्जर हो गई हैं जिससे लोगों का आना-जाना दूभर हो गया है। उसका कहना है कि गांव के रामचंद्र मिशन आश्रम के साइड वाली काली का पुरवा को जाने वाली सड़क पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई है। वही ठकुराइन खेड़ा से पूरे बछऊ मार्ग भी ध्वस्त है। स्कूली बच्चों सहित ग्रामीणों को आने-जाने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। पीड़ित ने जिलाधिकारी से सड़क की मरम्मत कराने की मांग की है।

न्यूज ब्रीफ

सपा जिलाध्यक्ष की संपत्ति की गई कुर्क

कुंडा, प्रतापगढ़ : एसडीएम कुंडा वाचस्पति सिंह एवं कुंडा पुलिस ने मंगलवार को समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव की पत्नी प्रियंका यादव के नाम से प्रयागराज के नेहरू नगर में स्थित मकान को कुर्क किया। इस मकान की कीमत करीब 1 करोड़ 25 लाख रुपये है। छविनाथ वर्तमान में जेल में बंद हैं। उन पर गैंगस्टर एक्ट के तहत यह कार्रवाई की जा रही है। थाना मानिकपुर में पंजीकृत गैंगस्टर अधिनियम के तहत जिला मजिस्ट्रेट के आदेश पर उपजिलाधिकारी के नेतृत्व में संपत्ति को कुर्क किया गया।

महिला हैंडबाल के लिए 7 खिलाड़ी चयनित

सुलतानपुर। प्रदेश स्तरीय सीनियर महिला हैंडबॉल प्रतियोगिता 31 अक्टूबर से 3 नवंबर, लखनऊ के लिए जिले की सात खिलाड़ियों का चयन किया गया है। इसमें श्वेता दुबे, साक्षी गौतम, दिवांशी, साक्षी, हेमन, यशू और खुशी शामिल है। वहीं, राज्य स्तरीय सीनियर पुरुष फुटबॉल प्रतियोगिता 30 अक्टूबर से 4 नवंबर, कानपुर के लिए अवधेश यादव और एस. सिंह चुने गए हैं।

स्तन कैंसर का इलाज संभव, समय पर जांच से बच सकती जान : डॉ. अंकिता

जागरूकता: रोहिलखंड कैंसर इंस्टीट्यूट और अमृत विचार ने शुरू किया तीन दिवसीय नारी कैंसर सुरक्षा अभियान

कार्यालय संवाददाता, बरेली

विद्या वर्ल्ड स्कूल में स्तन कैंसर जागरूकता कार्यक्रम में मौजूद बच्चे। अमृत विचार

विद्या वर्ल्ड स्कूल में स्तन कैंसर जागरूकता कार्यक्रम में बोलते अमृत विचार के सीओओ पार्थो कुनार।

विद्या वर्ल्ड स्कूल में बच्चों को स्तन कैंसर के बारे में बतातीं डॉ. अंकिता पांडेय।

अमृत विचार : स्तन कैंसर अब लाइलाज नहीं रहा, बल्कि समय पर जांच और उचित उपचार से 80 प्रतिशत मरीज पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। यह कहना है रोहिलखंड कैंसर इंस्टीट्यूट की असिस्टेंट प्रोफेसर डा. अंकिता पांडेय का। उन्होंने बताया कि छात्राओं को अपने स्तन में कहीं पर भी गांठ महसूस हो, तो वह भी तुरंत अपने शहर के ऑन्कोलॉजिस्ट से मिलें। तभी सही इलाज हो सकेगा।

रोहिलखंड कैंसर इंस्टीट्यूट और अमृत विचार के संयुक्त तत्वावधान में ब्रेस्ट कैंसर जागरूकता माह के तहत तीन दिवसीय नारी कैंसर सुरक्षा अभियान मंगलवार को शुरू हुआ। पहले दिन शहर के विद्या वर्ल्ड पब्लिक स्कूल, राधा माधव पब्लिक स्कूल और केसीएमएटी में छात्राओं को स्तन कैंसर की खुद से पहचान और इससे बचाव के टिप्स दिए गए।

- विद्या वर्ल्ड पब्लिक स्कूल, राधा माधव पब्लिक स्कूल और केसीएमएटी में हुआ कार्यक्रम
- असिस्टेंट प्रोफेसर डा. अंकिता पांडेय ने छात्राओं को स्तन कैंसर को लेकर किया जागरूक
- कार्यक्रम में छात्राओं को स्तन कैंसर की खुद से पहचान करने और इससे बचाव के दिए टिप्स

विद्या वर्ल्ड स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में डा. अंकिता पांडेय ने छात्राओं को प्रारंभिक अवस्था में ब्रेस्ट कैंसर की जांच का महत्व बताया और इससे बचाव की जानकारी दी। छात्राओं से कहा कि स्कूलों में कार्यक्रम करने का हमारा मकसद केवल युवा उम्र से ही इस बीमारी की रोकथाम को लेकर जागरूक करना है। कहा स्तन में गांठ, निप्पल से रक्त स्राव और निप्पल या स्तन के आकार में असामान्य बदलाव की स्थिति को कैंसर के जोखिम के तौर पर जाना जाता है। इसका इलाज कैंसर की स्टेज पर निर्भर करता है। स्तन में पनपी 80 प्रतिशत गांठें सामान्य होती हैं, लेकिन इनकी अनदेखी नहीं करनी चाहिए। शर्म और झिझक छोड़कर जांच करानी चाहिए। शुरुआती अवस्था में बीमारी का पता चलने पर आसानी से इलाज संभव है।

उन्होंने कहा कि कैंसर को लेकर परिवार समेत अपने परिचितों को जागरूक करना जरूरी है। डा. अंकिता ने कहा कि खराब जीवनशैली और फास्ट फूड भी कैंसर की बड़ी वजह बन रहा है। अमृत विचार के सीओओ पार्थो कुनार ने कहा कि कैंसर के टॉपिक पर किसी स्कूल में कोई बात नहीं होती, जबकि कैंसर के मामले में देश में तेजी से बढ़ रहे हैं। अमृत विचार ने यह पहल स्तन कैंसर की समय पर जांच, प्रारंभिक पहचान और उपचार के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए शुरू की है। छात्राओं से अपील की है कि वह मोबाइल से दूरी बनाएं। दिनचर्या में सुबह उठते ही अखबार पढ़ने का समय निर्धारित करें। स्वस्थ रहने के लिए खानपान का विशेष ध्यान रखें और कार्यक्रम में कैंसर को लेकर मिली जानकारी से घर-परिवार और परिचितों को जागरूक करें। प्रधानाचार्य संयोगिता चौधरी ने कहा कि अमृत विचार ने कैंसर जागरूकता कार्यक्रम कराने की अच्छी पहल की है, सभी का आभार। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य योहान कुंवर और स्कूल की 200 छात्राएं मौजूद रहीं।

वजन बढ़ने न पाए

वजन बढ़ना कई प्रकार की शारीरिक स्वास्थ्य जोखिमों का कारण माना जाता है। स्तन कैंसर का जोखिम भी उनमें से एक है। फैट टिशू की मात्रा अधिक होने के कारण एस्ट्रोजन हार्मोन का स्तर बढ़ने का खतरा रहता है। इसके कारण स्तन कैंसर विकसित होने का जोखिम हो सकता है। इसके अलावा अधिक वजन वाली महिलाओं में इंसुलिन का स्तर भी असंतुलित रहता है, जिससे डायबिटीज का खतरा हो सकता है।

महिलाएं ही नहीं, पुरुषों में भी तेजी से बढ़ रहा स्तन कैंसर

डॉ. अंकिता पांडेय ने कहा कि ब्रेस्ट कैंसर पर जब भी बात हुई है, तो हमेशा महिलाओं का ही जिक्र आता है। महिलाओं में होने वाले इस आम कैंसर (ब्रेस्ट कैंसर) को लेकर आपको जानकर हैरानी होगी कि यह अब सिर्फ महिलाओं तक सीमित नहीं है बल्कि पुरुषों में भी इसने अपने पैर तेजी से पसारने शुरू कर दिए हैं। उन्होंने बताया कि पुरुषों को ब्रेस्ट में अगर बदलाव नजर आए तो उन्हें अनदेखा न करें। ब्रेस्ट में गांठ महसूस हो या निप्पल से किसी भी तरह का डिस्चार्ज हो तो तुरंत कैंसर स्पेशलिस्ट से मिलें और जांच कराएं। रेडिएशन के एक्सपोजर से कैंसर होने की आशंका बढ़ती है। शरीर में एस्ट्रोजन लेवल बढ़ने और बहुत ज्यादा शराब पीने से भी पुरुषों में कैंसर की संभावना बढ़ सकती है। शराब पीने से एस्ट्रोजन का स्तर बढ़ सकता है। एस्ट्रोजन सामान्य और कैंसरग्रस्त दोनों स्तन कोशिकाओं को बढ़ने में मदद करता है, जिससे कैंसर फैल जाता है। यही नहीं अगर परिवार में कैंसर का इतिहास रहा है तो महिलाओं की तरह पुरुषों को भी सजग रहना चाहिए।

पैराशूट के कपड़े से बना 11 किलो का ध्वज फहराएंगे मोदी

मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष बोले- सेना के अधिकारियों के सुझाव पर ट्रस्ट करेगा अमल

अयोध्या कार्यालय

राम मंदिर परिसर में चल रही तैयारी।

अमृत विचार : राम मंदिर में 25 नवंबर को पैराशूट कपड़े से बना 11 किलो का ध्वज पीएम मोदी द्वारा फहराया जाएगा। सेना के जवान इसकी डोर खीचेंगे। मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र ने मंगलवार को बताया कि राम मंदिर ट्रस्ट सेना के एक्सपर्ट अधिकारियों के साथ समन्वय कर ध्वजारोहण के कार्यक्रम को क्रियान्वित किया जाएगा। ध्वज पर कोबेदार वृक्ष प्रदर्शित किया जाएगा। इसके साथ भगवान सूर्य का संकेत होगा।

उन्होंने कहा कि राम मंदिर के शिखर पर ध्वज लगाया जाना एक बड़ी चुनौती है। क्योंकि वह एक ऊंचाई पर जाएगा। शिखर पर आइकोनोग्राफी का कार्य किया गया। इसलिए पताका के साथ जाने वाला दंड 11 फिट का है और ध्वज की चौड़ाई 22 फिट है। इसलिए सेना के द्वारा शिखर पर ध्वज चढ़ाई जाने का रिहर्सल किया है। कहा कि 15 अगस्त और 26 जनवरी के साथ-साथ आर्मी में बहुत सारे दिवस होते हैं। अधिकारियों और जवानों को ध्वजारोहण का बेहतर अनुभव है। इसलिए इनसे अनुरोध किया गया था। जिस पर अधिकारियों ने महत्वपूर्ण सुझाव भी दिये हैं, जिस पर ट्रस्ट अमल करेगा, क्योंकि राम मंदिर का ध्वज पूरे विश्व की निगाह में होगा। उन्होंने बताया कि ध्वज 11 किलो का है, जिसे पैराशूट के कपड़ों से तैयार किया जाएगा, क्योंकि ये बहुत ही मजबूत कपड़ा होता है। सेना के अधिकारी कपड़े का वजन और उसकी गुणवत्ता को लेकर दो दिन में अपनी रिपोर्ट देंगे।

- ध्वज पर प्रदर्शित किया जाएगा कोबेदार वृक्ष, भगवान सूर्य का होगा संकेत

ध्वजारोहण पर अयोध्या में भीड़ आने की संभावना

अयोध्या, अमृत विचार : श्री राम मंदिर में 25 नवंबर को ध्वजारोहण कार्यक्रम के बाद एक बार फिर प्राण प्रतिष्ठा की तरह श्रद्धालुओं की भीड़ आने की संभावना है। इस दौरान जिला प्रशासन महाकुंभ की तर्ज पर भीड़ नियंत्रण की व्यवस्था को लागू करने की तैयारी कर रहा है। मंडलायुक्त राजेश कुमार ने मंगलवार को बताया कि प्रधानमंत्री का दौरा 25 नवंबर को प्रस्तावित है। उसी के अनुसार सभी व्यवस्थाएं की जाएंगी। श्रीराम मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने वाले आमंत्रित अतिथियों की रूपरेखा मंदिर प्रशासन से तय की जा रही है। पूरे कार्यक्रम को लेकर श्री राम मंदिर ट्रस्ट और जिला प्रशासन समन्वय के साथ कार्य कर रहा है। इस दौरान श्रद्धालुओं को कम से कम दिक्कतों का सामना करना पड़े। इसके आधार पर पूरी व्यवस्था बनाई जा रही है। कहा कि आने वाले सभी श्रद्धालु चाहेंगे कि कार्यक्रम के बाद उन्हें आसानी से दर्शन मिल सके। इसलिए भीड़ नियंत्रण और यातायात व्यवस्था की रूपरेखा पहले से तैयार की जा रही है। इसे लोगों के बीच शेयर किया जाएगा। जिससे लोगों को जानकारी हो और आने वालों के साथ स्थानीय लोगों को कोई समस्या न हो। कमिश्नर ने कहा कि महाकुंभ एक अलग तरीके का आयोजन था। जिसमें देश-विदेश के लोग आए थे। भीड़ की जो संभावना थी उससे भी अधिक लोग पहुंच गए थे। यहां भीड़ के मद्देनजर व्यवस्था को लेकर अयोध्या ही नहीं आसपास के जिलों से भी समन्वय बनाकर यातायात व्यवस्था की गई थी, इसी तर्ज पर 25 नवंबर के कार्यक्रम को लेकर भी तैयारी की जा रही है। अच्छी व्यवस्था की जाएगी।

आमंत्रित लोग ही करेंगे रामलला के दर्शन

राम मंदिर में होने वाले ध्वजारोहण कार्यक्रम के दौरान श्रद्धालुओं को मंदिर में दर्शन नहीं प्राप्त हो सकेंगे। अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्रा ने बताया कि 25 नवंबर को लगभग 8000 लोग आमंत्रित किए जा रहे हैं। आमंत्रित लोग ही रामलला के दर्शन कर सकेंगे, इसकी व्यवस्था की जा रही है। अगले दिन से श्रद्धालु दर्शन करेंगे। उन्होंने बताया कि आयोजन के बाद श्रद्धालु मंदिर परिसर के सभी स्थान के दर्शन कर सकें, इसके लिए ट्रस्ट विचार कर रहा है। पूरा प्रयास है कि यह मंदिर श्रद्धालुओं के लिए ही बनाया गया है। इसलिए दिसंबर के अंत तक सभी मंदिर और वाटिका खुला जाए। कहा कि कुबेर टीला और प्रथम तल पर रामदरबार के दर्शन लिये सीमित संख्या में ही श्रद्धालु जा सकेंगे। ट्रस्ट इस बात से अवगत है कि कार्य को पूरा कर श्रद्धालुओं को वहां पर लाया जा सके। कहा कि अब मंदिर के निर्माण का कार्य पूर्ण होने की और हैं। परकोटे के कॉरिडोर का निर्माण लगभग पूरा हो चुका है जिसमें न्यूरल लगाए जाने का कार्य किया जा रहा है यह कार्य 5 नवंबर तक संपन्न हो जाएगा।

सूचना

सूचित हो कि मेरे मेरे चाचा राम नेवाज पुत्र बालादीन आज से लगभग 40–45 वर्ष पूर्व में लापता हो गये है। उस समय उनकी उम्र 35 वर्ष थी। मेरे चाचा राम नेवाज पुत्र बालादीन की पहले व बाद में मैंने व मेरे पिता राम पदारथ पुत्र बालादीन ने काफी खोजबीन की, किंतु उनका पता नहीं लग सका है। **लालता प्रसाद पुत्र राम पदारथ नि0ग्रा0 पो0 सरेनी, वि0ख0 रोहनियां, तह0 ऊँचाहार, जनपद रायबरेली।**

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि एक किता आवासीय भवन संख्या–170 नगर निगम सं0 1/917 रकबा 550 वर्गफिट स्थित–ग्राम जियामऊ, तहसील व जिला–लखनऊ का मूल विक्रय विलेख जो श्रीपाल द्वारा श्रीमती विमला यादव के पक्ष में निष्पादित है जो कार्यालय उपनिबंधक प्रथम लखनऊ में बही 1 जिल्द 3768 पृष्ठ 185–194 क्रमांक 5854 पर दिनांकित 23.06.1997 को पंजीकृत है जो कि वर्तमान स्वामिनी श्रीमती विमला यादव द्वारा दिनांक 10.10.2025 को शाम 7 बजे से 8 बजे के बीच चिनहट में कहीं खो गया है जो बहुत खोजने पर भी नहीं मिला इसका किसी भी व्यक्ति/संस्था द्वारा प्रयोग पूर्णतः गैरकानूनी व शून्य होगा। उपरोक्त सम्पत्ति अजीत कुमार यादव द्वारा क्रय किया जा रहा है जो कि पी0एन0बी0 हाउसिंग फाइनेन्स लि0 (रोशनी) लखनऊ से लोन के सापेक्ष बन्धक की जायेगी। यदि किसी भी व्यक्ति/संस्था को उपरोक्त विक्रय विलेख प्राप्त हआ हो अथवा इस संदर्भ में कोई आपत्ति या हित है तो साक्ष्य व दस्तावेजो के साथ इस सूचना के प्रकाशन से 7 दिन के अन्दर अधोहस्ताक्षरी से संम्पर्क करे।
श्री अमित कुमार सिंह राठौर, अधिवक्ता, पता–चेम्बर 7, यू0जी0एफ0, कृष्णा टावर, चकबस्त रोड, कैसरबाग, लखनऊ। ई–मेल advoffice04@gmail.com, मो0–9559811119

तालाब में डूबे भतीजे को बचाने गई बुआ भी डूबी, दोनों की मौत

रवि।

राधा। (फाइल फोटो)

करनैलगंज, अमृत विचार : कटरा बाजार के ग्राम पंचायत सेल्हरी मंडप के मजरे सूबेदार पुरवा में मंगलवार दोपहर उस समय कोहराम मच गया, जब तालाब में डूब रहे भतीजे को बचाने गई बुआ भी डूब गई। दोनों को ग्रामीणों ने किसी तरह बाहर निकाला और सीएचसी करनैलगंज ले जाया गया, जहां इलाज के अभाव में दोनों की मौत हो गई।

परिजनों का आरोप है कि अस्पताल में डेढ़ घंटे तक शव स्ट्रेचर पर पड़े रहे, लेकिन कोई डॉक्टर देखने नहीं आया। मृतकों की पहचान राधा (15) पुत्री भगौती प्रसाद और रवि (10) पुत्र दिनेश के रूप में हुई है। बताया गया कि रवि तालाब में कमल का फूल निकालने गया था, तभी गहराई में फंस गया। उसे बचाने दौड़ी राधा भी डूब गई। परिजनों ने चिकित्सकों पर गंभीर लापरवाही का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि दोनों की सांसें चल रही थीं, मगर कोई डॉक्टर इलाज के लिए नहीं आया। अस्पताल के अधिकतर डॉक्टर नदारद रहे। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। कोतवाल तेज प्रताप सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

कानपुर: किसान की हत्या में दो सुपारी किलर गिरफ्तार

कानपुर, अमृत विचार। सुपारी लेकर औरैया के किसान की हत्या करने वाले दो आरोपियों को स्वरूपनगर पुलिस ने गिरफ्तार कर आलाकत्ल चाकू बरामद किया है। डीसीपी सेंट्रल श्रवण कुमार सिंह ने बताया किसान के दामाद ने ही पांच लाख रुपये में हत्या की सुपारी दी थी। जिसे पुलिस पहले ही जेल भेज चुकी है। हत्यारोपियों के फरार तीसरे साथी की तलाश की जा रही है।

मूलरूप से औरैया के बहादुरपुर सहार निवासी किसान राजकुमार सिंह राजावत की पत्नी अनीता देवी चेस्ट इंफेक्शन से पीड़ित हैं। अनीता के इलाज के लिए राजकुमार ने करीब दो माह पूर्व उन्हें मुरारी लाल चेस्ट हॉस्पिटल में भर्ती कराया था। देखरेख के लिए राजकुमार भी उनके साथ रह रहे थे। परिवार में बेटी नम्रता और बेटा विशाल हैं। डीसीपी सेंट्रल ने बताया कि 10 दिन पहले राजकुमार की जेके कैंसर परिसर में चाकू से गोदकर हत्या की गई थी। जांच के दौरान संदेह होने पर नम्रता के पति बिधूना रतनपुर बंथरा निवासी मोहित तोमर को पूछताछ के लिए पकड़ा गया तो उसने पूरी वारदात कबूली। उसने बताया कि 11 साल पहले उसकी शादी नम्रता से हुई थी। बाद में पता चला कि पत्नी के तीन लोगों से प्रेम संबंध हैं। जब विरोध किया तो आएदिन विवाद होने लगा। उसने ससुर राजकुमार से शिकायत की तो उल्टा उसे ही जेल भिजवाने की धमकी दी। इसके बाद उसने हत्या की योजना बनाई। और बिधूना के बंथरा निवासी रिषभ उर्फ बाबू सिंह और कन्हैया कुमार को पांच लाख में सुपारी दी।

नूर मोहम्मद इण्टर कालेज
जैदपुर–बाराबंकी

सूचना

विद्यालय नूर मोहम्मद इण्टर कालेज जैदपुर–बाराबंकी की प्रबन्ध समिति का चुनाव दिनांक 09.11.2025 को प्रस्तावित है। साधारण सभा के सम्मानित सदस्यों को अवगत कराना है कि प्रबन्ध समिति के चुनाव हेतु अपने आवेदन दिनांक 09.11.2025 को करना सुनिश्चित करें। **प्रबन्धक**

डीडी मंडी, बीएसए सहित चार अफसरों को कारण बताओ नोटिस

अयोध्या, अमृत विचार : मुख्य विकास अधिकारी कृष्ण कुमार सिंह वे सीएम डैशबोर्ड के फ्लैगशिप प्रोजेक्टों की सितंबर की रैंकिंग के आधार पर विकास एवं निर्माण कार्यों की मंगलवार को समीक्षा की। कहा कि खराब रैंकिंग वाले विभाग इसमें सुधार लाएं। बैठक में अनुपस्थित उपनिदेशक मंडी निर्माण, बेसिक शिक्षा अधिकारी व दुग्ध विभाग के अधिकारी कारण बताओ नोटिस जारी करने का निर्देश दिया। कलेक्ट्रेट में आयोजित समीक्षा बैठक में सीडीओ ने कहा जो निर्माण कार्य पूर्ण हो चुके हैं उनको शीघ्र हैंडोवर कराएं। पीएम सूर्य घर–मुफ्त बिजली योजना एवं ग्राम्य विकास विभाग के एनआरएलएम आरएफ़ सीआईएफ़ को रैंकिंग में सुधार का निर्देश दिया।

मांगा ब्यौरा | राजभवन का पढ़ाई से रोजगार पर फोकस, नैक को लेकर भी जोर

अवध विवि से मांगे 5 साल के रिकॉर्ड

अयोध्या कार्यालय।

अमृत विचार : राज्यपाल व कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल के निर्देश पर राजभवन ने डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय प्रशासन से पांच वर्षों (2020-2025) के विस्तृत रिकॉर्ड तलब किये हैं। इस जांच का फोकस छात्रों के पास प्रतिशत, रोजगार के अवसरों तथा विभिन्न विभागों की शैक्षणिक व प्रशासनिक स्थिति पर है। विश्वविद्यालय परिसर में इस आदेश से खलबली है।

> राजभवन से मांगा गया रिकॉर्ड तैयार कराया जा रहा है। सभी विभाग इस पर लगे हुए हैं। मूल रूप से रोजगार प्राप्त छात्रों को संकलित किया जा रहा है। –आरएन पांडेय, मीडिया प्रभारी, अवध विश्वविद्यालय।

राजभवन के विशेष कार्याधिकारी डॉ. पंकज एल जानी की अगुवाई में एक टीम ने पिछले सप्ताह विश्वविद्यालय का दौरा किया और कौटिल्य प्रशासनिक भवन में समीक्षा बैठक आयोजित की। बैठक में कुलपति कर्नल डॉ. बिजेंद्र सिंह सहित वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। राज्यपाल ने स्पष्ट निर्देश दिए कि रिकॉर्ड में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर पास हुए छात्रों की संख्या, उनके प्लेसमेंट रेट तथा विभागीय प्रदर्शन जैसे कला, विज्ञान, वाणिज्य, कृषि एवं फार्मेसी का डेटा शामिल हो। विश्वविद्यालय के आधिकारिक दस्तावेजों के अनुसार, वर्तमान में यहां करीब पांच लाख छात्र-छात्राएं पंजीकृत हैं, जिनमें से अधिकांश ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी पृष्ठभूमि से हैं।

यह कदम उच्च शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने की राज्यपाल की प्राथमिकता से जुड़ा है। पांच वर्षों में अवध विश्वविद्यालय ने कई उपलब्धियां हासिल की हैं, जैसे 30वां दीक्षांत समारोह (अक्टूबर 2025) में 25 लाख से अधिक योग शपथों के साथ गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाना। फिर भी, राजभवन की समीक्षा में विकास परियोजनाओं जैसे 24 घंटे बिजली आपूर्ति, तालाब निर्माण एवं नैक ग्रेडिंग पर जोर दिया गया। राज्यपाल ने 13 अक्टूबर को हुए विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में कहा था कि इसे प्रदेश का सर्वश्रेष्ठ संस्थान बनाना है।

कार्यालय ग्राम पंचायत हरदीटीकर विकास खण्ड–जगतपुर, रायबरेली

पत्रांक: मेमो/ग्रा0पं0/2025–26 दिनांक: 27.10.2025

टेण्डर नोटिस

राज्यवित्त/चौदहवां वित्त/मनरेगा योजनान्तर्गत ग्राम पंचायत की वर्ष 2025–26 की कार्ययोजना मे स्वीकृत निम्नांकित कार्य सम्पादित करानें हेतु निम्नांकित सामग्री आपूर्ति करनें हेतु इच्छुक आपूर्तिकर्ताओं से सीलबन्द टेण्डर आमंत्रित किये जाते हैं जो दिनांक 03/11/2025 को सांय 3: 00 बजे अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में प्राप्त किये जायेंगे तथा उसी दिन सांय 4:00 बजे अधोहस्ताक्षरी अथवा अधिकृत प्रतिनिधि द्वारा टेण्डरदाता अथवा उसके प्रतिनिधि के समक्ष खाले जायेंगे। किसी भी टेण्डर को बिना कारण बतायें निरस्त करनें का अधोहस्ताक्षरी को अधिकार होगा। इच्छुक आपूर्तिकर्ता/टेण्डरदाता को टेण्डर डालने हेतु धरोहर धनराशि नकद/चेक के रूप में ग्राम पंचायत में जमा करनी होगी जिसकी रसीद टेण्डर के साथ जमा करनी होगी। टेण्डर फार्म नोटिस निर्गत होने की तिथि से टेण्डर प्राप्त करने की तिथि के एक दिन पूर्व तक किसी भी कार्य दिवस में अधोहस्ताक्षरी कार्यालय से 100/–रू0 नकद जमा कर अपरान्ह 2:00 बजे से 4:00 बजे के मध्य प्राप्त किये जा सकेंगे।

क्र0 सं0	सामग्री का विवरण	मात्रा	आपूर्ति हेतु अवधि	धरोहर धनराशि	आपूर्ति स्थल/ कार्य का नाम
1	80 MM जिकजैक इण्टरलॉकिंग ईट	3800	7	–	इण्टरलॉकिंग रोड से आकाश घर के पास इ0ला0 रोड तक इ0ला0 कार्य
2	80 MM जिकजैक इण्टरलॉकिंग ईट	6000	7	–	देशराज घर के पास से हुकुचन्द्र घर के पास तक इ0ला0 कार्य

प्रतिबंध/निर्देश– 1. सामग्री की आपूर्ति कार्यस्थल पर करनी होगी अर्थात कोटेशन में कोट की गयी दर एफ0ओ0आर0 होगी अर्थात लदायी उतराई, चट्टा लगवाई एवं भाडा आदि चार्ज उसमें सम्मिलित होंगे। 2. बिल का भुगतान नियमानुसार आयकर की कटौती करके किया जायेगा। 3. सामग्री की आपूर्ति कार्य प्रभारी को कार्यस्थल पर प्राप्त करानी होगी।

हरिश्चन्द्र – ग्राम प्रधान **श्रेया श्रीवास्तव – ग्राम विकास अधिकारी**

ग्राम पंचायत हरदीटीकर विकास खण्ड–जगतपुर, रायबरेली

उत्तर रेलवे

खुली निविदा सूचना (ई-निविदा)

भारत के राष्ट्रपति की ओर से मंडल रेल प्रबंधक (इंजीनियरिंग), उत्तर रेलवे, लखनऊ द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु ई–निविदा प्रणाली द्वारा जिसकी अंतिम निविदा तिथि दिनांक **19.11.2025** को **15.00 बजे** तक आमंत्रित की जाती है। इस निविदा के मैनुयल आफर स्वीकार नहीं किये जायेगें यदि कोई मैनुवल आफर आता है तो उस पर विचार नहीं किया जायेगा।

1	निविदा सूचना संख्या	01102025 dated 27.10.2025
2	निविदा संख्या : 22-Sr.DEN-IV-LKO-2025-26	
3	कार्य का नाम : वरि. मण्डल इंजीनियर–चतुर्थ–लखनऊ के अधिकार क्षेत्र में सहायक मण्डल इंजीनियर–प्रथम/सुलतानपुर और सहायक मण्डल इंजीनियर–द्वितीय/सुलतानपुर के तहत के अंतर्गत लेवल क्रॉसिंग के इंटरलॉकिंग के संबंध में एलसी संख्या 12/सी, 26/सी, 30/सी, 80/सी, 90/सी, 101/एसी, 167/सी, 175/सी, 184/सी और 186/सी (कुल = 10) पर एसएंडटी बिल्डिंग का प्रावधान।	
4	अनुमानित लागत : रु. 1,06,11,502.56	
5	धरोहर राशि : रु. 2,03,100.00	
6	कार्य की समापन अवधि : स्वीकृत पत्र जारी करने की तिथि से बारह माह।	
7	निविदा डालने की प्रारंभ तिथि : 05.11.2025	
8	निविदा बंद होने की तिथि एवं समय : 19.11.2025 at 15:00 hrs.	
9	वेबसाईट : www.ireps.gov.in	

नोट:- निविदा संबंधी अन्य विस्तृत विवरण उक्त वेबसाईट पर उपलब्ध है। **3339/2025**

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

पूर्वोत्तर रेलवे

ई–टेन्डरिंग निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिये मंडल रेल प्रबंधक (इंजी.)/वाराणसी निम्नलिखित कार्य हेतु आनलाईन (ई-टेन्डरिंग) के माध्यम से "खुली निविदा" आमंत्रित करते हैं:–
क्रम सं.-1, कार्य का नामः भटनी–गोरखपुर छावनी अनुभाग मे सी.टी.आर. (9.7 कि०मी०) तथा टी०आर०आर० (37.20 कि०मी०)। ई– निविदा सूचना सं.: एनईआर-बीएसबी-2025-109, अनुमानित लागत (रू०में): ₹ 4,97,02,580/-, अमानत राशि (बिड सिक्यूरिटी) (रू०में): ₹ 3,98,500/-, निविदा बन्द होने की तिथिः 25-11-2025, स्वीकृत पत्र जारी होने के समय से कार्य समापन/अवधि की तिथिः 09 माह। **क्रम सं.-2,** कार्य का नामः चौरीचौराः–नये टावर वैगन शेड का प्रावधान। ई–निविदा सूचना सं.: एनईआर-बीएसबी-2025-110, अनुमानित लागत (रू०में): ₹ 2,26,49,406/-, अमानत राशि (बिड सिक्यूरिटी) (रू०में): ₹ 2,63,300/-, निविदा बन्द होने की तिथिः 25-11-2025, स्वीकृत पत्र जारी होने के समय से कार्य समापन/अवधि की तिथिः 12 माह। **क्रम सं.-3,** कार्य का नामः जीरादेई–मैरवा अनुभाग में बन्द समपार संख्या 101 कि०मी० 402/10–14 पर लिमिटेड हाईट सब–वे (एलएचएसडब्लू) का प्रावधान (एक अदद) ई–निविदा सूचना सं.: एनईआर-बीएसबी-2025-111, अनुमानित लागत (रू०में): ₹ 7,28,00,551/-, अमानत राशि (बिड सिक्यूरिटी) (रू०में): ₹ 5,14,000/-, निविदा बन्द होने की तिथिः 25-11-2025, स्वीकृत पत्र जारी होने के समय से कार्य समापन/अवधि की तिथिः 12 माह।
• निविदा सूचना संख्या एनईआर-बीएसबी-2025-109 से एनईआर-बीएसबी-2025-111 दिनांक 25-11-2025 को 14:30 बजे तक आनलाईन जमा कर सकेगे। • पूर्ण विवरण एवं निविदा को प्रस्तुति करने के लिये भारतीय रेल के वेबसाइट *www.ireps.gov.in* पर देखें। • यदि निविदा सूचना में हिन्दी एवं अंग्रेजी में अंतर होता है तो निविदा सूचना में अंग्रेजी संस्करण ही मान्य होगा।
मण्डल रेल प्रबन्धक (इन्जी.), वाराणसी
मुजाधि/डब्लू-312

गाड़ियों की छतों व पावदान पर कदापि यात्रा न करें।

अमृत विचार क्लासीफाइड

विज्ञापन हेतु अमृत विचार कार्यालय में सम्पर्क करें

सूचना

अपना नाम महताब हुसैन MAHTAB HUSAIN DOB 1/1/1998 से बदलकर महताब हुसैन MAHTAAB HUSSAIN DOB 12/6/1998 पुत्र हिसामुद्दीन रख लिया है अतः भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जावे। निवासी वाजिदपुर पोस्ट दारी चौरा तहसील उतरौला जनपद बलरामपुर

वर्गीकृत विज्ञापन हेतु अमृत विचार अखबार के कार्यालय में सम्पर्क करें

सूचना

मैं **कुलदीप कुमार पुत्र राम चन्द्र निवासी लखनापुर, ब्लाक सरेनी, जिला रायबरेली** का निवासी हूं। मेरे पासपोर्ट में कुलदीप अंकित है, जबकि आधार संख्या 585323651620 में मेरा नाम कुलदीप कुमार दर्ज है। दोनों ही नाम मेरे हैं। मुझे दोनों ही नामों से जाना–पहचाना व माना जाए।

सूचना

सूचित हो कि पहले मेरा नाम SHAKTIMAN था से बदलकर SHAKTIMAAN रख लिया है। अब मुझे SHAKTIMAAN के नाम से जाना व पहचाना जाये। S/0-RAM PHER ADD-VISHUNPUR KHARAHNA DIST-BALRAMPUR-271307(U.P.)

सूचना

सूचित हो कि पहले मेरा नाम MOHAMAMD ILIYAS था से बदलकर MOHAMMED ILIYAS रख लिया है। अब मुझे MOHAMMED ILIYAS के नाम से जाना व पहचाना जाये। S/0-KASIM ALI ADD-C-69 RAJAJIPURAM AVAS VIKAS COLONY DIST-LUCKNOW-226017(U.P.)

सूचना

मैंने अपना नाम मोहम्मद शहाब से बदल कर मोहम्मद शहाब वसी पुत्र श्री हाजी मोहम्मद वसी रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाए। **मोहम्मद शहाब वसी पुत्र श्री हाजी मोहम्मद वसी, निवासी– 542/013/1230, नई हैदरगंज, चौक, थाना– बाजारखाला, लखनऊ**

सूचना

मेरा नाम आधार कार्ड में गलती से अस्पाक अन्सारी लिखा है सही नाम अशफाक अंसारी Ashfaq Ansari है मेरी जन्मतिथि 01/01/1988 है **अशफाक अंसारी पुत्र रफीउल्लाह निवासी– नयागगर पोस्ट बूधीपुर रेहराबाजार, बलरामपुर**

सूचना

मैने अपना नाम मातबर प्रसाद यादव से बदलकर मातवर प्रसाद रख लिया है। अब मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। **मातवर प्रसाद पुत्र श्री लाल जी पता–चतुरी पिपरहवा जोगा गांव व पो0–शंकरपुर श्रावस्ती उ0प्र0**

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं अरुण कुमार, पुत्र स्वर्गीय विजय बहादुर मिश्रा, निवासी ग्राम व पोस्ट बघईपुर, थाना अछल्दा का आधार कार्ड संख्या 6720 4320 5394 में मेरा नाम रमाकांत मिश्रा पुत्र स्वर्गीय विजय बहादुर मिश्रा अंकित है। जबकि मेरे समस्त शैक्षिक अभिलेखों में मेरा सही नाम अरुण कुमार पुत्र स्वर्गीय विजय बहादुर मिश्रा है। अतः भविष्य में मुझे अरुण कुमार पुत्र स्वर्गीय विजय बहादुर मिश्रा नाम से ही जाना व पहचाना जाए। **अरुण कुमार पुत्र स्वर्गीय विजय बहादुर मिश्रा पता– ग्राम व पोस्ट बघईपुर, थाना अछल्दा, तहसील बिधूना, जनपद औरैया**

सूचना

मेरी बैंक पासबुक जिसका खाता सं0 53060100001585 में मेरा नाम JANKI अकिंत है। जबकि आधार कार्ड सं0–578024667124 में JANAKA अंकित हैं। यह कि दोनों नाम एक ही यह महिला के है अतः मेरा सही नाम JANAKA है एवं अभिलेखों में अंकित किया जाये। **जनाका पत्नी रतन निषाद निवासी, 3ए संजय पुरम मौनी घाट नवाबगंज, कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश 208002,**

ब्रीफ न्यूज

अमित खरे होंगे संसद टीवी के सीईओ

नई दिल्ली। सेवानिवृत्त नौकरशाह अमित खरे उपराष्ट्रपति के सचिव के रूप में सेवाएं देने के अलावा संसद टीवी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) के रूप में भी काम करेंगे। खरे संसद टीवी के सीईओ के रूप में लोकसभा महासचिव उत्पल कुमार सिंह की जगह लेंगे। संसद टीवी की ओर से जारी अधिसूचना में कहा गया है कि संसद टीवी की शासी परिषद ने फैसला किया है कि भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के सेवानिवृत्त अधिकारी अमित खरे, जो वर्तमान में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति के सचिव के पद पर कार्यरत हैं, अपने मौजूदा दायित्वों के अलावा, तत्काल प्रभाव से और अगले आदेश तक संसद टीवी के सीईओ के कार्यों का भी निर्वहन करेंगे।

महाराष्ट्र में रेत नीति को लागू करने के निर्देश

नागपुर। महाराष्ट्र सरकार ने निर्माण कार्यों में प्राकृतिक नदी रेत के विकल्प के रूप में विनिर्मित रेत (एम-सैंड) के उपयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नयी नीति की घोषणा की है जिसका इसका मकसद रेत की सतत आपूर्ति सुनिश्चित करना, अवैध खनन पर रोक लगाना और पर्यावरणीय क्षरण को कम करना है।

उपराष्ट्रपति की सुरक्षा में सेंध, दो हिरासत में

कोयंबटूर। उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन के कोयंबटूर दौरे से पहले उनकी सुरक्षा व्यवस्था में सेंध लगाने के आरोप में दो लोगों को हिरासत में लिया गया है। पुलिस ने मंगलवार को यह जानकारी दी। दोनों आरोपी दोपहिया वाहन से बिग बाजार स्ट्रीट के अवरोधक वाले हिस्से से गुजरे थे, जिसके बाद ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों ने उनका पीछा किया और उन्हें पकड़ लिया। एक अधिकारी ने कहा कि उन्हें हिरासत में लिया गया है और जांच जारी है।

ईरान में फिरौती के लिए बंधक चार वापस लौटे

गांधीनगर। ऑस्ट्रेलिया जाते समय ईरान में बंधक बनाए गए चार लोग मंगलवार को सुरक्षित घर लौट आए। इन लोगों में गुजरात के गांधीनगर जिले का एक दंपति भी शामिल है। गांधीनगर के पुलिस अधीक्षक रवि तेजा वासमसेट्टी ने कहा कि जिले के मनसा तालुका के अंतर्गत आने वाले बापूपुरा गांव के निवासी चारों लोग दिल्ली के रास्ते घर लौट आए। मनसा से भाजपा विधायक जयंती पटेल ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को लिखे पत्र में कहा था कि पीड़ितों का ईरान की राजधानी तेहरान में उस समय अपहरण कर लिया गया था जब वे हवाई अड्डे से टैक्सी में होटल जा रहे थे।

तेजस्वी प्रण : हर परिवार में सरकारी नौकरी, वक्फ कानून पर रोक का वादा

महागठबंधन ने जारी किया घोषणापत्र, कहा- पुरानी पेंशन स्कीम भी बहाल करेंगे

बिहार विस चुनाव

पटना, एजेंसी

महागठबंधन ने मंगलवार को बिहार विधानसभा चुनाव के लिए 'तेजस्वी प्रण' नाम से अपना संयुक्त घोषणापत्र जारी किया, जिसमें वादा किया गया कि उसकी सरकार बनने के 20 दिन के भीतर एक विधेयक लाकर हर परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी।

महागठबंधन ने इसके अलावा संसद द्वारा पारित वक्फ संशोधन अधिनियम पर बिहार में रोक लगाने, पुरानी पेंशन योजना बहाल करने, केंद्र सरकार द्वारा तैयार नई शिक्षा नीति के 'दुष्प्रभावों' की समीक्षा करने, आरक्षण की सीमा 50 प्रतिशत से अधिक बढ़ाने के लिए विधानसभा द्वारा पारित कानून को संविधान की नौवीं अनुसूची में शामिल करने की केंद्र सरकार से अनुशंसा करने तथा कई अन्य वादे किए हैं। विपक्षी गठबंधन की तरफ से राजद नेता तेजस्वी यादव, कांग्रेस नेता पवन खेड़ा, विकासशील इंसान पार्टी के नेता मुकेश सहनी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) लिबरेशन के महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य और कई अन्य नेताओं की मौजूदगी में चुनावी घोषणा पत्र जारी किया गया।

पटना में चुनावी घोषणा पत्र जारी करते तेजस्वी यादव और महागठबंधन के नेता।

शराबबंदी कानून से ताड़ी और महुआ को बाहर करेंगे

पटना। महागठबंधन ने घोषणापत्र में वादा किया है कि बिहार में लागू शराबबंदी कानून की समीक्षा की जाएगी और सुसंगत नीति बनाई जाएगी। इस कानून के तहत जेल में बंद दलितों और अन्य गरीबों को तत्काल राहत दी जाएगी। महागठबंधन ने यह भी कहा कि ताड़ी और महुआ आधारित पारंपरिक रोजगार को शराबबंदी कानून से मुक्त किया जाएगा। इस चुनावी राज्य में बिहार मद्यनिषेध और उत्पाद अधिनियम एक अप्रैल 2016 को लागू हुआ था। नीतीश कुमार द्वारा नवंबर 2015 के विधानसभा चुनाव में महागठबंधन की तरफ से इस कानून का वादा किया गया था।

तेजस्वी ने कहा, हमने जनता के सामने हमेशा अपना 'विजन' रखा है और आज 'संकल्प पत्र' बिहार के सामने रख रहे हैं। हमने प्रण लिया है कि बिहार को नंबर-एक बनाएंगे। आरोप लगाया कि भाजपा के लोगों और भ्रष्ट अधिकारियों ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को पुतला बनाकर रखा है। वह नीतीश कुमार के प्रति पूरी सहानुभूति रखते हैं।

महागठबंधन ने घोषणापत्र में वादा किया है कि सरकार बनने के 20 दिन के भीतर ही बिहार के हर परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने के लिए विधेयक लाया जाएगा तथा 20 महीने की रूपरेखा के कार्यान्वयन पर काम शुरू हो जाएगा। यह वादा भी किया है कि सरकार पांच साल के कार्यकाल में सवा करोड़ रोजगार का सृजन करेगी। विपक्षी गठबंधन का कहना है कि अगर सरकार बनी तो एसीएटी, पिछड़े भूमिहीन लोगों को शहरी क्षेत्र में तीन डिसमिल तथा ग्रामीण क्षेत्र में पांच डिसमिल आवासीय भूमि उपलब्ध कराई जाएगी।

मानसिक स्वास्थ्य देखभाल के कानून के क्रियान्वयन पर एनएचआरसी रखेगा नजर

नई दिल्ली, एजेंसी

सुप्रीम कोर्ट ने मानसिक बीमारियों से ग्रस्त व्यक्तियों के अधिकारों और आवश्यकताओं की सुरक्षा के लिए 2017 के एक कानून के क्रियान्वयन के लिए दायर जनहित याचिका मंगलवार को राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) को हस्तांतरित कर दी और उसे मामले की निगरानी करने को कहा।

न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति आर महादेवन की पीठ ने कहा कि आयोग को अधिवक्ता गौरव कुमार बंसल की 2018 में दायर याचिका पर गौर करना चाहिए। कोर्ट ने केंद्र के हलफनामे पर गौर किया और कहा कि मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम, 2017 को लागू करने के लिए वैधानिक प्राधिकरण गठित किए गए हैं। उसने यह भी कहा कि याचिकाकर्ता ने कई अन्य मांग भी की हैं। इनकी निगरानी भी एनएचआरसी करेगा। सुप्रीम कोर्ट ने तीन जनवरी, 2019 को केंद्र, सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को उस याचिका पर नोटिस जारी किया था जिसमें दावा किया गया था कि अधिनियम के प्रावधानों को लागू न करना नागरिकों के जीवन और स्वतंत्रता का घोर उल्लंघन है।

- सुप्रीम कोर्ट ने याचिका को राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को भेजा

याचिका में किया गया था बदायूं की दरगाह का जिक्र

जनहित याचिका में कहा गया है कि मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम 2017 के प्रावधानों का उल्लंघन करते हुए यूपी के बदायूं में बड़े सरकार की दरगाह के मानसिक आश्रय स्थल में मानसिक बीमारियों से ग्रस्त व्यक्तियों को जंजीरों से बांध दिया गया है। अदालत ने ऐसे रोगियों की तस्वीरों पर गौर किया और इसे बहुत चिंता का विषय बताया था।

गलत तरह से गिरफ्तारी और कैद रखने के लिए मुआवजे की याचिका पर होगी सुप्रीम सुनवाई

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट बलात्कार और हत्या के एक मामले में बरी किए जाने से पहले 12 साल तक जेल में रहे एक व्यक्ति की उस याचिका पर सुनवाई के लिए सहमत हो गया जिसमें उसकी गलत तरीके से गिरफ्तारी, अभियोजन और दोषसिद्धि के लिए मुआवजे का अनुरोध किया गया है। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने सोमवार को कहा, नोटिस जारी करें जिसका जवाब 24 नवंबर को दिया जाए। हम अटॉर्नी जनरल या सॉलिसिटर जनरल से अनुरोध करेंगे कि वे इस मामले में अदालत की सहायता करें। पीठ इसी तरह के मुद्दे को उठाने वाली तीन अलग-अलग याचिकाओं पर सुनवाई कर रही थी। एक मामले में, याचिकाकर्ता को मार्च 2019 में महाराष्ट्र के ठाणे की एक अधीनस्थ अदालत ने मृत्युदंड दिए जाने का फैसला सुनाया था और नवंबर 2021 में मुंबई उच्च न्यायालय ने उसे सुनाई गई मौत की सजा बरकरार रखी। शीर्ष अदालत ने इस साल मई में त्रुटिपूर्ण और भ्रष्ट जांच का हवाला देते हुए याचिकाकर्ता को आरोपों से बरी कर दिया।

बाबरी मस्जिद से जुड़ी पोस्ट पर नहीं रद्द होगा केस

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोशल मीडिया पर बाबरी मस्जिद से जुड़े पोस्ट के आरोप में विधि स्नातक के खिलाफ दर्ज आपराधिक मामले को रद्द करने से इन्कार कर दिया है। इस पोस्ट में कहा गया था कि बाबरी मस्जिद एक दिन फिर से बनाई जाएगी। न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने कहा कि उसने पोस्ट देखी है और याचिकाकर्ता मोहम्मद फैय्याज मंसूरी के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही में हस्तक्षेप नहीं करना चाहती।

प्रशांत किशोर का टीएमसी मुख्यालय के पते पर भी वोट, चुनाव आयोग ने दिया नोटिस

पटना/कोलकाता। जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर मंगलवार को उस समय विवादों में घिर गए जब यह सामने आया कि वह अपने गृह राज्य बिहार के साथ ही पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल में भी मतदाता के रूप में पंजीकृत हैं। उन्हें चुनाव आयोग ने नोटिस जारी किया गया है।

पश्चिम बंगाल में एक निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि आधिकारिक रिकॉर्ड के अनुसार पश्चिम बंगाल में मतदाता के रूप में पंजीकृत किशोर का पता 121, कालीघाट रोड के रूप में दर्ज है, जो कोलकाता के भवानीपुर विधानसभा क्षेत्र में तृणमूल कांग्रेस मुख्यालय का पता है। भवानीपुर विधानसभा क्षेत्र पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और तृणमूल प्रमुख ममता बनर्जी का निर्वाचन क्षेत्र है। अधिकारी ने कहा, उनका मतदान केंद्र बी रानीशंकरी लेन स्थित सेंट हेलेन स्कूल के रूप में सूचीबद्ध है। पश्चिम बंगाल में 2021 के विधानसभा चुनावों के दौरान किशोर ने टीएमसी के लिए राजनीतिक सलाहकार के रूप में काम किया था। निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि किशोर का नाम बिहार में रोहतास जिले के सासाराम संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत करगहर विधानसभा क्षेत्र में पंजीकृत है। उनका मतदान केंद्र मध्य विद्यालय, कोनार है।

32 %उम्मीदवारों पर दर्ज है मामले

पटना। बिहार में होने वाले आगामी विधानसभा चुनाव के प्रथम चरण में मैदान में उतरे 1,303 उम्मीदवारों में से 423 (32 प्रतिशत) पर आपराधिक मामले हैं और इनमें से 354 (27 प्रतिशत) उम्मीदवारों पर गंभीर आपराधिक मामले हैं। 'एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स' (एडीआर) और 'बिहार इलेक्शन वॉच' ने एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी। विधानसभा चुनाव के पहले चरण में 121 सीट पर मतदान होगा। रिपोर्ट के अनुसार, 33 उम्मीदवारों पर हत्या से संबंधित मामले, 86 पर हत्या के प्रयास जैसे मामले और 42 पर महिलाओं के खिलाफ अपराध से जुड़े मामलों में आरोपी हैं।

पूर्व अग्निवीरों की निजी सुरक्षा एजेंसियों में भर्ती सुनिश्चित कराएं राज्य : केंद्र

नई दिल्ली। केंद्र ने सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से कहा है कि वे पूर्व अग्निवीरों की निजी सुरक्षा एजेंसियों और प्रशिक्षण संस्थानों में भर्ती सुनिश्चित करें, क्योंकि उनके पास सशस्त्र बलों में काम का अनुभव है। अधिकारियों ने बताया कि केंद्रीय गृह मंत्रालय ने सशस्त्र बलों में अपना कार्यकाल पूरा करने वाले अग्निवीरों के आगे के कैरियर को दिशा देने के लिए सभी राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों को पत्र भेजा है। जून 2022 में केंद्र ने अग्निपथ भर्ती शुरू की थी, जिसके तहत तीनों सेनाओं में साढ़े 17 से 21 साल की आयु के युवाओं की चार वर्षों के लिए भर्ती का प्रावधान है। इनमें 25 प्रतिशत युवाओं को 15 वर्ष सेवा में बनाए रखा जाना है। अग्निवीरों का पहला बैच अगले साल सेवाकाल पूरा करेगा। पत्र में कहा गया है कि मंत्रालय के पुलिस दो प्रभाग को एक प्रणाली तैयार करने का निर्देश दिया गया है, जिसके तहत सरकारी विभागों, एजेंसियों, बैंकों द्वारा आउटसोर्स की गई सुरक्षा प्रदाता एजेंसियों में अग्निवीरों का समायोजन सुनिश्चित किया जा सके।

जासूसी नेटवर्क का भंडाफोड़, एक गिरफ्तार

- झारखंड से संचालित फर्जी पासपोर्ट रैकेट का भी पर्दाफाश

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली पुलिस ने पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में मंगलवार को 59 वर्षीय व्यक्ति को गिरफ्तार कर एक बड़े जासूसी नेटवर्क का भंडाफोड़ करने का दावा किया। एक अधिकारी ने मंगलवार को बताया कि व्यक्ति के कथित रूप से एक विदेशी परमाणु वैज्ञानिक के साथ संबंध थे।

वह पाकिस्तान समेत कई देशों की यात्रा कर चुका है। झारखंड के जमशेदपुर से संचालित एक फर्जी पासपोर्ट रैकेट से भी वह जुड़ा था। आरोपी की पहचान मोहम्मद आदिल हुसैन के रूप में हुई है और उसे सैयद आदिल हुसैन, नसीमुद्दीन और सैयद आदिल हुसैनी नामों से भी जाना जाता है। उसे दो दिन पहले दिल्ली के सीमापुरी से पकड़ा गया।

पुलिस के एक सूत्र ने बताया कि आरोपी विदेश में स्थित एक परमाणु वैज्ञानिक के संपर्क में भी था। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (विशेष प्रकोष्ठ) प्रमोद सिंह कुशवाह ने बताया कि आदिल जमशेदपुर के टाटा नगर का निवासी है। अधिकारी ने कहा कि आदिल और उसके भाई अख्तर हुसैनी पर अन्य देशों को संवेदनशील जानकारी मुहैया कराने और जाली दस्तावेजों का इस्तेमाल कर कई भारतीय पासपोर्ट हासिल करने का संदेह है। पूरा नेटवर्क कथित तौर पर जमशेदपुर से संचालित हो रहा था जहां जाली दस्तावेज की मदद से फर्जी पहचान पत्र और पासपोर्ट तैयार किए जा रहे थे। तलाशी के दौरान पुलिस ने आदिल के कब्जे से एक असली और दो जाली पासपोर्ट जब्त किए।

पाकिस्तान गया था, विदेशी वैज्ञानिक से संबंध

पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार मोहम्मद आदिल हुसैन के एक विदेशी परमाणु वैज्ञानिक से संबंध थे और वह झारखंड के जमशेदपुर से संचालित एक फर्जी पासपोर्ट रैकेट से भी जुड़ा हुआ था। पाकिस्तान समेत कई देशों की यात्रा कर चुका था। सूत्र ने दावा किया कि उसने जाली दस्तावेजों का इस्तेमाल करके एक संवेदनशील प्रतिष्ठान के तीन पहचान पत्र हासिल किए थे। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (विशेष प्रकोष्ठ) प्रमोद सिंह कुशवाह ने बताया कि आदिल और उसके भाई अख्तर हुसैनी पर अन्य देशों को संवेदनशील जानकारी मुहैया कराने और जाली दस्तावेजों का इस्तेमाल कर कई भारतीय पासपोर्ट हासिल करने का संदेह है।

गवाह को अदालत में झूठी गवाही देने के लिए धमकाना संज्ञेय अपराध

नई दिल्ली, एजेंसी

- उच्चतम न्यायालय ने एक महत्वपूर्ण फैसले में स्पष्ट किया प्रावधान

उच्चतम न्यायालय ने एक अहम फैसले में, मंगलवार को कहा कि किसी भी व्यक्ति को झूठी गवाही देने के लिए धमकाना एक संज्ञेय अपराध है और 2006 में भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) में जोड़े गए एक प्रावधान की अस्पष्टता पर स्थिति स्पष्ट की, जिसकी वजह से दो उच्च न्यायालयों ने अलग-अलग व्याख्या की थी।

न्यायमूर्ति संजय कुमार और न्यायमूर्ति आलोक अराधे की पीठ ने कहा कि विधिक योजना से यह साफ है कि आईपीसी की धारा 195ए को धारा 193 (झूठी गवाही के लिए सज़ा), 194 (मौत की सज़ा वाले अपराध में दंड दिलाने के इरादे से झूठी गवाही देना या गढ़ना), 195 (उम्रकैद या सात साल या उससे अधिक की जेल की सज़ा वाले अपराध में सज़ा दिलाने के इरादे से झूठी गवाही देना या गढ़ना) और 196 (झूठी गवाही) के तहत आने वाले अपराधों से अलग अपराध के रूप में बनाया गया था। शीर्ष अदालत ने कहा कि आईपीसी की धारा 193 से 196 के तहत अपराधों के लिए शिकायत केवल वही लोग कर सकते हैं जिनके नाम का जिक्र दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 195(1)(बी)(आई) में किया गया है और ये सभी गैर-संज्ञान अपराध हैं।

पीठ ने कहा, ''हालांकि, धारा 195ए के तहत किया गया अपराध एक संज्ञेय अपराध है और यह किसी व्यक्ति को उसकी जान, प्रतिष्ठा, संपत्ति या किसी ऐसे व्यक्ति की जान या प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने की धमकी देकर झूठी गवाही देने के लिए उकसाने से जुड़ा है, जिसमें उस व्यक्ति की दिलचस्पी हो। पीठ ने कहा कि किसी गवाह को अदालत में आने से बहुत पहले भी धमकी दी जा सकती है, हालांकि ऐसी धमकी के तहत झूठी गवाही देना उस अदालत में चल रही कार्यवाही से जुड़ी होती है। पीठ ने कहा कि शायद यही वजह है कि इस अपराध को संज्ञेय बनाया गया ताकि जिस गवाह या दूसरे व्यक्ति को धमकी दी गई है, वह तुरंत कदम उठा सके। इसके लिए वह या तो धारा 154, सीआरपीसी के तहत संबंधित पुलिस अधिकारी को इस संज्ञेय अपराध के होने की मौखिक जानकारी दे सकता है, या मजिस्ट्रेट के पास शिकायत कर सकता है।

पीड़ित परिवार को 28 लाख रुपये देने का आदेश

नई दिल्ली। दिल्ली मोटर दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण ने वर्ष 2022 में बीएमडब्ल्यू कार दुर्घटना में जान गंवाने वाले एक व्यक्ति के परिवार को 28.77 लाख रुपये का मुआवजा देने का आदेश दिया है। पीठासीन अधिकारी चारु गुप्ता निजी कर्मचारी रंजन कुमार के परिवार की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई कर रही थीं, जिनकी 10 जुलाई 2022 को एक तेज गति से गुजर रही बीएमडब्ल्यू कार की चपेट में आने से मौत हो गई थी। याचिका के मुताबिक, लाला लाजपत राय मार्ग के पास बीएमडब्ल्यू कार की टक्कर से कुमार की मौत हो गई थी। यह कार महाराष्ट्र में पंजीकृत थी। याचिका में कहा गया है कि कुमार फुटपाथ पर घायल अवस्था में पाए गए और उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी मौत हो गई।

एसआईआर पर सवाल उठाने वाले इसमें लें भाग

- मप्र के सीईओ ने राजनीतिक दलों से प्रक्रिया में शामिल होने को कहा
- 1951-04 के बीच आठ बार अपनाई गई एसआईआर की प्रक्रिया

भोपाल, एजेंसी

मध्यप्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) संजीव कुमार झा ने कहा कि सभी राजनीतिक दलों के लिए राज्य में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) में भाग लेना आवश्यक है क्योंकि उन्होंने इसकी पवित्रता पर सवाल उठाए हैं। आयोग ने सोमवार को नवंबर से फरवरी के बीच 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में एसआईआर कराने की घोषणा की। जिन राज्यों में एसआईआर होना है, उनमें अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, केरल, मध्यप्रदेश, पुडुचेरी, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल शामिल हैं।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी झा और संयुक्त मुख्य निर्वाचन अधिकारी राम प्रताप सिंह जादौन ने बताया कि राजनीतिक दलों के लिए एसआईआर में भाग लेना जरूरी है क्योंकि उन्होंने पहले भी इसकी पवित्रता पर सवाल उठाए हैं। उन्हें इस प्रक्रिया में भाग लेने के लिए अपने बूथ स्तरीय एजेंट (बीएलए) भी नियुक्त करने चाहिए। 1951 से 2004 के बीच देश में आठ बार एसआईआर की प्रक्रिया अपनाई गई और आखिरी बार ऐसा लगभग 21 साल पहले 2002-2004 में किया गया था। मध्यप्रदेश में एसआईआर आखिरी बार एक जनवरी, 2003 को किया गया था। जादौन ने बताया कि मतदाता सूची में बदलाव मतदाताओं के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने, उन्हें नए स्थान पर पंजीकृत कराने, मृतकों और विदेशी नागरिकों के नाम सूची से हटाने के आधार पर किया जाता है।

छत्तीसगढ़ में मतदाता सूची का एसआईआर शुरू

रायपुर। छत्तीसगढ़ के सीईओ यशवंत कुमार ने कहा कि राज्य में मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया शुरू हो गई है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी योग्य मतदाता सूची से न छूटे। उन्होंने कहा कि इस कवायद के तहत 28 अक्टूबर से तीन नवंबर तक प्रकाशन और प्रशिक्षण गतिविधियां होंगी, जिसके बाद चार नवंबर से चार दिसंबर तक बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) घर-घर जाकर फॉर्म वितरित करेंगे। 27 अक्टूबर तक के आंकड़ों के अनुसार छत्तीसगढ़ में 2,11,05,391 मतदाता हैं। 2003 में जब एसआईआर हुआ था, तब राज्य में 1,32,90,338 मतदाता पंजीकृत थे।

राज्य में 70.55% मतदाताओं को कोई दस्तावेज देने की जरूरत नहीं

जयपुर। राजस्थान के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) नवीन महाजन ने बताया कि राज्य में 70.55 प्रतिशत मतदाताओं को एसआईआर के दौरान दस्तावेज जमा करने की जरूरत नहीं होगी। महाजन ने बताया कि आयोग ने एसआईआर से पहले ही व्यापक मतदाता मैपिंग का काम कर लिया है। उन्होंने कहा कि राजस्थान के मतदाताओं को जिस दिन एसआईआर की घोषणा हुई है, उस दिन से ही दस्तावेज जमा करने की जरूरत नहीं होगी। जब बूथ लेवल ऑफिसर (बीएलओ) घर-घर जाकर फार्म जमा करना शुरू करेंगे, जिसके बाद यह आंकड़ा 80 प्रतिशत को पार कर सकता है। राज्य में इस समय 5.48 करोड़ पंजीकृत मतदाता हैं, जिनमें से 70.55 प्रतिशत का मिलान 2002 और 2005 के बीच तैयार की गई पिछली एसआईआर मतदाता सूचियों से किया जा चुका है।

फरीदाबाद में कार के अंदर किशोरी से सामूहिक दुष्कर्म

फरीदाबाद, एजेंसी

- चार लोगों के खिलाफ पुलिस ने दर्ज किया मामला

फरीदाबाद में चार युवकों ने 15 साल की एक किशोरी का अपहरण कर उससे अपनी कार में कथित तौर पर बलात्कार किया। पुलिस ने मंगलवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि आठवीं कक्षा की छात्रा को 26 अक्टूबर की शाम सात बजे से 27 अक्टूबर को तड़के चार बजे तक बंधक बनाकर रखा गया, जिसके बाद आरोपी उसे उसके घर के पास छोड़कर अपनी गाड़ी में फरार हो गए। पुलिस के मुताबिक, लड़की की बहन ने शिकायत में आरोप लगाया है कि उसकी छोटी बहन 26 अक्टूबर की शाम करीब सात बजे सेक्टर-18 के बाजार गई थी और जब वह घर नहीं लौटी, तो परिवार ने उसकी तलाश शुरू की, लेकिन वह नहीं मिली। शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि मेरी बहन 27 अक्टूबर को तड़के करीब 4:30 बजे घर पहुंची। उसने बताया कि पिछली शाम चार युवकों ने उसे कार में अगवा कर लिया था। वे उसे एक सुनसान इलाके में ले गए, उसे नशीला पदार्थ दिया और उससे बलात्कार किया। पुलिस ने बताया कि शिकायत के आधार पर मंगलवार को पुराना फरीदाबाद पुलिस थाने में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) और यौन अपराध से बच्चों का संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत चार अज्ञात युवकों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है।

अकासा एयर को खामियां दूर करने का दिया निर्देश

नई दिल्ली। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने एयरलाइन कंपनी अकासा एयर में कई नियामकीय उल्लंघन और बार-बार दोहराई जाने वाली प्रक्रियागत खामियों का जिक्र करते हुए उसे सुधारात्मक कदम उठाने के लिए कहा है।

सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि डीजीसीए ने अप्रैल से सितंबर, 2025 के बीच की निगरानी रिपोर्ट की विस्तृत समीक्षा के बाद यह निष्कर्ष निकाला है। उड़ान सुरक्षा, सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली और उड़ान ड्यूटी अवधि सीमा जैसे क्षेत्रों की समीक्षा की गई। समीक्षा में पाया गया कि अकासा एयर में प्रक्रियागत त्रुटियां, दस्तावेजी खामियां और प्रणालीगत अनुपालन की नाकामी बार-बार दोहराई जा रही हैं।

अध्ययन | उपग्रह चित्रों के विश्लेषण के आधार पर दावा, पांच शहरों में 25 हजार इमारतें खतरे में

देश के पांच महानगरों में धंस रही करीब 900 वर्ग किलोमीटर भूमि

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली और चेन्नई सहित भारत के पांच महानगरों में लगभग 900 वर्ग किलोमीटर भूमि संभवतः धंस रही है और इससे 19 लाख लोगों को प्रति वर्ष चार मिलीमीटर से अधिक की भू धंसाव दर का सामना करना पड़ सकता है। एक अध्ययन में यह आकलन किया गया है। अमेरिका के वर्जीनिया पॉलिटेक्निक इंस्टीट्यूट और स्टेट यूनिवर्सिटी के अनुसंधानकर्ताओं ने 2015-23 के दौरान एकत्रित उपग्रह चित्रों का विश्लेषण किया और पाया कि 2,400 से अधिक इमारतों पर पहले से ही संरचनात्मक क्षति का खतरा मंडरा रहा है। अनुसंधानकर्ताओं ने कहा कि भूमि धंसने से बाढ़ और भूकंप का खतरा बढ़ सकता है। उन्होंने बताया कि जब किसी शहर के नीचे की जमीन असमान रूप से धंसती है, तो इससे नींव कमज़ोर हो सकती है, बिजली की लाइनें क्षतिग्रस्त हो सकती हैं और ढांचा कमजोर हो सकता है। 'नेचर सस्टेनेबिलिटी' पत्रिका में प्रकाशित अनुसंधान पत्र के मुताबिक अगर भूमि में धंसाव की यह दर जारी रही, तो अगले 50 वर्षों में 23,500 से ज्यादा इमारतों को बहुत ज्यादा संरचनात्मक क्षति का सामना करना पड़ सकता है। अध्ययन में दिल्ली और चेन्नई के अलावा मुंबई, कोलकाता और बेंगलुरु की इमारतों का अध्ययन किया गया।

भवनों का भार और अत्यधिक जलदोहन कारण : वर्जीनिया पॉलिटेक्निक इंस्टीट्यूट एंड स्टेट यूनिवर्सिटी के स्नातक छात्र और अनुसंधान पपत्र के प्रमुख लेखक नितेशनिर्मल सदाशिवम ने बताया कि अध्ययन में शामिल शहरों में भूमि धंसाव के प्रमुख कारकों में अत्यधिक भूजल का दोहन शामिल है, तथा घनी आबादी वाले क्षेत्रों में भवनों का भार भी भूमि धंसाव का कारण बन रहा है। उन्होंने कहा कि वर्तमान धंसाव दर और भविष्य की स्थितियों का सटीक विश्लेषण इंगित करता है कि दिल्ली-एनसीआर में भवनों को नुकसान पहुंचने का खतरा सबसे अधिक है।

2030 तक नई दिल्ली दुनिया का सबसे बड़ा महानगर

अनुसंधान पत्र के लेखकों ने कहा कि अनुमान है कि 2030 तक नई दिल्ली, जापान के तोक्यो को पीछे छोड़कर विश्व की सबसे बड़ा महानगर बन जाएगा तथा भारत में दो अतिरिक्त महानगर भी उभरने की संभावना है। उन्होंने कहा कि देश की जनसंख्या 2024 तक 0.92 प्रतिशत की दर से बढ़ने का अनुमान है, जिससे कई शहरी क्षेत्रों में पानी की गंभीर कमी हो सकती है। अनुसंधानकर्ताओं ने पांचों महानगरों में 13 लाख से अधिक भवनों का अध्ययन किया जहां आठ करोड़ आबादी रहती है।

भूधंसाव से 19 लाख लोग प्रति वर्ष हो रहे प्रभावित

उन्होंने पाया कि 878 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में भू धंसाव की जानकारी मिली, जिससे लगभग 19 लाख लोग प्रति वर्ष चार मिलीमीटर से अधिक की धंसाव दर से प्रभावित हो रहे हैं। अध्ययन के मुताबिक शहरों में व्यापक पैमाने पर भू-धंसाव देखा गया, जिसमें नयी दिल्ली में सबसे अधिक दर 51 मिलीमीटर प्रति वर्ष से भू धंसाव देखी गई। इसके बाद चेन्नई में 31.7 मिलीमीटर प्रति वर्ष तथा मुंबई में 26 मिलीमीटर प्रति वर्ष की दर से भू-धंसाव दर्ज किया गया। कोलकाता में भू-धंसाव की दर सबसे अधिक 16.4 मिलीमीटर प्रति वर्ष दर्ज की गई।

अमृत विचार

बुधवार, 29 अक्टूबर 2025

हमें अपने संकल्प पर विश्वास करना चाहिए और उस पर टिके रहना चाहिए।

–**अटल बिहारी बाजपेयी**, पूर्व प्रधानमंत्री

चुनावी स्वच्छता अभियान

देश के 12 राज्यों में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम के दूसरे चरण की घोषणा भारतीय लोकतंत्र की चुनावी प्रक्रिया में विश्वसनीयता और पारदर्शिता के लिहाज से अत्यंत महत्वपूर्ण है। मतदाता सूची की शुद्धता, सटीकता ही निष्पक्ष चुनाव की नींव होती है और इस दृष्टि से यह कदम लोकतांत्रिक ढांचे को मजबूत करेगा। यह केवल एक प्रशासनिक कवायद नहीं, बल्कि जनप्रतिनिधि प्रणाली की शुद्धिकरण का भगीरथ प्रयास है। उत्तर प्रदेश को केंद्र में देखें तो इस पहल का महत्व और भी बढ़ जाता है। देश का सबसे बड़ा राज्य होने के नाते, यहां के मतदाता आंकड़े चुनावी समीकरणों को निर्णायक रूप से प्रभावित करते हैं। वर्तमान में उत्तर प्रदेश में लगभग 16 करोड़ मतदाता हैं। निर्वाचन आयोग के अनुमान के अनुसार, इस पुनरीक्षण प्रक्रिया में करीब 25 लाख नए मतदाता जुड़ने की संभावना है, जबकि 12 लाख नामों के हटने की आशंका है। इनमें मुख्यतः मृतकों, दोहराए गए नामों या स्थानांतरित मतदाताओं के नाम हटेंगे। बेशक यह प्रक्रिया राज्य के लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व को अधिक विश्वसनीय बनाएगी।

पिछले 21 वर्षों से इस स्तर का व्यापक पुनरीक्षण न होना चिंता का विषय रहा है। इसके पीछे तकनीकी सीमाएं, प्रशासनिक उदासीनता और राज्यों के बीच समन्वय की कमी तथा परिस्थिति विशेष जैसे कारण बताए गए, लेकिन अब डिजिटल वेरिफिकेशन, आधार लिंकेज, मोबाइल ऐप आधारित फील्ड एंट्री और ऑनलाइन शुद्धिकरण प्रणाली जैसी नई तकनीक ने इस प्रक्रिया को तेज, पारदर्शी और किंचित सरल तथा त्रुटि-मुक्त बनाया है। इससे फर्जी वोटर पहचानने, दोहराव रोकने और स्थानांतरित मतदाताओं को सही बूथ पर दर्ज करने में मदद मिलेगी, पर पूरी तरह शुद्ध सूची सुनिश्चित करने के लिए आयोग को निरंतर निगरानी और त्रिस्तरीय सत्यापन प्रणाली लागू करनी होगी। फील्ड वेरिफिकेशन टीमों को प्रशिक्षण और पूरी जवाबदेही के साथ काम करना होगा, विपक्ष के 'वोट चोरी' के आरोपों का तथ्यात्मक उत्तर इससे दिया जा सकेगा। आयोग के अनुसार प्रक्रिया निष्पक्ष है। बिहार में हालिया पुनरीक्षण के दौरान 65 लाख नाम हटाए और 48 लाख नए मतदाता जोड़े गए, लगभग 40 हजार संदिग्ध प्रवासी मतदाताओं की पहचान की गई। असम को इस सूची से फिलहाल बाहर रखा गया है, क्योंकि वहां राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर और मतदाता सूची का तालमेल जटिल है। पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल की सरकारों की तकनीकी हस्तक्षेप और डेटा गोपनीयता की आपत्तियों पर आयोग ने इन राज्यों को आश्वस्त किया है कि मतदाता सूची से जुड़ा हर डेटा सुरक्षित रहेगा और राज्य सरकारों को सत्यापन प्रक्रिया में बराबर भागीदारी दी जाएगी। फिर भी राजनीतिक विवाद अनिवार्य है।

कुल मिलाकर, मतदाता सूची को अद्यतन करने का यह विशेष पुनरीक्षण कार्यक्रम लोकतंत्र की आत्मा को निर्मल रखने का यह प्रयास है, जो वोट के अधिकार को सुरक्षित बनाने के साथ उस जनविश्वास को भी सुदृढ़ करता है, जिस पर लोकतांत्रिक शासन की इमारत खड़ी है, जिसकी सफलता नागरिकों की जागरूकता और आयोग की निष्पक्षता दोनों पर समान रूप से निर्भर करती है।

प्रसंगवश

संघ का मंत्रः राष्ट्रधर्म और निःस्वार्थ सेवा

एक अद्भुत संरचना, त्याग और निःस्वार्थ सेवा का भाव, संघ को अन्य संस्थाओं से अलग व पवित्र बनाता है। संघ आज अपने सौ वर्ष का चक्र पूरा करने के उपलक्ष्य में शताब्दी वर्ष मना रहा है। अत्यंत सरलता व सादगी के साथ। वर्तमान समय की परिस्थितियों को देखने-विचारने के पश्चात, एक गहन चिंतन से शोधित करते हुए, सघन विचार-विमर्श से परिष्कृत करने के उपरांत संघ ने समाज को पांच परिवर्तन का विचार दिया। समाज को सुमार्ग पर लाने के लिए, अंदर से रक्षा तंत्र का मजबूत करते हुए राष्ट्र धर्म का हितैषी संघ आज 'शताब्दी वर्ष' की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्र चिंतन के प्रति समर्पित है।

गौरव शर्मा 'जौली'

लेखक

अनेक बुद्धिजीवियों, विचारकों, समाजसेवकों, संगठनों के विचार, विगत 3-4 बरसों से लिए जा रहे थे। तद्उपरांत बैठकों में सभी विचारों को समाहित किया गया और पंच परिवर्तन का विचार संघ ने हिंदू समाज के सामने रखा। असंतोष को जन्म देकर ही वामपंथ अपनी जड़े मजबूत करता आया है। वामपंथी विचारधारा के लिए 'जात-पात' सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। शूद्र, ठाकुर, बनिया, ब्राह्मणवाद जैसे शब्द वामपंथ के तरकश में रखे अलौकिक तीर हैं, जो राष्ट्र की भावना को भेद देते हैं। राष्ट्र भावना की जड़ में है शास्त्र, वेद, ऋचाएं। ये सभी को संस्कार से जोड़ती हैं। संस्कार का मार्ग, धर्म के आंगन में खुलता है। धर्म ही हमें सनातन रूपी अलौकिक सत्ता से रूबरू करवाता है। सनातन से साक्षात्कार होते ही हम अपनी जननी मातृभूमि मां भारती के ऋण को चुकाने हेतु सत्कर्म प्रारंभ कर देते हैं। वामपंथ झूठे नैरेटिव गढ़ते हुए सनातन को मार्ग से विचलित करने का कार्य पिछले 70 बरसों से करता आ रहा है, किंतु हमारे शास्त्र शाश्वत हैं, सत्य हैं।

जिस रामायण को महान् ऋषि वाल्मीकि ने लिखा, वहीं हमारे मंदिर-मठों में स्वीकार्य है। जाति में श्रेष्ठ, किंतु संस्कार विहीन रावण का वध श्रीराम ने किया। सारा खेल संस्कारों का है। नई सनातन पीढ़ी को समरसता के माध्यम से समाज को मजबूत दिशा देने का प्रयास करेगा संघ। संवाद के माध्यम से सामंजस्य स्थापना के बाद परिवार को समाज से जोड़ देना ही संघ की प्राथमिकता है। इसके लिए, संघ भी अपना एक रोड मैप तैयार कर रहा है। 'सर्वभवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया' हमारे ऋषि-मुनियों ने एक ऐसी धरा क कल्पाना की थी, जो हरी भरी हो, जहां जन मानस सुख से जीवनयापन करता हो व निरोगी काया को प्रथम सुख बताते हुए, वसुंधरा के प्रति अपने कर्तव्यबोध का ज्ञान कराया था।

प्रत्येक राष्ट्र के निर्माण में उस देश के नागरिकों का चरित्र व राष्ट्र के प्रति संवेदना महत्वपूर्ण होती है। व्यक्ति निर्माण व प्रथम चरण हैं कर्तव्य बोध। किसी भी राष्ट्र का उत्थान व पतन का महत्वपूर्ण बिन्दु, उस राष्ट्र के व्यक्ति से जुड़ा होता है। सभ्यता, संस्कृति के लिए सजगता के साथ-साथ राष्ट्र के उत्थान के लिए कर्तव्य बोध होना परम आवश्यक है। भारत के मूल स्वरूप में उसकी संस्कृति है। धर्म है। वैदिक ज्ञान, वैदिक गणित, योगाचार्य आदि महत्वपूर्ण विषयों की जरूरत पूरा विश्व महसूस कर रहा है। एक लंबी अवधि के उपरांत भारतीय सरकार भी अपनी संस्कृति, सभ्यता को लेकर जागृत अवस्था में आई है। व्यक्ति निर्माण समाज की प्रत्यक्ष तौर पर प्रभावित करने वाली इकाई है। इन्हीं सब चिंतन के प्रत्येक नगर, बस्ती में स्वयंसेवक सामाजिक समीक्षा करने में लग्न है। ब्यौरा भी प्रांत व क्षेत्र स्तर तक भेजा जा रहा है। संघ एक बार पुनः 'जौहरी' की भूमिका अदा करते हुए सामाजिक रत्नों को शोधित करने का बीड़ा उठा रहा है।

नक्सलवादः वैचारिक मोर्चे पर भी जरूरी है प्रतिबद्धता

सर्वेश कुमार सिंह

स्वतंत्र पत्रकार

'लाल आतंक' पराभव की ओर है। वर्ष 2025 को माओवाद के सशस्त्र संघर्ष के अंत के रूप में यादि किया जाएगा। भारत में लाल आतंक का अंत असंभव मान लिया गया था। एक पूर्व प्रधानमंत्री ने हताशा प्रकट कर दी थी। कह दिया था, यह देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ी चुनौती है, लेकिन आत्मविश्वास से लबरेज और संकल्पबद्ध गृहमंत्री अमित शाह ने इस असंभव को संभव बना दिया है। गृहमंत्री शाह ने घोषणा कर दी है कि 31 मार्च 2026 तक 'नक्सलवाद मुक्त भारत' होगा। इसकी कल्पना भी एक दशक पहले नहीं थी कि कोई इतने आत्मविश्वास के साथ संकल्प दिवस की घोषणा कर देगा।

तारीख बताकर नक्सलवाद का अंत करेगा, लेकिन ऐसा होता दिखायी दे रहा है, क्योंकि चार दिन में यानी कि 14 से 17 अक्टूबर के बीच शीर्ष नक्सल कमांडरों के नेतृत्व में तीन सौ से अधिक नक्सलवादियों ने आत्मसमर्पण कर दिया है। हाथों में एसएलआर, एके 47 और इंसास राइफलें संभालने वाले नक्सवादी इन तीन दिनों के भीतर हाथों में गुलाब और संविधान की प्रतियां लेकर पुलिस और प्रशासन के सामने आ गए, लेकिन, सशस्त्र संघर्ष को परास्त करने के बाद भी वैचारिक मोर्चे पर समर शेष है।

डेढ़ करोड़ के इनामी नक्सलवादी कमांडर और वैचारिक प्रेरक की भूमिका निभाने वाले भूपति ने 15 अक्टूबर को गढ़चिरोली में हथियार डाल दिए। समर्पण करने वाले नक्सलवादियों की संख्या 60 थी। इसके एक दिन बाद ही छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में 210 नक्सलवादियों ने आत्मसमर्पण किया। यहां दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य भास्कर उर्फ राजमन मंडावी, कमेटी प्रवक्ता रूपेश उर्फ विकल्प, रनीता, राजू सलाम के नेतृत्व में समर्पण हुआ। इसके साथ ही बस्तर में बीएसएफ के सामने नक्सलवादियों ने हथियार डाले। आंतरिक सुरक्षा की सबसे बड़ी चुनौती का सामना करके भारत सफलता के एकदम निकट है। यह चुनौती लगभग छह दशक से भारत की आंतरिक सुरक्षा चिंता की केंद्र बिन्दु बनी हुई थी, लेकिन चार दिन में तीन सौ से अधिक नक्सलवादियों के आत्मसमर्पण से यह उम्मीद बंधी है कि अब भारत ने इस चुनौती का सफलता से सामना कर लिया है। ये आत्मसमर्पण छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र में शीर्ष माओवादी कमांडरों के नेतृत्व में हुए।

माओवादी विचार से प्रेरित नक्सलवाद की अब कमर टूट चुकी है। भूपति के आत्मसर्पण और उसके द्वारा अन्य साथियों को लिखे गए पत्रों से स्प्ष्ट है कि इनके वैचारिक प्रेरक ने तात्कालिक परिस्थियों को समझते हुए ही समर्पण का निर्णय लिया है। उसने अन्य साथियों को भी लिखा है कि अब सशस्त्र संघर्ष का समय नहीं है, परिस्थितियां अनुकूल नहीं है, इसलिए अहिंसा का रास्ता अपनाकर सामान्य जनजीवन में लौटना ही सही निर्णय होगा।

इस आतंक को संप्रग सरकार के कार्यकाल में 2010 में तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने देश की सुरक्षा के लिए सबसे बड़ी चुनौती करार दिया था, किंतु संयुक्त प्रगतिशील सरकार ने इसे जितनी बड़ी चुनौती बताया, उसके अनुपात में योजनाएं और अभियान पर्याप्त नहीं थे, बल्कि नक्सलवादियों के साथ आंध्र प्रदेश में वार्ता के लिए 2004 में एक तरफा कार्रवाई रोकने की नीति ने स्थिति को और अधिक भयावह बना दिया था। इसी का परिणाम था कि नक्सलवादियों ने कई जघन्य आतंकी घटनाओं को अंजाम दिया। इन घटनाओं से यह लगने लगा था कि लाल आतंक देश में बेलगाम है। वर्ष 2003 से 2013 का यह वही दौर था जब उन्होंने सुरक्षा बलों के काफिलों पर बड़े हमले किए थे। नक्सल आतंक 2013 में सबसे ज्यादा जिलों में व्याप्त था। उस समय देश के 126 जिले माओवादी हिंसा की घटनाओं से प्रभावित थे। अब 2025 की शुरुआत में यह संख्या घटकर 18 रह गई। मौजूदा समय में यह 11 जिलों तक सीमित है। इनमें भी सिर्फ तीन जिले ही अति प्रभावित की श्रेणी में हैं।

वर्ष 2013 में छत्तीसगढ़ के दरभा घाटी में घात लगाए बैठक नक्सलवादियों ने कांग्रेस नेताओं के काफिले पर हमला कर दिया था। इसमें 24 कांग्रेस नेता मारे गए थे। तेलुगू देशम पार्टी के नेता चंद्रबाबू नायडू पर 2003 में जानलेवा हमला किया गया था। दंतेवाड़ा में सीआरपीएफ के कैंप पर 2010 में हमला किया गया। इसमें 76 जवान शहीद हुए थे। नक्सलवादियों का यह सबसे बडा हमला था। उत्तर प्रदेश के चंदौली में नौगढ़ क्षेत्र में 20 नवंबर 2004 को पीएसी की गाड़ी को बारुदी सुरंग से उड़ा दिया गया था, इसमें 17 जवान शहीद हो गए थे। इसमें 12 जवान पीएसी के तथा 5 नागरिक पुलिस के थे।

गृह मंत्री अमित शाह ने आत्मविश्वास और सटीक योजना के साथ यह दृढ़ संकल्प व्यक्त किया है कि 31 मार्च 2026 तक देश नकस्लवाद मुक्त हो जाएगा, तो इस पर कोई संदेह नहीं होता। इसका कारण है कि जिस तेजी से नक्सली हथियार डाल रहे हैं। लाल गुलाब के फूल और संविधान हाथ में लेकर बाहर आ रहे हैं, उससे यह विश्वास होता है कि गृहमंत्री इस संकल्प को समय सीमा में या उससे भी पहले पूरा कर लेंगे।

जिस कुशलता और सुदृढ़ रणनीति के साथ केंद्र सरकार ने इस मोर्चे पर सफलता अर्जित की है, वह अमित शाह की दूरदर्शिता, कुशल रणनीतिक सूझबूझ और दृढ संकल्प को दर्शाता है। भारत की यह ऐसी उपलब्धि है, जिसे सुरक्षा की दृष्टि से तीन दशक की सबसे बड़ी घटना के रूप में देखा जा सकता है। यह लड़ाई किसी युद्ध से कम नहीं थी। इसमें जो जानें गईं, सरकारी संपत्तियों को जो नुक्सान हुआ, सरकारी धन का जो व्यय हुआ, वह किसी भी बाहरी युद्ध से कम नहीं था। नक्सलवाद ने पूर्वोत्तर और दक्षिण पूर्व के कई राज्यों में विकास को बाधित कर दिया था।

गृहमंत्री अमित शाह ने घोषणा कर दी है कि 31 मार्च 2026 तक 'नक्सलवाद मुक्त भारत' होगा। इसकी कल्पना भी एक दशक पहले तक संभव नहीं थी।

आमने

अगर किसी भी योग्य मतदाता का नाम सूची से हटाया गया तो टीएमसी लोकतांत्रिक तरीके से विरोध करेगी। हम एक पारदर्शी वोटर लिस्ट के पक्ष में हैं। अगर किसी का नाम हटाने की कोशिश हुई, तो लोकतांत्रिक तरीके से विरोध प्रदर्शन होगा। दिल्ली में निर्वाचन आयोग का घेराव होगा।

–**कुणाल घोष**

प्रवक्ता, तृणमूल कांग्रेस

सामने

बंगाल में कोई भी फर्जी या अवैध मतदाता नहीं होना चाहिए। ममता बनर्जी सरकार एसआईआर से इसलिए डर रही है, क्योंकि उनके वोटबैंक में रोहिंग्या और बांग्लादेशी घुसपैठिए शामिल हैं। टीएमसी को डर है कि अवैध मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से हट जाएंगे।

–**केया घोष**, भाजपा नेता

'चिकन नेक' पर पाक की नापाक निगाह

दिग्विजय सिंह

कानपुर

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत से पिटने के बाद अब पाकिस्तान, भारत के मित्र देशों और पड़ोसियों से अपने सैन्य रिश्ते को मजबूत करने में जुट गया है। यह कोशिश भारत को चौतरफा घेरने की है। भारत के सऊदी अरब से गहरे रिश्ते हैं। पाकिस्तान ने पहले सऊदी अरब से सैन्य समझौता किया। इसमें तय हुआ कि एक देश पर हमला दोनों देशों के विरुद्ध युद्ध माना जाएगा। इस समझौते से पहले पाकिस्तान ने बांग्लादेश को भारत के विरुद्ध किया और अब मालदीव से सैन्य समझौता करके यह बताने का प्रयास कर रहा है कि वह भारत को चैन से बैठने नहीं देगा, हालांकि वह भूल रहा है कि भले ही बांग्लादेश को उसने अपने पाले में कर लिया है, लेकिन मालदीव और सऊदी अरब को लाख कोशिश के बाद भी भारत के विरुद्ध नहीं कर पाएगा।

इंडिया आउट का नारा देकर मालदीव की सत्ता में आए मोहम्मद मुइज्जू ने पहले तो भारत के विरुद्ध खूब जहर उगला था, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक दांव ने उन्हें घुटने टेकने के लिए मजबूर कर दिया था। अब वे भारतीय नेतृत्व का गुणगान कर रहे हैं। बांग्लादेश और भारत के रिश्ते हमेशा मजबूत रहे हैं, लेकिन वहां की प्रधानमंत्री शेख हसीना के तख्तापलट के बाद पाकिस्तान को वहां जड़ें जमाने का मौका मिल गया, क्योंकि मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस की नीतियां भारत विरोधी रही हैं और वे अब कट्टरपंथियों के हाथ की कठपुतली बन गए हैं। यही वजह है कि बड़े पैमाने पर बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर अत्याचार हो रहा है। मोहम्मद यूनुस लगातार भारत विरोधी बयान दे रहे हैं और कई बड़े प्रोजेक्ट को रद्द भी कर चुके हैं।

पाकिस्तान के दूसरे सबसे बड़े ताकतवर सैन्य कमांडर ज्वाइंट चीफ ऑफ स्टॉफ कमेटी के चेयरमैन जनरल साहिर शमशाद मिर्जा ने यूनुस के साथ बैठक की। यूनुस ने उन्हें एक विवादित नक्शा दिया, जिसमें भारत के कुछ हिस्से को बांग्लादेश का बताया गया है। भारत के विरोध में अंधे हो चुके मोहम्मद यूनुस किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। कहा जा रहा है कि वे चिकन नेक के करीब द्वितीय विश्वयुद्ध की पुरानी पड़ चुकी हवाई पट्टियों के रखरखाव की जिम्मेदारी पाकिस्तान को सौंप सकते हैं।

हाल ही में बांग्लादेश के सेना प्रमुख वकार जमा ने इन हवाई पट्टियों का दौरा किया था। जनरल साहिर शमशाद इसी सिलसिले में वहां जाना चाहता है, हालांकि अभी ये अटकलें हैं कि पाकिस्तान को हवाई पट्टियां सौंपी जा सकती हैं, लेकिन बांग्लादेश के हुक्मरानों का भारत के प्रति जो रवैया है उससे लगता है कि अटकलें सही हो सकती हैं। अगर ऐसा होता है तो भारत के लिए यह रणनीतिक रूप से अच्छा नहीं होगा।

चिकन नेक को सिलीगुड़ी कॉरिडोर भी कहा जाता है। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ने वाला अत्यंत महत्वपूर्ण और रणनीतिक रूप से संवेदनशील यह मार्ग काफी संकरा है। भारत सरकार ने यहां सेना, वायुसेना, रडार और मिसाइलों की तैनाती कर रखी है। यह भारत को चीन की चुंबी घटी के संदर्भ में रणनीतिक बढ़त देता है। भारत, नेपाल, बांग्लादेश और भूटान के बीच स्थित होने के कारण इसे संवेदनशील क्षेत्र माना जाता है। बांग्लादेश की सत्ता में बैठे जिम्मेदार लोगों द्वारा इस चिकन नेक को लेकर दिए जाने वाले बयानों से भारत सरकार और हमारी सेना सतर्क है।

पिछले दिनों असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने बांग्लादेश को सख्त लहजे में चेतावनी देते हुए कहा था कि बांग्लादेश की दो-दो चिकन नेक को तोड़ दिया जाएगा। उनका इशारा बांग्लादेश के चटगांव और रंगपुर इलाकों को लेकर था। यह भी जानना जरूरी है कि पिछले एक साल से पाकिस्तान के सैनिक बांग्लादेशी सेना को प्रशिक्षित कर रहे हैं। कहा तो यह भी जा रहा है कि द्वितीय विश्वयुद्ध की पुरानी पड़ चुकी हवाई पट्टियों पर अमेरिका की भी नजर है। वह भी चाहता है कि बांग्लादेश की ये हवाई पट्टियां उसे मिल जाएं, ताकि वह यहां अपना एयरबेस बनाकर चीन और भारत पर नजर रख सके। अमेरिका के स्पेशल फोर्सेज के कमांडो की मौजूदगी भी बांग्लादेश में है, ऐसी चर्चाएं लगातार हो रही हैं।

जनरल साहिर शमशाद मिर्जा ने मालदीव की यात्रा की है। जनरल ने मालदीव से सैन्य संबंधों को और बढ़ाने पर चर्चा की है। मालदीव के राष्ट्रपति कार्यालय की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि मुइज्जू और मिर्जा के बीच चर्चा दीर्घकालिक द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर केंद्रित रही। मुइज्जू भारत का विरोध करके ही सत्ता में आए थे। उन्होंने भारत के विरुद्ध अकड़ भी खूब दिखाई थी, लेकिन जब भारतीय पर्यटकों ने मालदीव से मुंह मोड़ लिया तो उनकी अकड़ ढीली हो गई, क्योंकि मालदीव की अर्थव्यवस्था में बड़ा योगदान भारतीय पर्यटकों का है।

अब मुइज्जु और उनकी सरकार के मंत्री भारत का विरोध करने से बचते हैं। ऐसे में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय सेना के हाथों पिटे पाकिस्तान के साथ वे भारत विरोधी किसी गतिविधि का हिस्सा बनेंगे, यह मुश्किल है। वैसे तो सऊदी अरब से रक्षा समझौता करने के बाद पाकिस्तान के हुक्मरानों ने बड़े-बड़े दावे किए थे, लेकिन अफगानिस्तान से हुए संघर्ष में इस समझौते की हवा निकल गई थी।

भारत के विरोध में अंधे हो चुके मोहम्मद यूनुस 'चिकन नेक' के करीब द्वितीय विश्वयुद्ध की पुरानी पड़ चुकी हवाई पट्टियों के रखरखाव की जिम्मेदारी पाकिस्तान को सौंप सकते हैं।

सोशल फोरम

एक 'नींद' ने सुलझा दी गणित की गूढ़ समस्या

कोलंबिया विश्वविद्यालय में गणित के एक कोर्स के दौरान एक छात्र कक्षा में सो गया, जब उसकी नींद खुली, तो उसने देखा कि प्रोफेसर ने व्हाइट बोर्ड पर दो समस्याएं लिखी थीं। उसने सोचा कि ये होमवर्क है, इसलिए वह उन्हें अपनी नोटबुक में नोट करके घर ले गया।

ट्रवेल प्वाइंट

फेसबुक

जब उसने उन समस्याओं को हल करने की कोशिश की, तो वे उसे बेहद कठिन लगीं, लेकिन उसने हार नहीं मानी। घंटों लाइब्रेरी में बैठकर उसने संदर्भ पुस्तकों की मदद से अध्ययन किया और अंततः वह एक समस्या को हल करने में सफल हो गया, भले ही यह काफी चुनौतीपूर्ण था। अगले दिन कक्षा में प्रोफेसर ने जब होमवर्क के बारे में कुछ नहीं पूछा, तो वह चकित हुआ और खड़े होकर पूछा, "सर, आपने पिछले लेक्चर में दिए गए असाइनमेंट के बारे में कुछ क्यों नहीं पूछा?"

प्रोफेसर ने उत्तर दिया, "असाइनमेंट? वो तो मैंने केवल ऐसे उदाहरण के तौर पर लिखी थीं, जिन्हें अभी तक वैज्ञानिक हल नहीं कर पाए हैं।"

छात्र चौंक गया और बोला, "लेकिन मैंने उनमें से एक को हल कर लिया है! मैंने इस पर चार पेपर भी लिखे हैं।" उसकी इस उपलब्धि को बाद में मान्यता मिली और कोलंबिया विश्वविद्यालय में उसके लिखे चारों पेपर आज भी प्रदर्शित हैं।

इस छात्र का नाम था जॉर्ज डैंटजिग और यह समस्या Math Stack Exchange से ली गई थी। डैंटजिग ने यह सिद्ध किया कि Student's t-test के संदर्भ में, एकमात्र तरीका, जिससे हम ऐसी hypothesis testing बना सकते हैं, जो standard deviation से स्वतंत्र हो, वह है एक निरर्थक परीक्षण, जो हमेशा समान संभावना से रिजेक्ट या एक्सेप्ट करता है जो व्यावहारिक नहीं है।

यह कहानी हमें बताती है कि उन लोगों की बात मत सुनो, जो कहते हैं कि तुम कुछ नहीं कर सकते। आज की पीढ़ी अक्सर निराशा और नकारात्मकता से घिरी होती है। कुछ लोग जानबूझकर दूसरों के भीतर असफलता और हार का बीज बोते हैं, लेकिन तुम्हारे पास अपनी मंजिल पाने की ताकत है, बाधाओं को पार करने की शक्ति है और अपने सपनों को साकार करने का साहस है। बस खुद पर विश्वास रखो और लगातार प्रयास करते रहो।

सामयिकी

एसआईआर की जरूरत और सियासत के सवाल

चुनाव आयोग एसआईआर (मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण) का दूसरा चरण शुरू करने जा रहा है। बारह राज्यों में मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) होगा। बिहार के बाद अब चुनाव आयोग ने दूसरे चरण में उत्तर प्रदेश राजस्थान, मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ सहित देश के नौ राज्यों और तीन केंद्रशासित प्रदेशों में एसआईआर कराने जा रहा है। संबंधित राज्यों की मौजूदा वोटर लिस्ट फ्रीज हो गई है। एसआईआर प्रक्रिया शुरू हो गई है और सात फरवरी 2026 को खत्म होगी। इस दौरान चार नवंबर से चार दिसंबर तक बूथ लेवल ऑफिसर (बीएलओ) घर-घर जाकर फॉर्म भरवाने के साथ सत्यापन भी करेंगे। सात फरवरी 2026 को अंतिम मतदाता सूची जारी होगी। बीएलओ घर-घर जाकर जो गणना (एन्यूमरेशन) फॉर्म देंगे, इसमें मतदाता की हर डिटेल पहले से भरी होगी और फोटो लगानी होगी। इन राज्यों में 21 साल बाद एसआईआर की प्रक्रिया की जा रही है। इससे पहले 2002 से 2004 में एसआईआर किया गया था, इसलिए इस बार होने वाली पूरी प्रक्रिया में 2003 की वोटर लिस्ट को आधार बनाया जाएगा। चुनावी राज्य असम में अभी एसआईआर नहीं होगी। चुनाव आयोग के अनुसार असम के लिए अलग से रिवीजन ऑर्डर्स जारी किए जाएंगे और वहां अलग तारीख की घोषणा की जाएगी। अलबत्ता राजनीतिक दल मतदाता सूचियों पर लगातार सवाल उठा रहे हैं।

सुनील कुमार महला

स्वतंत्र पत्रकार

इस महाअभियान में एक दर्जन सूबों के करीब 51 करोड़ मतदाताओं के नाम की जांच की जाएगी और सात लाख से अधिक बूथ स्तरीय एजेंट (बीएलए) इस टास्क को अंजाम देंगे। इससे चुनाव आयोग को मतदाता सूची को अधिक सटीक और अद्यतन (अपडेट करने) बनाने में मदद मिलेगी। मृत, स्थानांतरित या दोहरी प्रविष्टियों (डबल एंट्रीज) को हटाकर पारदर्शिता बढ़ाई जानी है। एसआईआर अभियान एक मजबूत, निष्पक्ष और सहभागी लोकतंत्र की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। एक अच्छे लोकतंत्र की यही पहचान है कि उसकी चुनाव प्रक्रिया भरोसेमंद हो। एसआईआर के दौरान केंद्र या राज्य सरकार से जारी पेंशन का कागज सरकारी या स्थानीय निकाय, बैंक, पोस्ट ऑफिस, एलआईसी से जारी सर्टिफिकेट, जन्म प्रमाणपत्र, पासपोर्ट, शैक्षिक प्रमाणपत्र, स्थायी निवास प्रमाणपत्र, अधिकार प्रमाणपत्र, जाति प्रमाण पत्र, एनआरसी राज्य या स्थानीय निकाय का परिवार रजिस्टर, जमीन या आवास आवंटन सर्टिफिकेट, आधार जैसे दस्तावेज मान्य होंगे।

बिहार में जब चुनाव के लिए बहुत कम वक्त बचा था, तब चुनाव आयोग ने अचानक एसआईआर की शुरुआत क्यों कर दी! ऐसे सवाल उठाए गए थे। उस दौरान यह बात कही गई थी कि जिन राज्यों में विधानसभा चुनाव होने में पर्याप्त वक्त है, अगर वहां पहले एसआईआर कराया जाए तो यह देश व समाज के लिए बेहतर होगा। देश के विभिन्न राजनीतिक दलों और नागरिक समाज की भी समान जिम्मेदारी बनती है कि वे चुनाव प्रक्रिया को निष्पक्ष और पारदर्शी बनाने में अपना भरपूर सहयोग करें। जब सभी पक्ष अपनी भूमिका ईमानदारी से निभाएंगे, तभी लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी, इसलिए जब चुनाव आयोग पूरे देश में एक साथ चुनाव कराने की बात करता है, तो सबसे पहले उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसकी मौजूदा जिम्मेदारियां बिना किसी विवाद और संदेह के पूरी हों। तभी देश की जनता का भरोसा इस संवैधानिक संस्था पर और अधिक मजबूत होगा। देश में एसआईआर अच्छी बात है, लेकिन इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि ऐसे मतदाताओं के नाम सूची से नहीं हटने चाहिए, जो पात्र हैं।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक त्रिनाथ शुक्ला द्वारा 25/16-ए, जाप्लिंग रोड, लखनऊ-226001 (उ.प्र.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं.-42, निकट बद्री नगर,इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज, लखनऊ-226008 (उ.प्र.) से मुद्रित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- अनिल त्रिगुणायत***

0522-4008111 (कार्यालय), ईमेल-editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-50986/1989 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा)।

फिल्म निर्माता मुजफ्फर अली की फिल्म उमराव जान के एक गीत को अक्सर लोगों को गुनगुनाते हुए सुना जाता है। दिल चीज क्या है आप मेरी जान लीजिए, दीवार-ओ-दर को गौर से पहचान लीजिए। इसके सुर, लय और ताल के साथ ही दिल में स्पंदन और मानस पटल पर कई तस्वीरें एक साथ उभरती हैं। फिल्म में उस दीवार और दर का संबंध कहां से है यह अलग बात है, लेकिन अयोध्या (तत्कालीन फैजाबाद) से इस दीवार और दर का गहरा नाता है। फिल्म के कई सीन फैजाबाद में पूरब का ताजमहल कहे जाने वाले बहू बेगम के मकबरे की बारादरी में शूट किए गए थे। उम्मत-उज़-ज़ोहरा 'बहू बेगम' अवध के नवाब शुजाउद्दौला की पत्नी थीं। यह मकबरा बहू बेगम ने ही बनवाया था। वर्तमान में यह ऐतिहासिक इमारत क्षरण के दौर से गुजर रही है। खंडहर में बदल रही है। अवैध कब्जे हो रहे हैं। कहने के लिए यह पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है, लेकिन स्थिति ठीक नहीं है। कभी यह तत्कालीन फैजाबाद की शान थी। *-राजेंद्र कुमार पांडेय*

बदहाल हो रहा 'पूरब का ताजमहल'

बहू बेगम मकबरा का निर्माण

पूरब के ताज महल कहे जाने वाले बहू बेगम मकबरा का निर्माण अवध के तीसरे नवाब शुजाउद्दौला (जन्म 19 जनवरी 1732, निधन 26 जनवरी 1775) ने ईस्ट इंडिया कंपनी से 22-23 अक्टूबर 1764 को लड़ाई हारने, फैजाबाद को अपनी राजधानी बनाने और अकाल के दौर में लोगों को काम देने के लिए अपनी पत्नी उम्मत-उज-जोहरा (जिन्हें बाद में बहू बेगम के नाम से जाना गया) के लिए शुरू कराया था। यह गैर-मुस्लिम वास्तु कला का उत्कृष्ठ नमूना है। जानकार कहते हैं कि इसमें ईरान से आए कारीगर और सामानों के साथ देशी मजदूरों और सामान का प्रयोग किया गया। हालांकि नवाब इसे पूरा नहीं करा पाए। जिम्मेदारी उनके बेटे आसफुद्दौला के पास आई, लेकिन लखनऊ को राजधानी बनाने के बाद उसने इसे इसके हाल पर छोड़ दिया, तो बहू बेगम ने निर्माण को आगे बढ़ाया। निर्माण के दौरान ही उनकी भी मौत हो गई, लेकिन उन्होंने इसके लिए धनराशि की व्यवस्था पहले से कर रखी थी। इसी से उनके खास सिपहसालार दाराब अली खान ने 42 मीटर ऊंचे मकबरे का निर्माण पूरा कराया, जहां से पूरे शहर को देखा जा सकता है। शहर के मौलाना जफर अब्बास कुम्मी बताते हैं कि बहू बेगम मकबरे के साथ की इमारतें नवाबी शान-ओ-शौकत का बेजोड़ नमूना है। इसके निर्माण में चार सौ मजदूर आठ साल तक लगातार लगे रहे। नवाबी काल में पूरब के ताजमहल के साथ व्यवस्थित शहर बसाने के लिए कई निर्माण कराए गए। इनमें गुलाबबाड़ी के साथ चौक की ऐतिहासिक घंटाघर सहित इकदरें और तीन दरें है। चौक में ही सैकड़ों साल पुरानी मस्जिद हसन रजा खां भी है।

उत्तराखंड का रंगमंच
अपने ही रंगों की तलाश में

उत्तराखंड की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के साथ रंगकर्म की स्थिति उतनी ही चुनौतीपूर्ण है। थियेटर की दुनिया में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर पहचान बना चुके वरिष्ठ अभिनेता एवं रंगकर्मी श्रीश डोभाल कहते हैं कि प्रदेश में रंगकर्म आज भी प्रोत्साहन और विजन के अभाव में पिछड़ा हुआ है। पेश हैं उनसे किए गए चुनिंदा सवालों के जवाब-

थियेटर से निकलता है फिल्मों का रास्ता

थियेटर सिर्फ अभिनय नहीं, बल्कि समाज का दर्पण है। फिल्मों की ओर जाने का रास्ता थियेटर से होकर ही निकलता है। यहां अनुशासन, गहराई और मनुष्य की आत्मा तक पहुंचने की शक्ति मिलती है। अगर उत्तराखंड इसे अपना ले, तो यहां से भी अगली पीढ़ी के निर्मल पांडे जन्म ले सकते हैं। आज जब मंच के परदे उठते हैं और रोशनी चेहरे पर पड़ती है, तो यह केवल एक नाटक की शुरुआत नहीं होती, बल्कि एक सपने का जीवित होना होता है। हमारे जैसे कलाकार उस सपने को जीते हैं और याद दिलाते हैं कि उत्तराखंड का रंगमंच अभी अपने असली रंगों की तलाश में है।

हरीश उप्रेती करन
हल्द्वानी

थियेटर के विकास में सरकार को गंभीर होना होगा

राज्य सरकार को रंगकर्म को लेकर गंभीर होना चाहिए। रंगकर्मियों के लिए कम से कम एक पुरस्कार तो होना ही चाहिए, ताकि कलाकारों का मनोबल बढ़े। अच्छे ऑडिटोरियम हों और वे आसानी से उपलब्ध भी कराए जाएं, तभी मंच पर नई पीढ़ी आएगी। अगर सरकार और समाज थोड़ी और गंभीरता दिखाए तो उत्तराखंड का रंगमंच भी नई ऊंचाइयों को छू सकता है।

रंगऋषि श्रीष डोभाल का परिचय

15 भाषाओं में नाटकों का निर्देशन, कन्नड़ में आठ नाटकों का मंचन, 35 से अधिक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय निर्देशकों के साथ काम और छह नाटकों का अंतर्राष्ट्रीय समारोहों में सफल मंचन, श्रीश डोभाल का यह सफर, उन्हें सच्चा रंगऋषि बनाता है। राजस्थान के राज्यपाल द्वारा प्रदान किया गया गोल्डन अचीवर्स अवॉर्ड उनकी उपलब्धियों में चार चांद लगाता है।

रक्त अभिषेक नाटक में रंगकर्मी श्रीश डोभाल

नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एनएसडी) से 1985 में स्नातक रहे श्रीश डोभाल ने प्रकाश झा की परिणति समेत नेशनल अवॉर्ड जीत चुकीं तीन फिल्मों के अलावा आसमां कैसे-कैसे और खिलती कलियां जैसे दो दर्जन से अधिक टीवी धारावाहिकों के अलावा कई टेलीफिल्मों में अभिनय किया है। हाल ही में उन्हें रंगमंच में उल्लेखनीय योगदान के लिए बलराज साहनी नेशनल अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। वह राजकुमार राव अभिनीत 'बधाई दो' फिल्म में भी नजर आ चुके हैं। उनकी गढ़वाली फिल्म 'रैबार' 19 सितंबर को देश के प्रमुख शहरों और अमेरिका में रिलीज हुई है।

फिल्म और थियेटर में जमीन-आसमान का अंतर

फिल्म में गलती सुधारने का मौका होता है, थियेटर में नहीं। यहां दर्शक सामने होते हैं, उनकी सांसें आपके संवाद के साथ चलती हैं। एक चूक और पूरा अभिनय बेअसर। यही इसे कठिन भी बनाता है और खूबसूरत भी।

थियेटर से जीवन की आर्थिकी नहीं चलती

उत्तराखंड में कॉमर्शियल थियेटर का कोई ढांचा नहीं है। कलाकार अगर मंच से जुड़ा रहना चाहता है, तो उसे दूसरी आजीविका का सहारा लेना ही पड़ता है, जबकि महाराष्ट्र, गोवा या बंगाल में यही थियेटर जीवन जीने का साधन है।

चंबा की रामलीला में कभी बंदर तो कभी राक्षस बने

मेरे रंगमंच की शुरुआत चंबा की रामलीला से हुई, जहां कभी बंदर तो कभी रावण की सेना में राक्षस बन जाता था। उच्च शिक्षा के लिए देहरादून आया तो जागृति संस्था से जुड़ा और वहीं से रंगमंच की ओर झुकाव बढ़ा। 1981 में एनएसडी में चयनित होने के बाद खुद को पूरी तरह थियेटर को समर्पित कर दिया।

नवाब काल में चौक ही बाजार हुआ करती थी। शहर फैजाबाद के चौक इलाके की पहचान चारों ओर बने दरों (मेहराबदार दरवाजे) से भी होती है। इन्हीं दरों के बीच शहर का महत्वपूर्ण बाजार बसता था। इसे त्रिपोलिया कहा जाता था, जहां दुकानें होती थीं। अब इसे घंटाघर के नाम से जाना जाता है। यहां मौजूद दुकानों में अब भी कई सैकड़ों साल पुरानी हैं। इन दरों पर यूरोपियन शैली के बेलबूटे उकेरे गए हैं। यह दरें एक प्रकार से इंट्री गेट थे। बाजार को वास्तु और ज्योतिषीय गणना के हिसाब से अर्ध चंद्राकार बनाया गया है। दरों को बनाए जाने का मकसद रायल बाजार को सुरक्षा और भव्यता देना था। शाही परिवार से या फिर दूसरे लोग बाजार में दाखिले के लिए इसी गेट से अंदर जा सकते थे। उनकी जांच पड़ताल की जा सकती थी। दरों की नक्काशी भी अद्भुत थी। लखौरी ईंटों और चूना सुर्खी से बने इन दरों पर उकेरे गए बेलबूटे की नक्काशी आकर्षण का केंद्र थी। दरों के दोनों किनारों पर दो बड़ी मछलियों की तस्वीर उकेरी गई है। यह शाही चिह्न था। इनकी भी अलग एक कहानी है। स्वतंत्रता के बाद सरकार ने इसी से राज चिह्न लिए जाने की बात कही जाती है। दरों की नक्काशी और मछलियों की अपनी सांस्कृतिक पहचान है। अब तो इनका क्षरण हो रहा है, लेकिन किसी समय में यह शहर की शोभा थे। पिछले कुछ दिनों से पूर्वी तीनदरें की मरम्मत के साथ सजाया, संवारा और संरक्षित किया जा रहा है। वहां लगाए गए मजदूर बताते हैं कि इसे उसी पद्धति से बनाया जा रहा जैसे यह पहले बना था। उम्मीद है कि इसका आकर्षण फिर वापस लौटेगा।

शहर के बीचों-बीच स्थित घंटाघर

शहर के बीचों-बीच स्थित घंटाघर शहर की एक पहचान है। कभी घंटाघर के समय की आवाज पर शहर सोता और जागता था। घंटाघर को बलरामपुर स्टेट के राजा ने जार्ज फिफ्थ के भारत आने पर खुशनूदी में लगवाया था। इसकी तकनीक अद्भुत थी। इसे लंदन से मंगवाकर स्थापित किया गया था। कभी यह घड़ी पानी की लहरों से चलती थी। इसकी आवाज पूरे शहर को सुनाई पड़ती थी। बाद में यह अपनी आभा खोता चला गया।

नगर पालिका फैजाबाद के पूर्व चेयरमैन विजय गुप्ता बताते हैं कि घड़ी के चलने के लिए घंटाघर के नीचे एक कुंआ है। यहां से घिर्री और महीन तार से ऊपर की सुई व घंटे को जोड़ा गया था। कुएं के पानी में एक बार लहर उत्पन्न करने के बाद यह लगातार चलती और समय बताती रहती थी, लेकिन बाद में खराब हो गई। उन्होंने दो बार इसकी मरम्मत कराई। बरेली के कारीगर से इसे ठीक कराया गया। पहली बार कुएं के पानी से चली, लेकिन घिर्री और तार न मिलने के कारण दोबारा, उन्होंने इस पर इलेक्ट्रॉनिक घड़ी लगवाई। साल भर चलने के बाद यह भी बंद हो गई। बीच में इसकी मरम्मत की जिम्मेदारी अयोध्या विकास प्राधिकरण ने भी ली थी, लेकिन बाद में वापस कर दिया। इस समय इसकी जिम्मेदारी नगर निगम के पास है, लेकिन शहर की शान घंटाघर की घड़ी बंद पड़ी है।

खोता जा रहा है आकर्षण

नवाबी काल की इमारतें अब अवैध कब्जों और रखरखाव के अभाव में बर्बाद हो रही हैं। इनका आकर्षण खोता जा रहा है। चाहे वह गुलाबबाड़ी की दरें हों या फिर बहू बेगम के मकबरे का दर। बहू बेगम मकबरे के दरें में कहीं दफ्तर तो कहीं स्कूल चल रहे हैं। चौक के दरे तो जगह-जगह रगड़ से टूट गए। अवैध कब्जे और गंदगी, अव्यवस्था से यह अपने हाल पर आंसू बहा रहे हैं। मरम्मत और रंगरोगन के अभाव में इनकी आभा जाती रही।

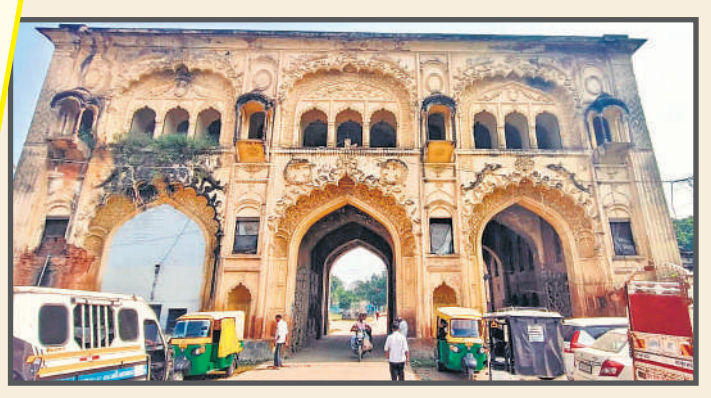

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	84,628.16	25,936.20
गिरावट	150.68	29.85
प्रतिशत में	0.18	0.11

सोना 1,21,800 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,45,000 प्रति किलो

अमृत विचार

लखनऊ, बुधवार, 29 अक्टूबर 2025

www.amritvichar.com

कारोबार

बिजनेस ब्रीफ

छठ पर 50 हजार करोड़ रुपये का कारोबार

नई दिल्ली। कन्फेडरेशन ऑफ़ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री एवं सांसद प्रवीन खंडेलवाल ने मंगलवार को छठ महापर्व पर देशभर में 50 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा कारोबार होने का दावा किया। खंडेलवाल ने कहा कि देश भर में संपन्न हुए छठ महापर्व ने जहां देश की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता का दर्शन कराया, वहीं बड़े स्तर पर आर्थिक प्रभाव भी दिखाई दिया। प्रधानमंत्री के स्वदेशी वस्तुओं को बेचने एवं ख़रीदने के आह्वान और जीएसटी की दरों में कटौती के साथ लोगों की आस्था और विश्वास का अद्भुत संगम इस बार छठ पर्व पर दिखाई दिया।

कार्स24 ने पेश की 30 दिन की रिटर्न गारंटी

नई दिल्ली। देश की अग्रणी ऑटोटेक कंपनी कार्स24 ने पुरानी कारों के व्यवसाय में जवाबदेही को नए सिरे से परिभाषित करते हुए 30-दिन की वापसी की घोषणा की है। कंपनी ने मंगलवार को बताया कि यदि कार्स24 से खरीदी गई कार खरीदार की अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतरती है तो वे 30 दिन या 999 किमी के भीतर उसे वापस कर सकते हैं। देश में पहली बार इस तरह का कोई ऑफर शुरू किया गया है। कंपनी ने कहा है कि कार खरीदना परिवारों के लिए बड़े वित्तीय फैसलों में से एक होता है और लोग यह आश्वासन चाहते हैं कि वे जो गाड़ी चला रहे हैं वह वास्तव में भरोसेमंद है, न केवल पहले दिन बल्कि बाद में भी।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में पर्याप्त कच्चा तेल: पुरी

हैदराबाद। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने मंगलवार को कहा कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की आपूर्ति फिलहाल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है और किसी एक स्रोत में बाधा आने पर वैकल्पिक आपूर्ति मार्ग भी मौजूद हैं। पुरी ने यहां एक संवाद सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि भारत परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों के निर्यात के मामले में तेजी से आगे बढ़ रहा है और पिछले वित्त वर्ष में 50 से अधिक देशों को 45 अरब डॉलर से अधिक मूल्य का परिष्कृत तेल निर्यात किया गया। वर्तमान में भारत तेल रिफाइनिंग क्षमता के मामले में दुनिया में चौथे स्थान पर है और तीसरे स्थान तक पहुंचने का लक्ष्य रखता है।

एमसीएक्स में तकनीकी खराबी से 4 घंटे देर से खुला बाजार, जांच शुरू

अनिश्चितता के बीच आपदा बहाली साइट पर स्थानांतरित करना पड़ा कामकाज

मुंबई, एजेंसी

मल्टी-कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) में मंगलवार को तकनीकी खराबी के कारण कामकाज बाधित रहा। इसके चलते एक्सचेंज में चार घंटे से ज्यादा देरी से कारोबार शुरू हो सका और कामकाज को आपदा बहाली साइट पर स्थानांतरित करना पड़ा।

मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) ने कहा कि उसकी सभी कारोबारी प्रणालियां अब सामान्य रूप से काम कर रही हैं और इस मामले की जांच प्राथमिकता के आधार पर शुरू कर दी गई है। एमसीएक्स ने शेयर बाजार को बताया, एक्सचेंज में एक तकनीकी खराबी के कारण मंगलवार को कारोबार शुरू होने में देरी हुई। कामकाज को आपदा बहाली (डीआर) साइट पर स्थानांतरित कर दिया गया और कारोबार दोपहर 1.25 बजे शुरू हुआ। कमोडिटी एक्सचेंज ने आगे कहा कि सभी कारोबारी प्रणालियां अब सामान्य रूप से काम कर रही हैं। एमसीएक्स ने बताया कि इस मामले की जांच प्राथमिकता के आधार पर शुरू कर दी गई है। एमसीएक्स ने बताया, हम कारण की पहचान करने और जरूरी सुधारात्मक उपाय लागू करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारे निष्कर्षों और की गई कार्रवाई के बारे में हम समय से सूचना देंगे। इससे पहले, तकनीकी खराबी के कारण एमसीएक्स पर व्यापारिक गतिविधियां चार घंटे से ज्यादा समय तक बाधित रहीं, जिससे सत्र की शुरुआत में कई बार देरी हुई और बाजार सहभागियों में अनिश्चितता पैदा हो गई।

चार बार घोषित किया समय, शुरू नहीं हुआ बाजार

एक्सचेंज ने शुरुआत में सुबह नौ बजे से शुरू होने वाले सत्र को सुबह 9:30 बजे, फिर 10:30 बजे, 11:49 और 12:35 बजे के लिए पुनर्निर्धारित किया था, और फिर दोपहर 1:20 से 1:24 बजे के बीच एक विशेष सत्र की घोषणा की, जिसके बाद दोपहर 1:25 बजे से सामान्य कारोबार शुरू हुआ। इस व्यवधान ने सोना, चांदी, कच्चा तेल और तांबा, जस्ता तथा एल्युमीनियम जैसी आधार धातुओं का कारोबार प्रभावित हुआ। बाजार खुलने के बाद इनकी कीमत में एकाएक गिरावट आई। एमसीएक्स के शेयर के भाव भी गिर गए।

सोना 4,100 रुपये गिरकर 1,21,800 पर, चांदी 6,250 रुपये टूटी

नई दिल्ली। अमेरिका-चीन व्यापार तनाव कम से सुरक्षित निवेश के विकल्प के रूप में मांग कम होने के कारण मंगलवार को राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में सोने की कीमतें 4,100 रुपये गिरकर 1,21,800 रुपये प्रति 10 ग्राम रह गईं और वैश्विक बाजारों में 4,000 डॉलर प्रति औंस से नीचे आ गईं। अखिल भारतीय सर्राफा संघ के अनुसार, सोमवार को सोने की कीमत 1,25,900 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुई थी। स्थानीय सर्राफा बाजार में, 99.5 प्रतिशत शुद्धता वाला सोना भी 4,100 रुपये गिरकर सभी करों सहित 1,21,200 रुपये प्रति 10 ग्राम रह गया, जो पिछले बंद भाव 1,25,300 रुपये प्रति 10 ग्राम पर था। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के वरिष्ठ विश्लेषक (जिंस) सौमिल गांधी ने कहा, मंगलवार को सोने में और गिरावट आई और सुरक्षित निवेश मांग में कमी से यह और बढ़ गई। बिकवाली तेज होने से सोने की कीमतें तीन सप्ताह के निचले स्तर पर आ गईं। इस गिरावट का कारण तकनीकी बिक्री है। चांदी की कीमतों में भी मंगलवार को 6,250 रुपये की भारी गिरावट दर्ज की गई और यह सभी करों सहित 1,45,000 रुपये किलोग्राम रह गई। संघ के अनुसार, चांदी की कीमत सोमवार को 1,51,250 रुपये किलोग्राम पर बंद हुई थी। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में हाजिर सोना दबाव में रहा और 94.36 डॉलर या 2.37 प्रतिशत की गिरावट के साथ 3,887.03 डॉलर प्रति औंस रह गया। पिछले सत्र में, यह 132.02 डॉलर या 3.21 प्रतिशत की गिरावट के साथ 4,000 डॉलर के स्तर से नीचे बंद हुआ था।

- **चीन-अमेरिका में व्यापार तनाव कम होने का असर**

शेयर बाजार में मुनाफावसूली, सेंसेक्स 151 अंक फिसला

- **एशियाई बाजारों में कमजोरी का असर, निफ्टी भी 30 अंक गिरा**

मुंबई। एशियाई बाजारों में कमजोरी के बीच मंगलवार को आईटी, टिकाऊ उपभोक्ता सामान और रियल्टी शेयरों में मुनाफावसूली से स्थानीय शेयर बाजार नुकसान के साथ बंद हुए। सेंसेक्स 151 अंक टूट गया जबकि निफ्टी को 30 अंक का नुकसान हुआ।

बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स उतार-चढ़ाव भरे कारोबार में 150.68 अंक यानी 0.18 प्रतिशत की गिरावट के साथ 84,628.16 अंक पर बंद हुआ। मजबूती के साथ सत्र की शुरुआत करने वाला सेंसेक्स कारोबार के दौरान एक समय 559.45 अंक तक टूटकर 84,219.39 अंक पर आ गया था।

एनएसई का 50 शेयरों वाला मानक सूचकांक निफ्टी 29.85 अंक यानी 0.11 प्रतिशत की गिरावट के साथ 25,936.20 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स की कंपनियों में ट्रेंट, आईसीआईसीआई बैंक, टेक महिंद्रा, बजाज फिनसर्व, महिंद्रा एंड महिंद्रा, पावर ग्रिड, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज और बजाज फाइनेंस के शेयरों में प्रमुख रूप से गिरावट रही। टाटा स्टील, लार्सन एंड टुब्रो, भारतीय स्टेट बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक के शेयर चढ़कर बंद हुए।

अमेजन 14,000 कॉरपोरेट नौकरियों में करेगी कटौती

सिएटल। ऑनलाइन खुदरा कंपनी अमेजन कृत्रिम मेधा (एआई) पर खर्च बढ़ाने के कारण करीब 14,000 कॉरपोरेट नौकरियों में कटौती करेगी।

अमेजन में 'पीपल एक्सपीरियंस एंड टेक्नोलॉजी' की वरिष्ठ उपाध्यक्ष बेथ गैलेटी ने मंगलवार को कर्मचारियों को भेजे संदेश में कहा, यह छंटनी नौकरशाही को कम करने एवं संसाधनों को स्थानांतरित करने के माध्यम से कामकाज को और भी मजबूत करने की दिशा में कदम है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हम अपने सबसे बड़े दांव पर निवेश कर रहे हैं जो हमारे ग्राहकों की वर्तमान एवं भविष्य की जरूरतों के लिए सबसे अधिक मायने रखता है।

घरेलू आर्थिक उत्पाद में सेवा क्षेत्र का 55% योगदान मगर रोजगार का सृजन कमजोर

नई दिल्ली, एजेंसी

- **नीति आयोग की रिपोर्ट, श्रमिकों का इन सेवाओं में कम वेतन**

देश के आर्थिक उत्पाद की वृद्धि का प्रमुख आधार बन चुके सेवा क्षेत्र ने 2024-25 में राष्ट्रीय सकल मूल्य संवर्धन (जीवीए) में लगभग 55 प्रतिशत का योगदान दिया है और अब धीरे धीरे अपेक्षाकृत पिछड़े राज्यों में सेवा कारोबार का विस्तार दिखने लगा है। नीति आयोग की ताजा रिपोर्ट 'भारत का सेवा क्षेत्रः रोजगार रूझानों और राज्य-स्तरीय सक्रियता पर अंतर्दृष्टि' में यह जानकारी दी गई है।

रिपोर्ट में सेवा कार्यबल का बहुआयामी विवरण प्रस्तुत किया गया है जो इस क्षेत्र के दोहरे चरित्र को उजागर करती है। सेवा क्षेत्र में एक तरफ आधुनिक, उच्च-उत्पादकता वाले सेवा कारोबार है जो वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी तो हैं, लेकिन इनमें रोजगार सृजन की क्षमताएं सीमित हैं। दूसरी ओर पारंपरिक सेवा क्षेत्र हैं जो बड़ी संख्या में श्रमिकों को अपने में समाहित करते हैं लेकिन ऐसी सेवाएं मुख्यतः अनौपचारिक और कम वेतन वाले कारोबार के रूप में बनी हुई हैं। सेवाओं के क्षेत्र में रोजगार की गुणवत्ता में सुधार उत्पादन वृद्धि से पीछे चल रहा है।

नीति आयोग के सीईओ बीवीआर सुब्रह्मण्यम द्वारा यहां जारी यह रिपोर्ट उत्पादन और रोजगार के व्यापक दृष्टिकोण से सेवा क्षेत्र का पहला समर्पित मूल्यांकन हैं जो समग्र रुझानों से आगे बढ़कर अलग-अलग और राज्य-स्तरीय रूपरेखा प्रस्तुत करती हैं। इस अवसर पर आयोग के सदस्य डॉ. अरविंद विरमानी और सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार डॉ. वी. अनंत नागेश्वरन केंद्र और राज्य सरकारों के वरिष्ठ अधिकारी, उद्योग संघों के प्रतिनिधि और शिक्षा जगत के सदस्य उपस्थित थे। रिपोर्ट में पाया गया है कि सेवा-आधारित विकास का प्रसार अब क्षेत्रीय रूप से अधिक संतुलित होता जा रहा है।

सिफारिश : अनुकूल रणनीति विकसित करें

रिपोर्ट में राज्य स्तर पर, स्थानीय क्षमताओं के आधार पर सेवाओं के कारोबार को प्रोत्साहित करने के लिए अनुकूलित रणनीतियां विकसित करने, संस्थागत क्षमता में सुधार करने, सेवाओं को औद्योगिक प्रणालियों के साथ एकीकृत करने और शहरी एवं क्षेत्रीय सेवा समूहों का विस्तार करने की सिफ़ारिश की गई है। आयोग की ओर से मंगलवार को जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार यह रिपोर्ट दर्शाती है कि सेवायें भारत में रोजगार वृद्धि और महामारी के बाद की स्थिति में सुधार का मुख्य आधार बनी हुई हैं ,फिर भी इनमें चुनौतियां कायम हैं।

नोएल टाटा समेत तीन ने मेहली मिस्त्री की ट्रस्टी के रूप में पुनर्नियुक्ति के खिलाफ किया मतदान

नई दिल्ली। टाटा ट्रस्ट्स के चेयरमैन नोएल टाटा और उनके करीबी माने जाने वाले दो अन्य प्रभावशाली न्यासियों ने मेहली मिस्त्री की ट्रस्टी के रूप में पुनर्नियुक्ति के खिलाफ मतदान किया है। इससे टाटा समूह की होल्डिंग कंपनी को नियंत्रित करने वाली परोपकारी इकाई में दरार और गहरी हो गई।

टाटा समूह के संरक्षक रतन टाटा का पिछले साल निधन होने के बाद नोएल टाटा को टाटा ट्रस्ट्स का प्रमुख नियुक्त किया गया था। मेहली मिस्त्री को दिवंगत रतन टाटा के करीबी माना जाता है। मामले से अवगत लोगों ने बताया कि टीवीएस मोटर कंपनी के मानद चेयरमैन वेणु श्रीनिवासन और पूर्व रक्षा सचिव विजय सिंह ने मंगलवार को मिस्त्री की न्यासी (ट्रस्टी) के रूप में पुनः नियुक्त किए जाने के खिलाफ मतदान किया। मिस्त्री का तीन साल का कार्यकाल समाप्त होने के बाद यह मतदान हो रहा था।

- **रतन टाटा के करीबी माने जाते हैं मेहली, खत्म हो चुका है कार्यकाल**

उन्होंने बताया कि हालांकि मिस्त्री के करीबी तीन अन्य न्यासी सिटीबैंक इंडिया के पूर्व सीईओ प्रमित झावेरी, मुंबई के वकील डेरियस खंबाटा और पुणे के समाजसेवी जहांगीर एच. सी. जहांगीर ने उनकी पुनर्नियुक्ति का समर्थन किया। यह विभाजन हाल ही में आम सहमति से संचालित दृष्टिकोण से एक स्पष्ट बदलाव का प्रतीक है।

नॉमिनी के बिना भी खाता खोलने से मना नहीं कर सकेंगे बैंक

मुंबई। बैंक खाता खोलने के पात्र लोगों को अब नॉमिनी का नाम देने के लिए बाध्य नहीं कर सकेंगे और न ही इसके लिए खाते के परिचालन पर किसी प्रकार का प्रतिबंध लगा सकेंगे। भारतीय रिजर्व बैंक ने मंगलवार को जमा खातों, सेफ डिपॉजिट लॉकर और बैंकों के पास सुरक्षित कस्टडी में रखे गए सामान के संबंध में नॉमिनी से जुड़े नए निर्देश जारी किए जो एक नवंबर से प्रभावी होंगे।

केंद्रीय बैंक ने 31 पुराने सर्कुलरों को समाप्त कर दिया है। उसने कहा है कि खाता खुलवाते समय बैंक ग्राहकों को नॉमिनेशन के फायदों के बारे में पूरी जानकारी देगा, लेकिन कोई ग्राहक बिना नॉमिनी के खाता खोलना चाहता है तो अन्य पात्रताएं पूरी करने की स्थिति में खाता खोला जाना चाहिए। नॉमिनेशन न होने के कारण कोई प्रतिबंध भी नहीं लगाया जाना चाहिए। बैंक ने कहा है कि खाता खोलते समय ग्राहक से भरवाए जाने वाले फॉर्म में नॉमिनेशन का कॉलम अनिवार्य है।

- **1 नवंबर से लागू होंगे आरबीआई की ओर से जारी नए निर्देश**

विनिर्माण क्षेत्र के दम पर सितंबर में चार प्रतिशत बढ़ा देश का औद्योगिक उत्पादन

नई दिल्ली, एजेंसी

देश का औद्योगिक उत्पादन (आईआईपी) विनिर्माण क्षेत्र के अच्छे प्रदर्शन के दम पर सितंबर में चार प्रतिशत बढ़ा है। मंगलवार को इस संबंध में आधिकारिक आंकड़े जारी किए गए हैं। औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) के संदर्भ में मापा गया औद्योगिक उत्पादन सितंबर, 2024 में 3.2 प्रतिशत बढ़ा था।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने अगस्त, 2025 के लिए औद्योगिक उत्पादन के वृद्धि के आंकड़ों को चार प्रतिशत के अस्थाई अनुमान से संशोधित कर 4.1 प्रतिशत कर दिया है। एनएसओ के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, विनिर्माण क्षेत्र का उत्पादन सितंबर 2025 में 4.8 प्रतिशत बढ़ा जबकि सितंबर 2024 में यह चार प्रतिशत बढ़ा था। खनन उत्पादन में 0.4 प्रतिशत की गिरावट आई जबकि एक साल पहले इसमें 0.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई थी। बिजली उत्पादन में सितंबर में 3.1 प्रतिशत वृद्धि हुई जबकि एक साल पहले इसी अवधि में इसमें 0.5 प्रतिशत हुई थी। वित्त वर्ष 2025-26 की अप्रैल-सितंबर अवधि के दौरान औद्योगिक उत्पादन में तीन प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि 2024-25 की पहली छमाही में 4.1 प्रतिशत रही थी। विनिर्माण क्षेत्र में 23 उद्योग समूहों में से 13 ने सितंबर, 2024 की तुलना में सितंबर, 2025 में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की।

- **सितंबर 2024 में हुई थी 3.2 प्रतिशत की वृद्धि**

अगले बजट में अपेक्षित कर बदलावों पर उद्योग जगत से सुझाव मांगे

नई दिल्ली। वित्त मंत्रालय ने एक फरवरी, 2026 को पेश होने वाले वित्त वर्ष 2026-27 के आम बजट में अपेक्षित कर बदलावों और कर अनुपालन में आसानी पर उद्योग जगत से सुझाव मांगे हैं। आम बजट से पहले व्यापार और उद्योग संघों को भेजे गए एक पारंपरिक संदेश में राजस्व विभाग की कर अनुसंधान इकाई ने उनसे 10 नवंबर तक अपने सुझाव भेजने को कहा है। ये सुझाव शुल्क संरचना, दरों में बदलाव और प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष करों के आधार को व्यापक बनाने, और अनुपालन को आसान बनाने से संबंधित हो सकते हैं।

आंकड़े क्षमता उपयोग में वृद्धि का संकेत, पर जोखिम भी बरकार

नई दिल्ली। औद्योगिक उत्पादन के सितंबर के आंकड़ों को देश की आर्थिक गतिविधियों की आगे की दिशा के बारे में एक मिलाजुला संकेत मानते हुए विशेषज्ञों ने मंगलवार को कहा कि ताजा आंकड़े औद्योगिक क्षमता के उपयोग में वृद्धि दर्शाने वाले हैं, लेकिन वैश्विक अर्थव्यवस्था की ओर से आर्थिक वृद्धि के लिए जोखिम बना हुआ है। रेटिंग एजेंसी क्रिसिल के मुख्य अर्थशास्त्री धर्मकीर्ति जोशी ने कहा कि सितंबर तिमाही में औद्योगिक वृद्धि दर जून तिमाही के 2 प्रतिशत की तुलना में सुधर कर 4.1 प्रतिशत हो गई लेकिन हमें बाहरी कारकों के कारण विकास में गिरावट का जोखिम दिखाई दे रहा है। जोशी ने सितंबर में ऊंचे शुल्क के कारण अमेरिका को हुए निर्यात में सालाना आधार पर 11.9 प्रतिशत की गिरावट का उल्लेख करते हुए कहा कि यदि उसके साथ व्यापार समझौता जल्द ही हो जाता है, तो इससे कुछ हद तक प्रभाव कम हो जाएगा।

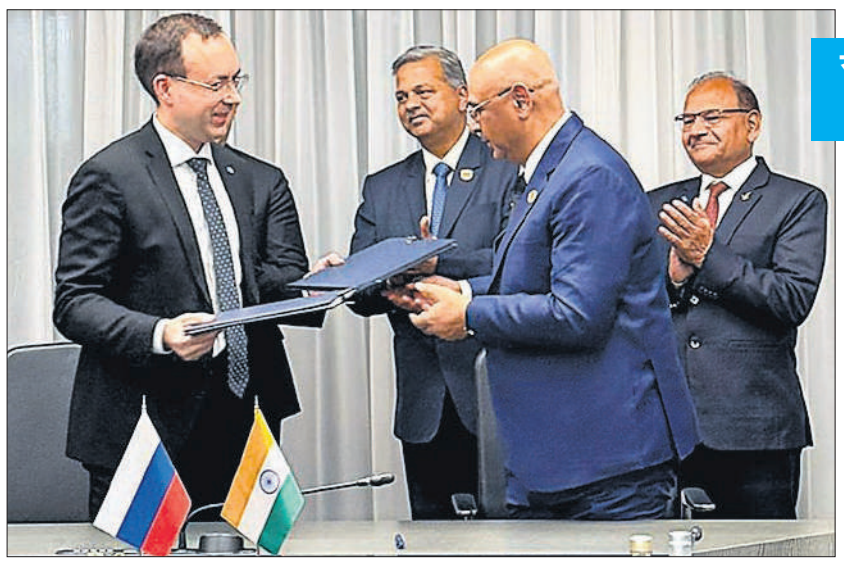

रूस के लिए विमान बनाएगी एचएएल

नई दिल्ली। भारत और रूस ने दो इंजन वाले 'नैरो-बॉडी' असैन्य विमान के निर्माण के लिए समझौता किया है। सरकारी कंपनी हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) ने एसजे-100 विमान के निर्माण के लिए रूसी सरकार के नियंत्रण वाली यूनाइटेड एयरक्राफ्ट कोऑपरेशन (यूएसी) के साथ यह समझौता किया है। समझौते पर सोमवार को मॉस्को में एचएएल के प्रभात रंजन और यूएसी के ओलेग बोगोमोलोव ने हस्ताक्षर किए। यह भारत में यात्री विमान के निर्माण की दिशा में पहली परियोजना है।

भारत का 2050 तक वैश्विक स्वच्छ ऊर्जा केंद्र बनने का इरादा: राष्ट्रपति

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मंगलवार को कहा कि वर्ष 2050 तक भारत न केवल अपने स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों को पूरा करेगा, बल्कि वैश्विक सौर ऊर्जा मांग के एकीकरण और नवाचार, विनिर्माण तथा ज्ञान के आदान-प्रदान का केंद्र बनने का लक्ष्य भी रखता है। राष्ट्रपति ने अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन के आठवें सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि जलवायु कार्रवाई और ग्रामीण समृद्धि के बीच तालमेल टिकाऊ वृद्धि की कुंजी है। भारत की नवीकरणीय ऊर्जा की स्थापित क्षमता में चौथे, पवन ऊर्जा में चौथे और सौर ऊर्जा उत्पादन में तीसरे स्थान पर मौजूद होने का जिक्र करते हुए मुर्मू ने कहा, यह हमारे मजबूत नीतिगत ढांचे और प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

उड़ानों में पावर बैंक के इस्तेमाल पर प्रतिबंध संभव

- **इंडिगो के विमान में आग लगने की घटना के बाद डीजीसीए ने शुरू की कवायद**

नई दिल्ली, एजेंसी

विमानन नियामक डीजीसीए वैश्विक व्यवहार का अध्ययन करने के बाद उड़ानों में पावर बैंक के इस्तेमाल पर कुछ हद तक प्रतिबंध लगा सकता है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी।

इंडिगो की एक उड़ान में 19 अक्टूबर को एक यात्री के पावर बैंक में आग लगने के बाद नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) उड़ानों में पावर बैंक के इस्तेमाल की जांच कर रहा है। अधिकारी ने बताया कि कुछ प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं, लेकिन पावर बैंक के इस्तेमाल पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाने की कोई योजना नहीं है। अधिकारी ने कहा कि वैश्विक व्यवहार पर विचार किया जा रहा है और उसके बाद कोई निर्णय लिया जाएगा।

दिल्ली हवाई अड्डे पर दीमापुर जाने वाले इंडिगो विमान में एक यात्री के पावर बैंक में आग लग गई थी। चालक दल ने आग बुझा दी थी। नागर विमानन मंत्री के राममोहन नायडू ने 25 अक्टूबर को कहा था कि डीजीसीए इस घटना की समीक्षा करेगा।

पायलटों का आग्रह, उड़ान ड्यूटी मानदंड लागू करने में न दें छूट

मुंबई। फेडरेशन ऑफ इंडियन पायलट्स (एफआईपी) ने मंगलवार को विमानन सुरक्षा नियामक डीजीसीए से आग्रह किया कि वह विमान चालक दल के लिए नई उड़ान ड्यूटी और आराम अवधि मानदंडों को लागू करने में एयरलाइन कंपनियों को कोई छूट न दें। एफआईपी ने कहा कि इस संबंध में छूट देने वाले किसी भी संचार या आदेश को तुरंत रद्द कर देना चाहिए। देश में 5,000 से अधिक पायलट का प्रतिनिधित्व करने का दावा करने वाले संगठन ने यह भी कहा कि अगर नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ऐसा करने में विफल रहता है तो वह कानूनी सहारा ले सकता है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने डीजीसीए को इन मानदंडों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया था।

भारत में बनाया जाएगा विमानन सुरक्षा केंद्र जांचकर्ताओं और पेशेवरों को देगा प्रशिक्षण

नई दिल्ली। विमान हादसों की जांच करने वाले अधिकारियों और विमानन पेशेवरों को वैश्विक मानकों पर प्रशिक्षण देने के लिए देश में एक राष्ट्रीय विमानन सुरक्षा केंद्र स्थापित किया जाएगा।

नागर विमानन सचिव समीर कुमार सिन्हा ने कहा कि विमानन सुरक्षा को मजबूत करने के लिए सरकार नियामकीय और जांच संबंधी भूमिकाओं में पेशेवरों की संख्या दोगुनी कर रही है। उन्होंने कहा, भारत क्षेत्र में अपनी तरह का पहला राष्ट्रीय विमानन सुरक्षा केंद्र स्थापित कर रहा है, जो विमान दुर्घटना के जांचकर्ताओं और विमानन पेशेवरों को प्रशिक्षित करेगा। यह हमारी दीर्घकालिक दृष्टि को दर्शाता है कि हम विश्वस्तरीय सुरक्षा ढांचा और मानव संसाधन तैयार करें।

सिन्हा ने एशिया-प्रशांत दुर्घटना जांच समूह की 13वीं बैठक के उद्घाटन सत्र में यह बात कही। यह बैठक पहली बार भारत में आयोजित हो रही है। उद्घाटन कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने 12 जून को हुए एयर इंडिया विमान हादसे में मारे गए 260 लोगों की स्मृति में दो मिनट का मौन रखा। इस हादसे की जांच विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो (एएआईबी) कर रहा है।

रूस से तेल खरीदना जारी रखेगा इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन

कॉरपोरेशन के अधिकारियों ने कहा- अमेरिकी प्रतिबंध तेल खरीदने पर नहीं बल्कि कुछ कंपनियों पर

नई दिल्ली, एजेंसी

इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (आईओसी) और अन्य भारतीय तेल कंपनियां रूस से कच्चे तेल की खरीद पूरी तरह बंद नहीं करेंगी क्योंकि हालिया प्रतिबंध केवल विशिष्ट रूसी आपूर्तिकर्ता के लिए हैं न कि तेल पर। यह ऐसी स्थिति है जो गैर-प्रतिबंधित संस्थाओं के माध्यम से प्रवाह जारी रखने की संभावना को खोलती है।

अधिकारियों ने बताया कि अब तक चार रूसी तेल कंपनियों पर प्रतिबंध लगाए जा चुके हैं, लेकिन भारत को सबसे बड़ी आपूर्तिकर्ता कंपनी रोसनेफ्ट जो लगभग 45 प्रतिशत तेल प्रवाह का प्रबंधन करती है, वह वास्तविक उत्पादक नहीं बल्कि एक 'एग्रीगेटर' है। रूस के क्षेत्रों से कच्चे तेल का एकत्रीकरण अन्य गैर-प्रतिबंधित संस्थाओं द्वारा किया जा सकता है, जिससे आपूर्ति जारी रह सकती है। अमेरिका के पिछले सप्ताह रूस के दो शीर्ष कच्चे तेल निर्यातकों पर प्रतिबंध लगाए जाने के बाद भारतीय रिफाइनरियों ने रूसी तेल के लिए कोई नया ऑर्डर नहीं दिया है। वे बदले हुए परिदृश्य का आकलन कर रहे हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि किसी भी अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धता में कोई त्रुटि न हो।

आईओसी के निदेशक (वित्त) अनुज जैन ने कहा, जब तक हम प्रतिबंधों का पालन कर रहे हैं, हम रूसी कच्चे तेल की खरीद बिल्कुल बंद नहीं करेंगे। रूसी कच्चे तेल पर प्रतिबंध नहीं है। प्रतिबंध संस्थाओं और आपूर्ति शृंखलाओं पर लगे हैं।

- **गैर प्रतिबंधित संस्थाओं के जरिए जारी रखा जा सकता है प्रवाह**

प्रतिबंध के बाद रूसी कंपनी ल्यूकऑयल विदेशी संपत्तियां बेचने की तैयारी में

फ्रैंकफर्ट। रूस की प्रमुख पेट्रोलियम कंपनी ल्यूकऑयल ने मंगलवार को कहा कि वह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की तरफ से लगाए गए नए प्रतिबंधों के जवाब में अपनी अंतरराष्ट्रीय परिसंपत्तियां बेचने जा रही है। ल्यूकऑयल ने बयान में कहा कि वह संभावित खरीदारों से बातचीत कर रही है और सौदे 21 नवंबर तक की 'रियायत अवधि' के भीतर पूरे कर लिए जाएंगे। हालांकि, जरूरत पड़ने पर कंपनी इस अवधि को बढ़ाने की मांग भी करेगी। ल्यूकऑयल की 11 देशों में स्थित तेल एवं गैस परियोजनाओं में हिस्सेदारी है। इसकी बुल्गारिया एवं रोमानिया में रिफाइनरी हैं और नीदरलैंड की एक रिफाइनरी में भी 45 प्रतिशत हिस्सेदारी है। इसके अलावा कंपनी के पास कई देशों में पेट्रोल पंप नेटवर्क भी है। ट्रंप ने 22 अक्टूबर को ल्यूकऑयल के साथ रूस की एक अन्य तेल कंपनी रॉसनेफ्ट पर भी नए प्रतिबंध लगाने की घोषणा की थी।

एयर इंडिया एक्सप्रेस के बेड़े में बढ़ेंगे विमान

मुंबई। एयरलाइन कंपनी एयर इंडिया के प्रबंध निदेशक आलोक सिंह ने मंगलवार को कहा कि उसकी किफायती सेवा एयर इंडिया एक्सप्रेस के बेड़े में अगले कैलेंडर वर्ष में 20 से 24 विमान शामिल किए जा सकते हैं।

एयर इंडिया के बेड़े में फिलहाल 110 विमान हैं जिनमें एयरबस 320/321, बोइंग 737 व 737 मैक्स शामिल हैं। एयर इंडिया एक्सप्रेस के पहले रेट्रोफिटेड विमान के प्रदर्शन के लिए यहां आयोजित एक कार्यक्रम में सिंह ने कहा, 'हम अगले कैलेंडर वर्ष में 20 से 24 विमान लाने की योजना बना रहे हैं।

हाईवे परियोजनाओं में ठेकेदारों अफसरों का ब्योरा होगा: गडकरी

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि राष्ट्रीय राजमार्गों पर यात्रा करने वाले जल्द संबंधित ठेकेदारों और अधिकारियों के नाम, पते और मोबाइल नंबर आदि विवरण प्राप्त कर सकेंगे। मंत्री ने राष्ट्रीय राजधानी में भारतीय उद्योग परिसंघ के एक कार्यक्रम में कहा कि इसका मकसद न केवल देश में हाईवे परियोजनाओं का प्रबंधन करने वालों, बल्कि अधिकारियों की जिम्मेदारी तय करना है। गडकरी का यह बयान एनएचएआई की उस घोषणा के बाद आया है, जिसमें कहा गया था कि वह यात्रियों को प्रासंगिक जानकारी और आपातकालीन हेल्पलाइन नंबर बताने को राष्ट्रीय राजमार्ग के विभिन्न हिस्सों पर क्यूआर कोड वाले साइनबोर्ड लगाएगा।

रक्षा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाएंगे भारत-यूएई

नई दिल्ली, एजेंसी

- यूएई के कमांडर मेजर जनरल सईद ने की द्विपक्षीय बैठकें

भारत और संयुक्त अरब अमीरात ने रक्षा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने, सैन्य संबंधों को मजबूत बनाने और क्षेत्रीय शांति एवं सुरक्षा के लिए साझा प्रतिबद्धता को दोहराया है। भारत यात्रा पर आए संयुक्त अरब अमीरात सेना के कमांडर मेजर जनरल यूसुफ़ मायुफ़ सईद अल हल्लामी की यहां दो दिन तक विभिन्न स्तर पर हुई बैठकों में दोनों पक्षों ने इस बारे में सहमति व्यक्त की।

मंगलवार को यहां एक आधिकारिक बयान में कहा गया है कि मेजर जनरल अल हल्लामी की यात्रा को दोनों देशों की सेनाओं के बीच दीर्घकालिक संबंधों को मज़बूत बनाने में महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जा रहा है। दो दिन की इस यात्रा के दौरान दोनों पक्षों के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच महत्वपूर्ण बैठकें हुईं जिससे रणनीतिक और रक्षा हितों के क्षेत्रों में द्विपक्षीय सैन्य सहयोग, आदान-प्रदान और सहभागिता बढ़ाने की नींव और मज़बूत हुई।

यात्रा के दौरान मेजर अल हल्लामी ने अपने भारतीय समकक्ष सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी के साथ कई विषयों पर उपयोगी चर्चा कीं। ये बातचीत दोनों सेनाओं के बीच सहयोग बढ़ाने और उसे मजबूत करने के तरीकों पर केंद्रित रही। इस यात्रा के कई परिणामों से दोनों देशों के बीच संबंधों और अधिक मजबूत हुए हैं। संयुक्त अरब अमीरात सेना के कमांडर को ऑपरेशन सिंदूर पर विस्तृत जानकारी दी गई और उन्हें महानिदेशक सूचना प्रणाली और सेना डिज़ाइन ब्यूरो द्वारा भारत की रक्षा क्षमताओं और भारतीय सेना के लिए एआई रोडमैप के बारे में भी जानकारी दी गई।

इससे पहले मेजर जनरल अल हल्लामी ने राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन का भी दौरा किया और रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव और डीआरडीओ के अध्यक्ष समीर वी. कामत से मुलाकात की। उन्होंने भारतीय रक्षा उद्योग के प्रतिनिधियों के साथ भी बातचीत की और ड्रोन और काउंटर ड्रोन सिस्टम, विस्फोटक, मिसाइल सिस्टम, आर्टिलरी सिस्टम और टैंकों के लिए प्रतिक्रियाशील कवच पर जानकारी ली।

विमान यात्रियों की सुरक्षा पर सवाल

इमरजेंसी लैंडिंग के बढ़ते मामले

अहमदाबाद में एयर इंडिया विमान हादसे के बाद देश में विमानों की इमरजेंसी लैंडिंग की घटनाएं बढ़ गई हैं। इस हादसे में 241 लोगों की मौत हो गई थी, हाल के दिनों में इमरजेंसी लैंडिंग कराने की कई घटनाएं हुईं। विमानों को अपने गंतव्य से बीच रास्ते ही लौटना पड़ा और इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी जिससे यात्रियों की जान सांसत में रही। जिससे विमानन क्षेत्र में सुरक्षा को लेकर सवाल उठने लगे हैं। ऐसे में विमानन कंपनियों को अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करके यात्रियों का भरोसा जीतना होगा। आइए जानते हैं विमानों को क्यों करनी पड़ती है इमरजेंसी लैंडिंग और इन घटनाओं को रोकने के लिए नियामक संस्था डीजीसीए और सरकार ने क्या उपाय किए।

डीजीसीए के नियम

- विमान की जांच : विमान की नियमित जांच करनी होती है।
- पायलट की ट्रेनिंग : पायलटों को इमरजेंसी लैंडिंग के लिए ट्रेनिंग देनी होती है।
- सुरक्षा प्रोटोकॉल : विमान में सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करना होता है।

नियमों का पालन करना जरूरी

इमरजेंसी लैंडिंग की घटनाएं विमानन क्षेत्र में एक बड़ा खतरा हैं। इन घटनाओं को कम करने के लिए विमान की नियमित जांच, पायलट की ट्रेनिंग, सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन और नई तकनीक का उपयोग करना होता है। डीजीसीए के नियमों का पालन करना भी जरूरी है।

इमरजेंसी लैंडिंग क्यों करनी पड़ती है?

- मौसम की खराबी : खराब मौसम के कारण विमान को इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ती है।
- चिकित्सा आपातकाल : विमान में किसी यात्री को चिकित्सा आपातकाल होने पर इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ती है।
- सुरक्षा खतरा : विमान में सुरक्षा खतरा होने पर इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ती है।
- तकनीकी खराबी : विमान में तकनीकी खराबी होने पर इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ती है।

कुछ प्रमुख घटनाएं

- एयर इंडिया की फ्लाइट एआई-379 को थाईलैंड के फुकेट इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी। विमान में बम होने की सूचना मिली थी।
- एयर इंडिया की फ्लाइट एआई-117 को बर्मिंघम में इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी। रैम एयर टर्बाइन के सक्रिय होने के बाद विमान लैंड हुआ।
- 25 अक्टूबर को एयर इंडिया की फ्लाइट एआई-469 ने नागपुर में इमरजेंसी लैंडिंग की, जिसमें 170 यात्री सवार थे। यह एक संदिग्ध बर्ड स्ट्राइक के कारण हुई थी।
- 22 अक्टूबर को इंडिगो की फ्लाइट 6ई-6961 ने वाराणसी में इमरजेंसी लैंडिंग की, जिसमें 166 यात्री सवार थे। यह मध्य-वायु ईंधन रिसाव के कारण हुई थी।
- हाल के दिनों में स्पाइसजेट की एक फ्लाइट ने दिल्ली में इमरजेंसी लैंडिंग की, जिसमें एक तकनीकी खराबी के कारण फ्लाइट को वापस लौटना पड़ा।
- 11 अक्टूबर को एयर इंडिया एक्सप्रेस की फ्लाइट ने तिरुचिरापल्ली में इमरजेंसी लैंडिंग की। यह हाइड्रोलिक फेलियर के कारण हुई थी।

वर्ल्ड ब्रीफ

एफएटीएफ सूची से द. अफ्रीका बाहर निकला

जोहानिसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका को करीब तीन साल बाद वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (एफएटीएफ) की संदिग्ध (ग्रे) सूची से बाहर निकलने में सफलता मिली है। वैश्विक धन शोधन और आतंकवादी वित्तपोषण निगरानी संस्था ने पिछले सप्ताह पेरिस में अपनी तीन दिवसीय पूर्ण बैठक के समापन के बाद इस निर्णय की घोषणा की। एफएटीएफ की संदिग्ध सूची में शामिल देशों पर कड़ी निगरानी रखी जाती है और ऐसे देशों को धन शोधन, आतंकवादी वित्तपोषण आदि का मुकाबला करने के लिए रणनीतिक कमियों को दूर करना होता है।

एलन मस्क ने शुरू किया ग्रोकिपीडिया

वाशिंगटन। एलन मस्क ने ग्रोकिपीडिया नामक एक क्राउडसोर्स्ड ऑनलाइन विश्वकोश शुरू किया है, जिसे वह विकिपीडिया के प्रतिद्वंद्वी के रूप में स्थापित करना चाहते हैं। सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में मस्क ने कहा कि ग्रोकिपीडिया डॉट कॉम संस्करण 0.1 अब लाइव है और वादा किया कि संस्करण 1.0 (शुरुआती संस्करण से) 10 गुना बेहतर होगा। कहा कि ग्रोकिपीडिया का लक्ष्य सत्य, संपूर्ण सत्य और केवल सत्य पेश करना है।

नौका पर अमेरिकी हमले में 14 की मौत

वाशिंगटन। अमेरिकी सेना ने पूर्वी प्रशांत क्षेत्र में सोमवार को कथित तौर पर नशीले पदार्थों से लदी नौकाओं को निशाना बनाकर तीन हमले किए, जिनमें 14 लोगों की मौत हो गई, जबकि एक व्यक्ति जीवित बच गया। अमेरिका के रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने मंगलवार को एक सोशल मीडिया पोस्ट में यह जानकारी दी। अमेरिका ने सितंबर की शुरुआत में पूर्वी प्रशांत क्षेत्र में नशीले पदार्थों की तस्करी में शामिल नौकाओं पर हमले शुरू किए थे। यह पहली बार है, जब उसने हमले की जानकारी दी है।

लाहौर बना दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर

लाहौर। एक निजी प्रौद्योगिकी कंपनी के आंकड़ों के मुताबिक पाकिस्तान का लाहौर शहर सोमवार को दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर रहा। एक सप्ताह में ऐसा दूसरी बार हुआ है, जहां धुंध का स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानदंडों से कहीं अधिक खतरनाक स्तर पर पहुंच गया। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की राजधानी लाहौर का अपना वायु गुणवत्ता सूचकांक नहीं है। आईक्यूएयर के नामक कंपनी के मुताबिक लाहौर का वायु गुणवत्ता सूचकांक खतरनाक स्तर 312 तक पहुंच गया।

पूर्वी एशिया में शांति, स्थिरता व आर्थिक समृद्धि को देंगे बढ़ावा

कुआलालंपुर घोषणा पत्र में आसियान के सदस्य देशों ने व्यक्त की वचनबद्धता

कुआलालंपुर, एजेंसी

पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के सदस्य देशों ने क्षेत्र में मतभेदों और विवादों का निपटारा अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के अनुसार शांतिपूर्ण तरीकों से करने तथा शांति, स्थिरता और आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देने के प्रति वचनबद्धता व्यक्त करते हुए मंगलवार को यहां कुआलालंपुर घोषणा पत्र को आम सहमति से मंजूरी दी। घोषणा पत्र में अंतर्राष्ट्रीय कानूनों पर आधारित बहुपक्षवाद को शांतिपूर्ण और समृद्ध विश्व का आधार बताया गया है। विदेश मंत्री डा. एस जयशंकर ने 20 वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

घोषणा पत्र में कहा गया है कि पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय कानून और उसे बढ़ावा देने में संवाद तथा सम्मेलन की भूमिका बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसमें कहा गया है कि हम आपसी समझ, सम्मान, विश्वास और मित्रता को बढ़ाने के महत्व को रेखांकित करते हैं साथ ही अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार शांतिपूर्ण तरीकों से मतभेदों और विवादों का निपटारा करने और क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समृद्धि को बनाए रखने, बढ़ावा देने और बनाए रखने के साझा हित को भी रेखांकित करते हैं। सदस्य देशों ने कहा है कि हम संयुक्त राष्ट्र चार्टर सहित अंतर्राष्ट्रीय कानून पर आधारित बहुपक्षवाद के प्रति पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन की दृढ़ प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि करते हैं जो शांतिपूर्ण और समृद्ध विश्व का अनिवार्य आधार है। विदेश मंत्री जयशंकर ने सोमवार को 20वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में भारत का राष्ट्रीय वक्तव्य दिया। इससे पहले, लक्सन के साथ अपनी बैठक के दौरान, जयशंकर ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं दीं। विदेश मंत्री ने 'एक्स' पर एक अन्य पोस्ट में कहा कि हमारे द्विपक्षीय सहयोग को आगे बढ़ाने और मुक्त एवं खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए उनकी (लक्सन की) प्रतिबद्धता का स्वागत है। जयशंकर ने अपने मलेशियाई समकक्ष हसन के साथ अपनी बैठक को गर्मजोशी से पूर्ण बताया और कहा कि दोनों विदेश मंत्रियों ने द्विपक्षीय सहयोग में प्रगति पर चर्चा की। विदेश मंत्री ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि उन्होंने म्यांमा की स्थिति पर भी चर्चा की। विदेश मंत्री ने कहा कि उन्होंने हसन को आसियान और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलनों की सफल मेजबानी के लिए शुभकामनाएं भी दीं। रविवार को, जयशंकर ने मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम के साथ वार्ता की थी। जयशंकर ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि हमारे द्विपक्षीय सहयोग और लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करने के उनके (इब्राहिम के) विचारों का मैं सम्मान करता हूं। मलेशिया आसियान के वर्तमान अध्यक्ष के रूप में कुआलालंपुर में समूह के वार्षिक शिखर सम्मेलन और संबंधित बैठकों की मेजबानी कर रहा है।

आसियान शिखर सम्मेलन के समापन पर अध्यक्षता हस्तांतरण के दौरान फिलीपींस के राष्ट्रपति मार्कोस को हथौड़ा सौंपते मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम।

अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के पालन पर भी जोर

घोषणा पत्र में यह भी कहा गया है कि पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन अंतर्राष्ट्रीय कानून को बढ़ावा देने और उसे कायम रखने के साथ-साथ पारस्परिक रूप से लाभकारी संबंधों के सिद्धांतों (बाली सिद्धांत) पर 2011 के पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन घोषणापत्र में निर्धारित सिद्धांतों को भी बढ़ावा देता रहेगा। सदस्य देशों ने कहा है कि पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन रचनात्मक, स्पष्ट तथा स्वतंत्र संवाद और विचार-विमर्श के साथ-साथ व्यावहारिक सहयोग के माध्यम के रूप में अपनी भूमिका को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है जिससे कि पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन की प्रक्रिया समय के साथ सकारात्मक और उपयोगी बनी रहे और आसियान तथा क्षेत्र के हितों को फायदा पहुंचे।

आर्थिक सहयोग बढ़ाएंगे सदस्य देश

घोषणा पत्र में आसियान की केन्द्रीय भूमिका पर जोर देते हुए कहा गया है कि आर्थिक चुनौतियों के विरुद्ध क्षेत्रीय लचीलापन सुनिश्चित करने और क्षेत्र में विकास के अंतर को कम करने के लिए पारस्परिक हित के क्षेत्रों में भागीदार देशों के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई है। सदस्य देशों ने सम्मेलन को सुदृढ़ बनाने के लिए भी अनेक कदम उठाने पर सहमति व्यक्त की।

नेतन्याहू ने गाजा पर हमले का आदेश दिया

तेल अवीव। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि उन्होंने सेना को गाजा में तुरंत शक्तिशाली हमले करने का आदेश दिया है, जिसके जवाब में हमास ने घोषणा की कि वह एक बंधक का शव लौटाने में देरी करेगा। इस घटनाक्रम को अमेरिका की मध्यस्थता वाले युद्ध-विराम के लिए एक नयी चुनौती के रूप में देखा जा रहा है। नेतन्याहू ने सेना के यह जानकारी देने के कुछ ही देर बाद गाजा पर फिर से हमले करने का आदेश दिया कि हमास ने दक्षिणी गाजा में इजराइली बलों पर गोलीबारी की है। इससे पहले, दोनों पक्षों में तब तनाव बढ़ गया था, जब नेतन्याहू ने कहा था कि हमास की ओर से रातोंरात लौटाए गए एक बंधक के अवशेष, लगभग दो साल पहले इजराइली सैनिकों द्वारा गाजा में बरामद किए गए एक बंधक के शव के हैं। नेतन्याहू ने अवशेषों की वापसी को अमेरिका की मध्यस्थता वाले युद्ध-विराम समझौते का स्पष्ट उल्लंघन करार दिया, जिसके तहत हमास को सभी इजराइली बंधकों के शवों को जल्द से जल्द लौटाना है।

केन्या में छोटा विमान क्रैश, 11 लोगों की मौत

नैरोबी, एजेंसी

- तटीय क्षेत्र क्वाले में हादसा, मृतकों में अधिकांश विदेशी पर्यटक

केन्या के तटीय क्षेत्र क्वाले में मंगलवार तड़के एक छोटे विमान के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से उसमें सवार 11 लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने बताया कि मृतकों में अधिकांश विदेशी पर्यटक शामिल हैं। अधिकारियों के मुताबिक, विमान 'मसाई मारा राष्ट्रीय अभयारण्य' जाते समय हादसे का शिकार हुआ। यह अभयारण्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय पर्यटन स्थल है।

विमानन कंपनी 'मोम्बासा एयर सफारी' ने एक बयान में कहा कि विमान में सवार जिन 11 लोगों की मौत हो गई, उनमें हंगरी के आठ व्यक्ति और दो जर्मन नागरिकों के अलावा केन्या निवासी एक पायलट शामिल है। बयान के अनुसार, दुर्घटना डायनी हवाई पट्टी से लगभग 40 किलोमीटर दूर एक पहाड़ी वन क्षेत्र में हुई। विमानन कंपनी ने इस बात की पुष्टि नहीं की कि विमान ने डायनी हवाई पट्टी से किस समय उड़ान भरी थी। उसने कहा कि उड़ान के समय पायलट संपर्क करने में विफल रहा और हवाई अड्डे के नियंत्रण टावर ने विमान का पता लगने से 30 मिनट पहले तक उससे संपर्क करने की कोशिश की थी।

एजेंसियों ने शुरू की हादसे की जांच

क्वाले काउंटी के आयुक्त स्टीफन ओरिंडे ने बताया कि जांच एजेंसियां स्थानीय समयानुसार सुबह साढ़े पांच बजे हुई दुर्घटना के कारणों की जांच कर रही हैं। उस समय तटीय केन्या में भारी बारिश हो रही थी। इसके पहले, केन्या के नागरिक उड्डयन प्राधिकरण ने कहा था कि विमान में 12 लोग सवार थे। डायनी से समुद्र तट के पश्चिम में स्थित मासाई मारा राष्ट्रीय अभयारण्य तक विमान से पहुंचने में दो घंटे का समय लगता है। यह अभयारण्य बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है, क्योंकि यहां तंजानिया के सेरेन्गेटी से हर साल बड़ी संख्या में 'वाइल्डबीस्ट' प्रवास के लिए पहुंचते हैं। हिंद महासागर के किनारे केन्या के सफेद रेत वाले समुद्र तट दुनिया भर के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

भारतीय ने विमान में दो किशोरों को मारा चाकू

न्यूयॉर्क। शिकागो से जर्मनी जा रही एक उड़ान में 28 वर्षीय एक भारतीय ने कांटे वाले चम्मच से दो किशोरों पर वार किया और एक सह-यात्री को थप्पड़ मारा। मैसाचुसेट्स जिला के अमेरिकी अटॉर्नी कार्यालय ने सोमवार को बताया कि यह घटना शनिवार को लुफ्थांसा की एक उड़ान में हुई, जिसे घटना के बाद बोस्टन लोगान अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा ले जाना पड़ा। शिकायत के अनुसार, प्रणीत कुमार उसिरिपल्ली ने 17 वर्षीय एक किशोर यात्री के कंधे पर धातु के कांटा (फोर्क) से वार किया तथा फिर 17 वर्षीय एक और यात्री के सिर के पिछले हिस्से पर वार किया, जिससे उसके सिर में चोट आई। उसिरिपल्ली को 25 अक्टूबर को गिरफ्तार किया गया था और बाद में बोस्टन में संघीय अदालत में पेश किया जाएगा।

तुर्किये में भूकंप से इमारतें ढहीं, 22 घायल

अंकारा, एजेंसी

- रिक्टर स्केल पर 6.1 रही तीव्रता, जमीन से 5.99 किमी गहराई

पश्चिमी तुर्किये में सोमवार को 6.1 तीव्रता का भूकंप आने से कम से कम तीन इमारतें ढह गईं। अधिकारियों ने बताया कि जो इमारतें ढही हैं, वे पूर्व में आए एक भूकंप के कारण पहले ही क्षतिग्रस्त थीं। आपदा एवं आपातकालीन प्रबंधन एजेंसी (एएफएडी) के अनुसार, स्थानीय समयानुसार रात 10 बजकर 48 मिनट पर आए 6.1 तीव्रता के इस भूकंप का केंद्र बालिकेसिर प्रांत के सिंदिरगी शहर में जमीन से 5.99 किलोमीटर की गहराई में था। भूकंप के बाद आए कई झटके इस्तांबुल और आसपास के बर्सा, मनीसा और इजमिर प्रांतों में महसूस किए गए। देश के गृह मंत्री अली येरलिकाया ने बताया कि सिंदिरगी में कम से कम तीन खाली इमारतें और दो मंजिला एक दुकान ढह गई। ये इमारतें पहले आए भूकंप में क्षतिग्रस्त हो चुकी थीं। बालिकेसिर के गवर्नर इस्माइल उस्ताओग्लू ने बताया कि भूकंप के कारण 22 लोग घायल हो गए।

पूर्वी नेपाल में आया हल्का भूकंप

काठमांडू। पूर्वी नेपाल के कोशी प्रांत के संखुवासभा जिले में मंगलवार को 4.3 तीव्रता का भूकंप आया। अधिकारियों ने बताया कि इससे किसी भी तरह के नुकसान की तत्काल कोई खबर नहीं मिली है। राष्ट्रीय भूकंप निगरानी एवं अनुसंधान केंद्र के अनुसार भूकंप काठमांडू से 225 किलोमीटर पूर्व में तिब्बत सीमा के पास किमाथांगका क्षेत्र के आसपास सुबह 7:32 बजे दर्ज किया गया।

ट्रंप ने अमेरिका को बताया जापान का सबसे मजबूत सहयोगी

तोक्यो, एजेंसी

- जापान की नई प्रधानमंत्री साने ताकाइची की ट्रंप ने की प्रशंसा

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मंगलवार से अपनी व्यस्त एशिया यात्रा की शुरुआत में जापान की प्रधानमंत्री साने ताकाइची से मुलाकात की और दोनों देशों को सबसे मजबूत स्तर पर सहयोगी करार दिया। वह जापानी प्रधानमंत्री को अमेरिकी विमानवाहक पोत पर भी ले गए जहां उन्होंने अमेरिकी सैनिकों से बातचीत की।

ट्रंप एशिया में अमेरिका के सबसे मजबूत सहयोगियों में शामिल जापान की यात्रा कर रहे हैं, फिर भी उनकी यात्रा के दौरान कई बातों को लेकर अनिश्चितता की स्थिति है। कुछ ही दिन पहले देश की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं साने ताकाइची को अपने देश के आर्थिक हितों की रक्षा करते हुए ट्रंप के साथ अपने रिश्ते मजबूत करने होंगे।

ट्रंप एक व्यापार समझौते के तहत 550 अरब अमेरिकी डॉलर का जापानी निवेश हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं। ट्रंप ने मंगलवार को ताकाइची मुलाकात की और उनसे हाथ मिलाया। अमेरिकी राष्ट्रपति ने ताकाइची की तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने बहुत मजबूती से हाथ मिलाया। ताकाइची ने बताया कि जापान अगले साल अमेरिका की 250वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में वाशिंगटन को चेरी के 250 पेड़ देगा और चार जुलाई के इस समारोह के लिए अकिता प्रांत से आतिशबाजी भी करेगा।

नोबेल के लिए ट्रंप को नामित करेंगी ताकाइची

वाशिंगटन। व्हाइट हाउस का कहना है कि जापान की नई प्रधानमंत्री सनाई ताकाइची ने अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को बताया है कि वह उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित कर रही हैं। ट्रंप को प्रभावित करने की चाहत रखने वाले विदेशी नेताओं के बीच ऐसा करना एक आम बात हो गई है, और हाल के महीनों में कई नेताओं ने उनके नामांकन का समर्थन किया है - या कम से कम ऐसा करने का वादा किया है। ट्रंप की इस समय जारी एशिया यात्रा में सोमवार को कंबोडियाई प्रधानमंत्री हुन मानेट ने भी उन्हें नामांकित किया।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 29 अक्टूबर, बुधवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास-कार्तिक, पक्ष-शुक्ल पक्ष, सप्तमी 09.23 तक तत्पश्चात अष्टमी।

आज का पंचांग

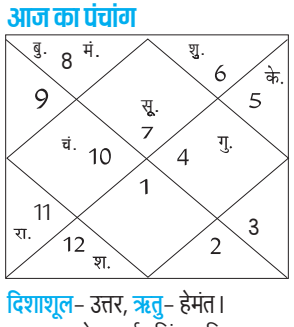

दिशाशूल- उत्तर, ऋतु- हेमंत।
चन्द्रबल- मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर, मीन।
ताराबल- भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती।
नक्षत्र- उत्तराषाढ़ा 17.29 तक तत्पश्चात श्रवण।

मेष — आज आपके साहस और आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। किसी बड़ी समस्या से आपको छुटकारा मिल सकता है। अधीनस्थ कर्मचारी आपसे अत्यंत प्रसन्न रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति सबल रहेगी। विदेश से नौकरी के अवसर मिलने के योग बन रहे हैं।

वृष — आज आपनी वाणी में अत्यंत मिठास रहेगी। अध्यात्मिक विषयों में आप रुचि लेंगे। दूर के रिश्तेदारों से मुलाकात हो सकती है। कार्यक्षेत्र में आपको बड़ा पद दिया जा सकता है। नए प्रोजेक्ट्स को लेकर आप अत्यधिक सक्रिय रहने वाले हैं।

मिथुन — आज भाग्य का साथ न मिलने से आपके काम प्रभावित हो सकते हैं। यात्रा के दौरान बड़ी परेशानियां खड़ी हो सकती हैं। शरीर में थकावट महसूस होगी। लेन-देन में त्रुटि होने के कारण आर्थिक नुकसान हो सकता है।

कर्क — आज व्यवसाय में बड़े अनुबंध हो सकते हैं। धन कमाने के नए स्रोत निर्मित हो सकते हैं। अविवाहित लड़कियों का विवाह तय हो सकता है। अपनी कार्यप्रणाली में अपेक्षित सुधार कर लें। विद्यार्थियों को उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश मिल सकता है।

सिंह — आज प्रेमी जन के साथ पर्यटन की योजना बना सकते हैं। सुबह काम का तनाव रहेगा, लेकिन शाम तक आप काफी शांत मूड में आ जायेंगे। बीमार लोगों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। पारिवारिक कार्यों को लेकर भागदौड़ करनी पड़ सकती है।

कन्या — आज दिन काफी अच्छा रहेगा। व्यापार के नए विचार आपके मन में पूरे दिन आते रहेंगे। दर्शन और साहित्य के प्रति आप अत्यंत आकर्षित रहेंगे। भविष्य को लेकर अत्यधिक जागरूक रहेंगे। सरकारी नौकरी कर रहे लोगों पर काम का दबाव कम होगा।

तुला — आज आपका मन अत्यंत प्रसन्न रहने वाला है। नए ज्ञान को सीखने का प्रयास करेंगे। धन की कमी के कारण आपके काम रुक सकते हैं। विद्वान लोगों का सानिध्य प्राप्त होगा। कार्यक्षेत्र में अपनी छवि को लेकर चिंतित रहेंगे।

वृश्चिक — आज आपकी कोई इच्छा पूरी हो सकती है। सामाजिक कार्यों में आप भाग लेंगे। आपका स्वास्थ्य बेहतर रहेगा। दिखावे की प्रवृत्ति से आपको बचना चाहिए। नए काम की शुरुआत करने के लिए दिन अत्यंत शुभ है। कारोबार को लेकर यात्रा कर सकते हैं।

धनु — आज आप लोगों की सहायता करने के लिए उधार दे सकते हैं। गुप्त शत्रु आपका अहित करने का प्रयास करेंगे। आपके कार्यों से परिजन नाराज हो सकते हैं, लेकिन किंतु आपको उनसे झगड़ने के बजाय उन्हें अपनी बातें मनानी चाहिए।

मकर — आज किसी मांगलिक समारोह में सम्मिलित होने की संभावना है। छात्रों का पढ़ाई में प्रदर्शन बहुत शानदार रहेगा। वैचारिक तनाव होने की संभावना है। अजनबियों पर अधिक विश्वास न करें। जीवनसाथी आपके व्यवहार से प्रसन्न रहेगा।

कुंभ — आज व्यापार को लेकर बड़ी योजना बनाने से बचें। इष्ट मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। बढ़ते खर्चों को नियंत्रित करने के लिए आपको प्रयास करना चाहिए। आपको कार्यक्षेत्र में अनुशासनहीन व्यवहार से बचना चाहिए।

मीन — आज किसी मित्र के साथ गंभीर विषय पर चर्चा कर सकते हैं। परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। इंटरव्यू आदि में सफलता मिलने के योग बन रहे हैं। अपनी प्रतिष्ठा के कारण आप अत्यंत लोकप्रिय रहेंगे। बच्चों के साथ अच्छा समय बिताएंगे।

सुडोकू-144

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

	1				2	3		
4					1			
6						1		
	8			5				
	2	6						
	3			4				
		1	6					
		7	9					
							4	

सुडोकू - 143 का हल

5	7	1	4	3	9	2	8	6
3	6	9	7	2	8	4	1	5
2	4	8	5	6	1	7	3	9
4	8	3	9	1	7	6	5	2
1	9	5	2	8	6	3	7	4
6	2	7	3	5	4	8	9	1
7	1	4	6	9	3	5	2	8
8	5	6	1	7	2	9	4	3
9	3	2	8	4	5	1	6	7

रोहित ने एक और शतक लगाया जबकि कोहली ने भी रन बनाए। मैं उनके आगे की रणनीति का इंतजार कर रहा हूं। अगर आप क्रिकेट के प्रशंसक हैं तो इन खिलाड़ियों का जश्न मनाने का यही सही समय है।

-एबी डिविलियर्स
पूर्व कप्तान, दक्षिण अफ्रीका

स्टेडियम

लखनऊ, बुधवार 29 अक्टूबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

भारत की महिला टीम को कजाकिस्तान ने बराबरी पर रोका

नई दिल्ली : भारत की अंडर-20 महिला टीम ने मंगलवार को कजाकिस्तान के शिमकेंट में बीआईआईके स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में दूसरे और अंतिम मैत्री मैच में कजाकिस्तान अंडर-19 के खिलाफ 1-1 से ड्रॉ खेला। दोनों गोल दूसरे हाफ में किए गए। एडेलिया बेक्कोझिना ने 47वें मिनट में मेज़बान टीम को बढ़त दिलाई, जबकि पूजा ने 55वें मिनट में इस दौरे का अपना दूसरा गोल करके स्कोर बराबर कर दिया। भारतीय टीम ने अगले साल होने वाले अंडर-20 महिला एशिया कप की तैयारी के लिए यह दौरा किया था, जिसमें उसने दो मैत्री मैच खेले। भारत ने शनिवार को पहला मैच 3-2 से जीता था।

डब्ल्यूटीटी फाइनल्स के लिए दीया-मानुष ने किया क्वालीफाई

नई दिल्ली : दीया चितले और मानुष शाह की जोड़ी ने मिश्रित युगल वर्ग में डब्ल्यूटीटी फाइनल्स के लिए क्वालीफाई किया और ऐसा करने वाले वे पहले भारतीय टेबल टेनिस खिलाड़ी बने। डब्ल्यूटीटी फाइनल्स हांगकांग 2025 का आयोजन 10 से 14 दिसंबर तक किया जाएगा। इस के साथ वैश्विक डब्ल्यूटीटी सीरीज का समापन होगा। इसमें सिर्फ शीर्ष रैंकिंग वाले खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। पुरुष और महिला एकल में शीर्ष 16 जबकि युगल वर्ग में शीर्ष आठ टीम हिस्सा लेंगी। टूर्नामेंट की कुल इनामी राशि 13 लाख डॉलर होगी।

इनडोर व रिले के लिए भारत ने लगाई बोली

नई दिल्ली : भारत ने महाद्वीपीय और वैश्विक प्रतियोगिताओं के आयोजन के अपने प्रयासों के तहत 2028 एशियाई इनडोर एथलेटिक्स चैंपियनशिप और 2026 एशियाई रिले की मेजबानी के लिए बोलियां पेश की हैं। भारत अगर मेजबानी हासिल कर लेता है तो यह पहली बार होगा जब देश इन दो प्रतियोगिताओं की मेजबानी करेगा।

कर्नाटक क्रिकेट संघ के चुनाव 30 नवंबर को

बेंगलुरु : कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ (केएससीए) के चुनाव 30 नवंबर को होंगे। संघ के मुख्य कार्यकारी अधिकारी शुभेंदु घोष ने मंगलवार को यहां यह घोषणा की। रघुराम भट्ट की अगुवाई वाली समिति का कार्यकाल 30 सितंबर को खत्म हो गया था और चुनाव की तारीख की घोषणा में देरी से भ्रम बना हुआ था। केएससीए के सीईओ घोष ने ईमेल के जरिए बताया कि 14 अक्टूबर 2025 को हुई बैठक में तय हुआ था और 25 अक्टूबर 2025 को हुई बैठक में दोहराया गया था, केएससीए के चुनाव रविवार, 30 नवंबर को होंगे।

6 भारतीय मुक्केबाज एवाईजी के फाइनल में

मनामा (बहरीन) : भारतीय मुक्केबाजों ने मंगलवार को युवा एशियाई खेलों (एवाईजी) में शानदार प्रदर्शन किया। इस दौरान छह मुक्केबाजों ने फाइनल में प्रवेश कर देश के लिए पदक पक्के किए। कई बैडमिंटन खिलाड़ी भी आगे बढ़ने में सफल रहे। भारत की 15 वर्षीय खुशी चंद ने मंगोलिया की अल्तानज़ुल अल्तांगदास को हराकर लड़कियों के 46 किग्रा वर्ग के स्वर्ण पदक मुकाबले में जगह पक्की की। अब वह गुरुवार को चीन की चेन फांग-यू से भिड़ेंगी। 54 किग्रा वर्ग में चंद्रिका ने कजाखस्तान की रमीना मखानोवा को हराया है।

नई ऊर्जा और रणनीति के साथ खेलेगा भारत

पांच टी-20 मैचों की श्रृंखला : कप्तान सूर्यकुमार यादव के प्रदर्शन पर रहेंगी नजरें

कैनबरा, एजेंसी

पिछले कुछ समय से रन बनाने के लिए जूझ रहे भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बुधवार को यहां होने वाले पहले टी-20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच में फॉर्म में लौटने की कोशिश करेंगे। दोनों टीम ने अपने गत 10 टी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों में से आठ जीते हैं और एक-एक मैच हारे हैं, इसलिए मुकाबला बराबरी का होने की उम्मीद है। भारत का एक मैच टाई रहा, जबकि ऑस्ट्रेलिया का एक मैच बारिश की भेंट चढ़ गया था।

सूर्यकुमार का रन नहीं बना पाना टीम के लिए चिंता का विषय हो सकता है लेकिन अन्य खिलाड़ियों ने अब तक अच्छा प्रदर्शन किया है और वे ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भी बेहतर खेल दिखाने को प्रतिबद्ध होंगे। सूर्यकुमार के कप्तान बनने के बाद भारतीय टीम ने निर्भीक क्रिकेट खेलने को प्राथमिकता दी है। यही वजह है कि उनकी कप्तानी में भारत ने अब तक जो 29 मैच खेले हैं उनमें से 23 में जीत मिली है। किसी भी कीमत पर आक्रामकता बनाए रखना और सूर्या के नेतृत्व कौशल के दम पर भारत ने सभी द्विपक्षीय श्रृंखलाओं में जीत हासिल की है और वह हाल में एशिया कप जीतने में भी सफल रहा था। ऑस्ट्रेलिया श्रृंखला अगले साल की शुरू होने वाले टी-20 विश्व कप के लिए भारत की वास्तविक तैयारी की शुरुआत है, जिसमें उसे 15 मैच खेलने हैं। लेकिन यह कहा जा सकता है कि इस श्रृंखला के परिणाम का कोई बड़ा प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड के खिलाफ अगले 10 मैच घरेलू परिस्थितियों में खेले जाएंगे। अच्छी बात यह है कि विश्व कप भी इसी तरह की परिस्थितियों में आयोजित होगा।

मुख्य कोच गौतम गंभीर ने सूर्या का खुलकर समर्थन किया और उनका मानना है कि कप्तान का लगातार कम स्कोर पर आउट होना चिंता का विषय नहीं है। सूर्यकुमार हालांकि बड़ी पारी खेलने के लिए बेताब होंगे। सूर्यकुमार ने 2023 में 18 पारियों में 156 के स्ट्राइक रेट से 733 रन बनाए थे, जिसमें दो शतक और पांच अर्धशतक थे। उन्होंने 2024 में 151 के स्ट्राइक रेट से 450 से थोड़ा कम रन बनाए, लेकिन 2025 में अब तक सूर्या 10 पारियों में 11 रन प्रति मैच की औसत से 100 रन ही बना पाए हैं। उनका स्ट्राइक रेट 105 से अधिक है, जिससे यह पता चलता है कि उन्हें रन बनाने में संघर्ष करना पड़ा है। एशिया कप में शानदार प्रदर्शन करने वाले सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा के लिए ऑस्ट्रेलियाई पिचों पर अतिरिक्त उछाल से निपटना नई चुनौती होगी और इसलिए कप्तान का योगदान और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। मनुका ओवल की पिच पर उछाल होने से सूर्या को अधिकतम लाभ हासिल करने का मौका मिलेगा, लेकिन जोश हेजलवुड उनके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। भारतीय गेंदबाजी आक्रमण की बात करें तो जसप्रीत बुमराह की मौजूदगी और वरुण चक्रवर्ती की चतुराई महत्वपूर्ण कारक होंगे। वरुण, कुलदीप यादव और अक्षर पटेल के 12 ओवर तथा बुमराह और अर्शदीप के शुरुआती स्पेल ट्रेविस हेड और मिशेल मार्श के खिलाफ महत्वपूर्ण होंगे। सभी की निगाहें ऑस्ट्रेलिया के नए टी-20 स्टार मिशेल ओवेन पर होंगी, जिन्होंने पिछले साल पंजाब किंग्स के लिए मैच खेला था। ओवेन ने एडिलेड में भारत के खिलाफ वनडे मैच में शानदार प्रदर्शन किया था, लेकिन स्पिन गेंदबाजों के सामने उनकी परीक्षा होगी।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पावरप्ले अहम, बुमराह साबित होंगे उपयोगी : सूर्यकुमार

कैनबरा। भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने मंगलवार को कहा कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शुरू हो रही पांच मैचों की टी-20 अंतर्राष्ट्रीय श्रृंखला में पावरप्ले के ओवर काफी महत्वपूर्ण होंगे और तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की मौजूदगी से टीम की संभावनाएं बढ़ जाएंगी। सूर्यकुमार ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया की आक्रामक खेल शैली के सामने बुमराह का होना फायदेमंद रहा है। सूर्यकुमार ने कहा कि पावर प्ले में गेंदबाजी करना चुनौती होती है। हमने देखा है कि ऑस्ट्रेलिया ने वनडे श्रृंखला और टी-20 विश्व कप में किस तरह का खेल खेला है। आपने एशिया कप में देखा होगा कि उन्होंने (बुमराह ने) पावर प्ले में दो ओवर गेंदबाजी करने की जिम्मेदारी ली थी, इसलिए हमारे लिए यह अच्छी बात है कि वह जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। ऑस्ट्रेलियाई टीम के खिलाफ निश्चित रूप से पावर प्ले में गेंदबाजी करना अच्छी चुनौती होगी। बुमराह ऑस्ट्रेलिया में खेलने के मामले में भारतीय टी-20 टीम में सबसे अनुभवी खिलाड़ी हैं।

सूर्यकुमार ने कहा कि उनका मुख्य तेज गेंदबाज जानता है कि इस तरह की श्रृंखला के लिए किस तरह से तैयारी करनी होती है। जिस तरह से उन्होंने (बुमराह ने) कई वर्षों से क्रिकेट खेला है, उन्होंने खुद को शीर्ष पर बनाए रखा है और वह जानते हैं कि एक अच्छी श्रृंखला के लिए कैसे तैयारी करनी है, वह जानते हैं कि यहां कैसे क्रिकेट खेलना है। मुझे लगता है कि उन्होंने सभी खिलाड़ियों में से इस देश का सबसे ज्यादा बार दौरा किया है, इसलिए सभी खिलाड़ियों ने उनसे बात की है। वह काफी मददगार हैं। उनका हमारी टीम में होना हमारे लिए अच्छी बात है। सूर्यकुमार ने संकेत दिया कि चोटिल होने के कारण तीसरे और अंतिम वनडे से बाहर हुए ऑलराउंडर नीतीश रेड्डी टी-20 सीरीज के लिए उपलब्ध हो सकते हैं। वह ठीक है। कल उसने थोड़ी दौड़ लगाई और नेट्स पर बल्लेबाजी भी की। आज वह ब्रेक लेना चाहता था क्योंकि यह वैकल्पिक अभ्यास था। भारतीय कप्तान कहा कि टीम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच मैचों की टी-20 श्रृंखला को अगले साल होने वाले विश्व कप की तैयारी के रूप में देखती है। टीम संयोजन में ज्यादा बदलाव नहीं है, क्योंकि कई बार जब हम दक्षिण अफ्रीका गए थे, तो हम एक तेज गेंदबाज़, एक ऑलराउंडर और तीन स्पिनरों के साथ खेले थे। यहां की परिस्थितियां भी वैसी ही हैं। यह विश्व कप की तैयारी है, लेकिन इसके साथ ही यह काफी चुनौतीपूर्ण है। उम्मीद है कि हमारे लिए यह श्रृंखला अच्छी साबित होगी।'' भारतीय कप्तान ने कहा कि खिलाड़ी क्षेत्ररक्षण पर भी कड़ी मेहनत कर रहे हैं।

भारत : सूर्यकुमार यादव (कप्तान), अभिषेक शर्मा, शुभमन गिल (उपकप्तान), तिलक वर्मा, नितीश कुमार रेड्डी, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, जितेश शर्मा (विकेटकीपर), वरुण चक्रवर्ती, जसप्रीत बुमराह, अर्शदीप सिंह, कुलदीप यादव, हर्षित राणा, संजू सैमसन (विकेटकीपर), रिंकू सिंह, वाशिंगटन सुंदर।

ऑस्ट्रेलिया : मिशेल मार्श (कप्तान), सीन एबॉट, जेवियर बार्टलेट, महली बियर्डमैन, टिम डेविड, बेन ड्वार्शिस, नाथन एलिस, जोश हेज़लवुड, ग्लेन मैक्सवेल, ट्रैविस हेड, जोश इंगलिस, मैथ्यू कुहनेमन, मिशेल ओवेन, जोश फिलिप, तनवीर संघा, मैथ्यू शॉर्ट, मार्कस स्टोइनिस। **मैच दोपहर 1:45 बजे।**

टी-20 विश्व कप से पहले ऑस्ट्रेलिया अपना आक्रामक रवैया जारी रखेगा : मार्श

कैनबरा। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान मिशेल मार्श जानते हैं कि अति आक्रामक बल्लेबाजी करने की रणनीति हमेशा कारगर साबित नहीं होती है। उन्होंने कहा कि उनकी टीम अगले साल होने वाले टी-20 विश्व कप की तैयारियों के तहत आक्रामक रवैया अपनाना जारी रखेगी। ऑस्ट्रेलिया अगले साल फरवरी-मार्च में भारत और श्रीलंका की मेजबानी में होने वाले विश्व कप की तैयारी के तहत बुधवार से भारत के खिलाफ पांच मैचों की टी-20 अंतर्राष्ट्रीय श्रृंखला खेलेगा।

ऑस्ट्रेलिया ने आखिरी बार 2021 में टी-20 विश्व कप जीता था जबकि भारत 2024 में चैंपियन बना था। मार्श ने मंगलवार को कहा कि गत दो विश्व कप में हम अपेक्षित सफलता हासिल नहीं कर पाए और मुझे लगता है कि हमने एक टीम के रूप में खुद को चुनौती देने की बात की थी, ताकि हम विश्व कप जीत सकें। बल्लेबाजी इकाई के रूप में हमने काफी आक्रामक खेल दिखाया है। कुछ वर्षों में कई टीमों ने टी-20 क्रिकेट में इसी तरह का रवैया अपना है। अगर हम भारत में होने वाले विश्व कप की बात करें तो हम निश्चित तौर पर इसी तरह से खेलेंगे भले ही कुछ अवसरों पर हमें सफलता हासिल ना हो।

मार्श ने कहा कि भारतीय टीम बहुत अच्छी है और हम उसका सम्मान करते हैं। मुझे लगता है कि यह श्रृंखला काफी रोमांचक होगी। यह दो अच्छी टीमों के बीच मुकाबला है और इसलिए मैं इस चुनौती का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूं। भारत के सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा शानदार फॉर्म में हैं। उन्होंने भारत की एशिया कप जीत के दौरान 44.85 की औसत और 200 की स्ट्राइक रेट से 314 रन बनाए। मार्श ने अभिषेक के बारे में कहा कि वह उनके लिए लय तय करते हैं। कुछ समय से वह आईपीएल में हैदराबाद की तरफ से शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। वह हमारे सामने अच्छी चुनौती पेश करेंगे।

अभ्यास सत्र में शेफाली ने की मेहनत

- बांग्लादेश के खिलाफ मैच में चोटिल हुई प्रतिका रावल की जगह टीम में की गई शामिल

नवी मुंबई, एजेंसी

भारतीय टीम में चोटिल प्रतिका रावल की जगह शामिल की गई शेफाली वर्मा ने मंगलवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ महिला वनडे विश्व कप सेमीफाइनल से पहले दूधिया रोशनी में टीम के अभ्यास सत्र में कड़ी मेहनत की।

शेफाली को सोमवार को टीम में शामिल किया गया था, जब प्रतिका बांग्लादेश के खिलाफ लीग चरण के अंतिम मैच के दौरान घुटने और टखने में चोट लगने के बाद टूर्नामेंट से बाहर हो गई थी। भारत गुरुवार को दूसरे सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया से भिड़ेगा। शेफाली ने सहजता से आक्रामक शॉट जड़े, लेकिन स्वीप शॉट उम्मीद के मुताबिक सटीक नहीं दिखे। उन्होंने एक घंटे से अधिक समय तक बल्लेबाजी की। इसके बाद उन्होंने गेंदबाजी अभ्यास भी किया। मंधाना ने अभ्यास के दौरान आक्रामक और रक्षात्मक शॉट खेले। हरलीन देओल, कप्तान हरमनप्रीत कौर और जेमिमा रोड्रिग्स ने भी अभ्यास किया। ऋचा घोष ने नेट गेंदबाजों के खिलाफ अभ्यास किया और फिर टीम के मुख्य गेंदबाजों का सामना किया। फिटनेस को लेकर चिंताओं के कारण उन्हें बांग्लादेश के खिलाफ लीग चरण के आखिरी मैच से आराम दिया गया था।

हीली ने की ट्रेनिंग, दिया फिटनेस टेस्ट

ऑस्ट्रेलिया की करिश्माई कप्तान एलिसा हीली ने सेमीफाइनल से पहले फिटनेस टेस्ट पूरा करने के साथ जमकर अभ्यास किया। 35 वर्षीय विकेटकीपर-बल्लेबाज को अभ्यास के दौरान पिंडली में चोट लगने से इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ लीग मैचों से बाहर होना पड़ा था।

वनडे रैंकिंग: मंधाना ने हासिल की करिअर बेस्ट रेटिंग

दुबई, एजेंसी

- दूसरे स्थान पर काबिज गार्डनर ने इंग्लैंड के खिलाफ नाबाद शतक के बाद छह स्थानों की लगाई छलांग
- दक्षिण अफ्रीकी कप्तान लॉरा वोल्वार्ड्ट भी अच्छी पारी की बदौलत दो स्थानों के सुधार के साथ शीर्ष तीन में पहुंचीं

भारत की अनुभवी सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना ने घरेलू विश्व कप में शानदार प्रदर्शन के दम पर मंगलवार को करिअर की सर्वश्रेष्ठ रेटिंग हासिल करने के साथ महिला वनडे क्रिकेट में शीर्ष बल्लेबाज के रूप में अपनी स्थिति मजबूत कर ली। बायें हाथ की इस 29 साल की बल्लेबाज ने पिछले दो मैचों में न्यूजीलैंड के खिलाफ 109 और बांग्लादेश के खिलाफ नाबाद 34 रन बनाए हैं।

इन पारियों के बाद उनके 828 रेटिंग अंक हो गए, जो दूसरे स्थान पर मौजूद ऑस्ट्रेलिया की ऐश गार्डनर (731) से 97 अंक अधिक हैं। गार्डनर ने इंग्लैंड के खिलाफ अपने नाबाद शतक के बाद छह स्थानों की छलांग लगाई। मंधाना को इससे पहले सितंबर 2025 के लिए 'आईसीसी-महीने का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी' चुना गया था। दक्षिण अफ्रीका की कप्तान लॉरा वोल्वार्ड्ट भी 90 और 31 रनों की पारी की बदौलत दो स्थानों के सुधार के साथ शीर्ष तीन में पहुंच गईं। इंग्लैंड की एमी जोन्स चार पायदान चढ़कर नौवें (656) स्थान पर पहुंच गई, जबकि एनाबेल सदरलैंड ने शीर्ष 40 में सबसे बड़ी छलांग लगाई और 16 स्थान के सुधार के साथ 16वें (613) स्थान पर पहुंच गईं। चोट से विश्व कप के बाकी मैचों से बाहर हुई भारतीय सलामी बल्लेबाज प्रतिका रावल 564 की रेटिंग के साथ शीर्ष 30 (27वें स्थान) में पहुंच गईं। इस विश्व कप में स्पिन की अहम भूमिका रही है और कई गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन के बूते अपनी रैंकिंग में सुधार किया है। इंग्लैंड की सोफी एकलेस्टोन महिला वनडे गेंदबाजी रैंकिंग (747) में शीर्ष पर बनी हुई हैं। एकलेस्टोन को ऑस्ट्रेलिया की लेग स्पिनर अलाना किंग से कड़ी टक्कर मिल रही है। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सात विकेट लिए थे। किंग ने करियर की सर्वोच्च रेटिंग 698 के साथ पांच स्थान की छलांग लगाई।

पाकिस्तान की नशरा संधू दक्षिण अफ्रीका की बायें हाथ की स्पिनर नॉनकुलुलेको म्लाबा (610) के साथ संयुक्त रूप से 10वें स्थान पर रहीं, जबकि तेज गेंदबाज मारिजन काप और सदरलैंड भी एक-एक स्थान के सुधार के साथ क्रमशः चौथे और सातवें स्थान पर पहुंच गईं। बायें हाथ की एक और स्पिनर लिंसे स्मिथ रैंकिंग में 24 स्थानों का सुधार करने में सफल रही। वह 444 रेटिंग के साथ 36वें स्थान पर पहुंच गयी है। गार्डनर ने विश्व कप में प्रदर्शन से हरफनमौला खिलाड़ियों की सूची में अपना पहला स्थान (रेटिंग 503) पक्का कर दिया है। इस सूची में वेस्टइंडीज की हेली मैथ्यूज को पछाड़कर काप दूसरे स्थान पर पहुंच गई है।

रणजी ट्रॉफी ग्रीनपार्क स्टेडियम में चौथे दिन बारिश के कारण मैच रुका, ओडिशा के खिलाफ मैच ड्रा घोषित

यूपी की जीत में बारिश बनी रोड़ा, बढ़त के आधार पर मिले तीन अंक

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

विकेट लेने के बाद जश्न मनाते यूपी के खिलाड़ी। अमृत विचार

अमृत विचार। रणजी ट्रॉफी मुकाबले में ओडिशा के खिलाफ यूपी टीम की जीत में बारिश बाधा बनी। यूपी ने चौथे दिन मंगलवार को पहले सत्र में छह विकेट पर 140 रन बनाकर पारी घोषित की। जवाब में ओडिशा ने दूसरी पारी में 44 ओवर में तीन विकेट पर 151 रन बना लिए थे। इसके बाद बारिश के कारण खेल नहीं हो सका और रोकना पड़ा। मैच ड्रा घोषित किया गया। पहली पारी में मिली 166 रनों की बढ़त के आधार पर यूपी को इस मुकाबले में तीन अंक मिले। ओडिशा को एक अंक से ही संतोष करना पड़ा।

ग्रीनपार्क स्टेडियम में तीसरे दिन सोमवार को जहां बूंदाबांदी के कारण केवल 42 ओवर का ही खेल हो सका था, वहीं मंगलवार को कुल 46 ओवर ही फेंके जा सके। सोमवार को 128 ओवर में छह विकेट पर 380 रनों से आगे खेलते हुए यूपी ने अपनी पहली पारी 130 ओवर में छह विकेट पर 409 रन बनाकर घोषित की। विप्रज निगम 28 गेंदों में 31 और शिवम छह गेंदों में 12 रन बनाकर नाबाद रहे। ओडिशा से संबित ने तीन, बादल और सुमित को एक-एक सफलता मिली। पहली पारी में 166 रनों से पिछड़ चुकी ओडिशा की टीम ने इस बार संभलकर शुरुआत की, हालांकि 7.5 ओवर में 43 रनों के स्कोर पर शिवम मावी ने 23 रन पर आशीर्वाद को और 11.2 ओवर में 55 से स्कोर पर संदीप पटनायक को पांच रन पर आउट कर टीम को लगातार दो सफलता दिलाई। इसके बाद कुणाल त्यागी ने कप्तान शुभ्रांशु सेनापती को 11 रन पर अपना शिकार बनाया। हालांकि दूसरी तरफ डटे ओपनर स्वास्तिक सामल ने गोविंदा पोद्दार के साथ मिलकर खेल रोके जाने तक 72 रनों की साझेदारी करते हुए टीम को 44 ओवर में 151 रनों के स्कोर तक पहुंचाया। स्वास्तिक ने 113 गेंदों में आठ चौके व एक छक्के की मदद से नाबाद 71 और गोविंदा 72 गेंदों में 38 रन बनाकर नाबाद लौटे। बारिश के कारण मैच नहीं हो सका और ड्रा रहा। यूपी टीम से शिवम मावी ने दो और कुणाल त्यागी ने एक विकेट झटका।

बंगाल ने गुजरात को 141 रनों से हराया

कोलकाता। मोहम्मद शमी के पांच विकेट की बदौलत बंगाल ने मंगलवार को रणजी ट्रॉफी ग्रुप सी मैच में गुजरात को 141 रन से हराया। शमी ने इसके साथ ही राष्ट्रीय टीम में जगह बनाने की अपनी दावेदारी मजबूत की। शमी ने घरेलू प्रतियोगिता में अब तक दो मैच में 68 ओवर में 15 विकेट चटकाकर अपनी फॉर्म और फिटनेस का अच्छा नजारा पेश किया है। शमी ने दूसरी पारी में 38 रन पर पांच विकेट चटकाए, जिससे गुजरात की टीम 327 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए दूसरी पारी में 185 रन पर ढेर हो गई। शमी ने मैच में आठ विकेट चटकाए। पहली पारी में छह विकेट चटकाने वाले बाएं हाथ के स्पिनर शहबाज अहमद को मैन ऑफ द मैच चुना गया। रामनगर में उत्तराखंड ने रेलवे के पहली पारी में 333 रन के जवाब में 398 रन बनाकर 65 रन की बढ़त और तीन अंक हासिल किए। रेलवे को एक अंक मिला। उत्तराखंड की की ओर से युवराज चौधरी ने 92 रन बनाए जबकि भूपेन लालवानी ने 78 रन की पारी खेली।

निकहत की नजरें विश्व मुक्केबाजी में अधिक अंक लेने पर

नई दिल्ली। दो बार की स्वर्ण पदक विजेता निकहत जरीन ने तीसरा विश्व चैंपियनशिप पदक चूकने की निराशा को पीछे छोड़ दिया है। अब उनका ध्यान आगामी विश्व मुक्केबाजी कप फाइनल में शीर्ष पुरस्कार जीतकर अधिकतम अंक जुटाने पर है। यह प्रतियोगिता 14 से 21 नवंबर तक ग्रेटर नोएडा में आयोजित की जाएगी।

फ्लाईवेट और लाइट फ्लाईवेट श्रेणियों में निकहत ने 2022 में इस्तांबुल और 2023 में नई दिल्ली में विश्व चैंपियनशिप के स्वर्ण पदक जीते थे। वह 2025 में लिवरपूल में क्वार्टर फाइनल में तुर्की की दो बार की ओलंपिक रजत पदक विजेता बुसे नाज काकिरोग्लू से हार गई थीं। निकहत ने विश्व मुक्केबाजी कप फाइनल्स के लोगो के अनावरण से जुड़े कार्यक्रम के इतर कहा कि मैं ये नहीं कहूंगी कि वहां (विश्व चैंपियनशिप) मेरा अभियान निराशाजनक था।

अय्यर आईसीयू से बाहर, हालत स्थिर

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत की वनडे टीम के उप कप्तान श्रेयस अय्यर को सिडनी के अस्पताल की गहन चिकित्सा इकाई (आईसीयू) से बाहर स्थानांतरित किया गया है और उनकी हालत स्थिर है। उन्हें तिल्ली की चोट (स्प्लीनिक रप्चर) और पसली में चोट के कारण भर्ती किया गया था।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सिडनी में खेले गए तीसरे वनडे मैच के दौरान हर्षित राणा की गेंद पर एलेक्स कैरी का कैच लेने की कोशिश में अय्यर को बाईं पसली के निचले हिस्से में चोट लगी थी। वह फिजियो की मदद से मैदान से बाहर चले गए, लेकिन बाद में उनकी हालत बिगड़ गई, जिससे उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। जांच में पता चला कि तिल्ली में चोट लगने से आंतरिक रक्तस्राव हुआ, बाद उन्हें आईसीयू में भर्ती कराया गया।

बीसीसीआई प्रगति पर रखेगी नजर

बीसीसीआई ने कहा कि अय्यर की हालत स्थिर है और वह अब भी निगरानी में है। मंगलवार 28 अक्टूबर को दोबारा किए गए स्कैन में सुधार दिखा है। बीसीसीआई की मेडिकल टीम सिडनी और भारत के विशेषज्ञों से सलाह करके उसकी प्रगति पर नजर रखेगी। भारत के टी-20 कप्तान सूर्यकुमार यादव ने कहा कि श्रृंखला के पहले मैच से पूर्व अय्यर की सेहत में सुधार से उन्हें खुशी हुई।